AMAR CHITRA KATHA

ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

सपनों की उड़ान

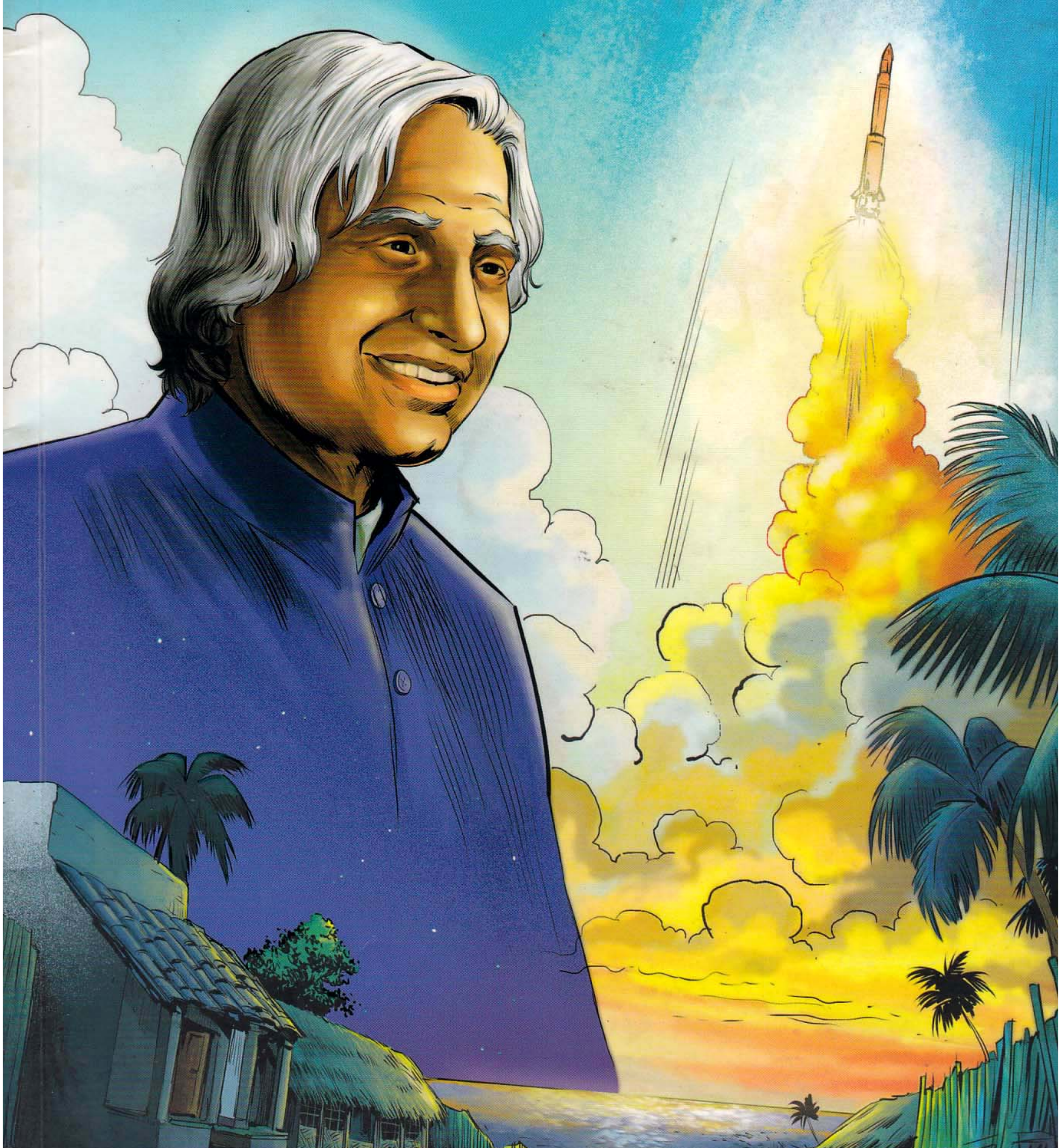

ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

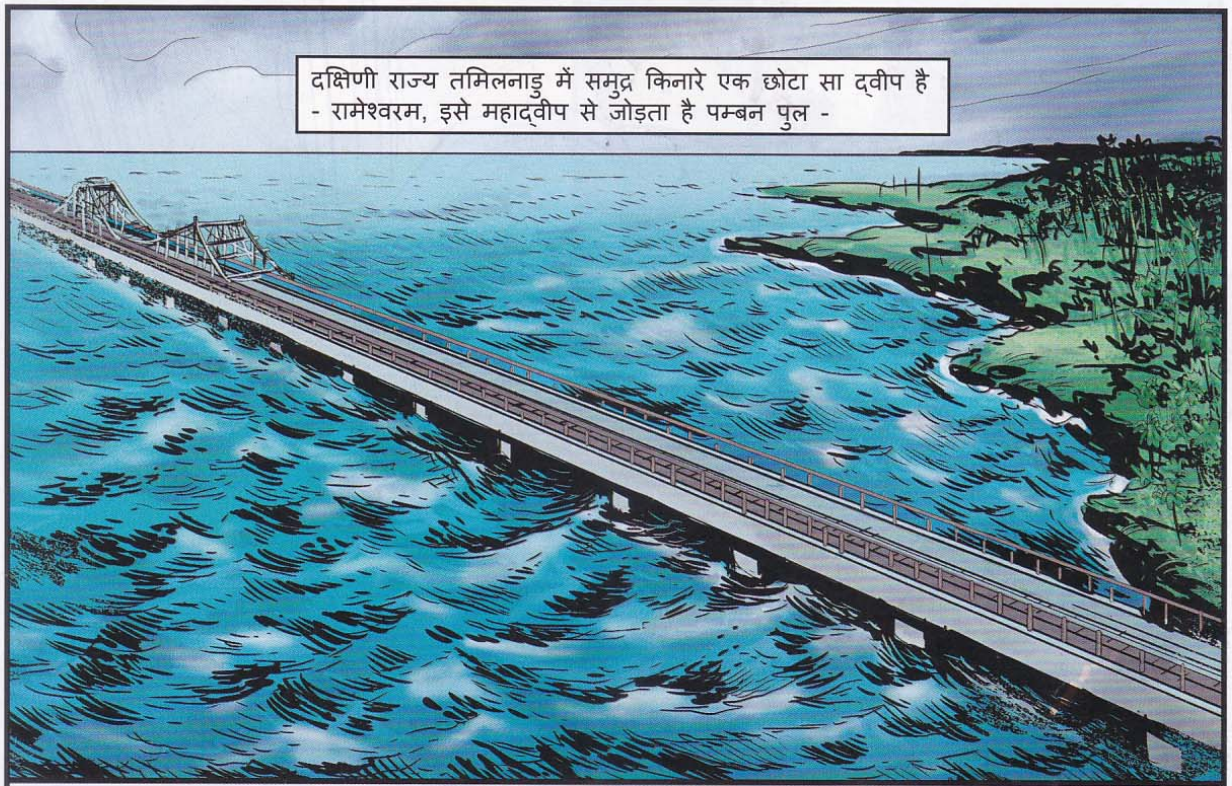
दक्षिणी राज्य तमिलनाडु में समुद्र किनारे एक छोटा सा द्वीप है - रामेश्वरम, इसे महाद्वीप से जोड़ता है पम्बन पुल -

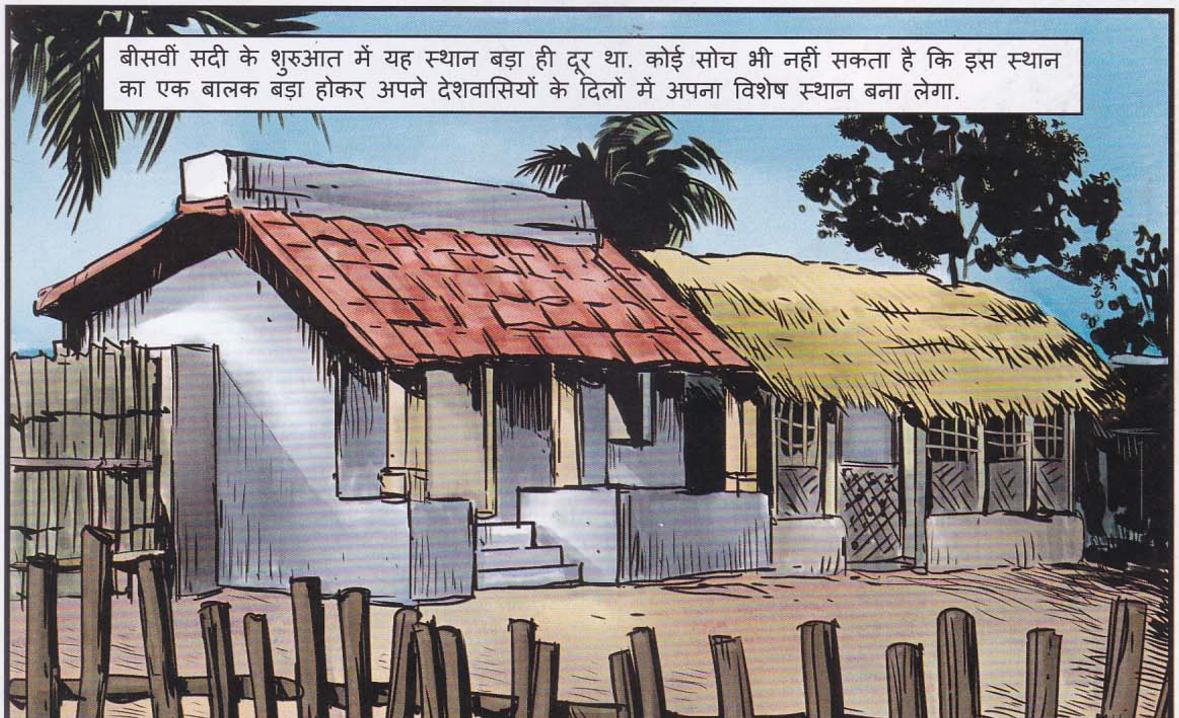
बीसवीं सदी के शुरुआत में यह स्थान बड़ा ही दूर था. कोई सोच भी नहीं सकता है कि इस स्थान का एक बालक बड़ा होकर अपने देशवासियों के दिलों में अपना विशेष स्थान बना लेगा.

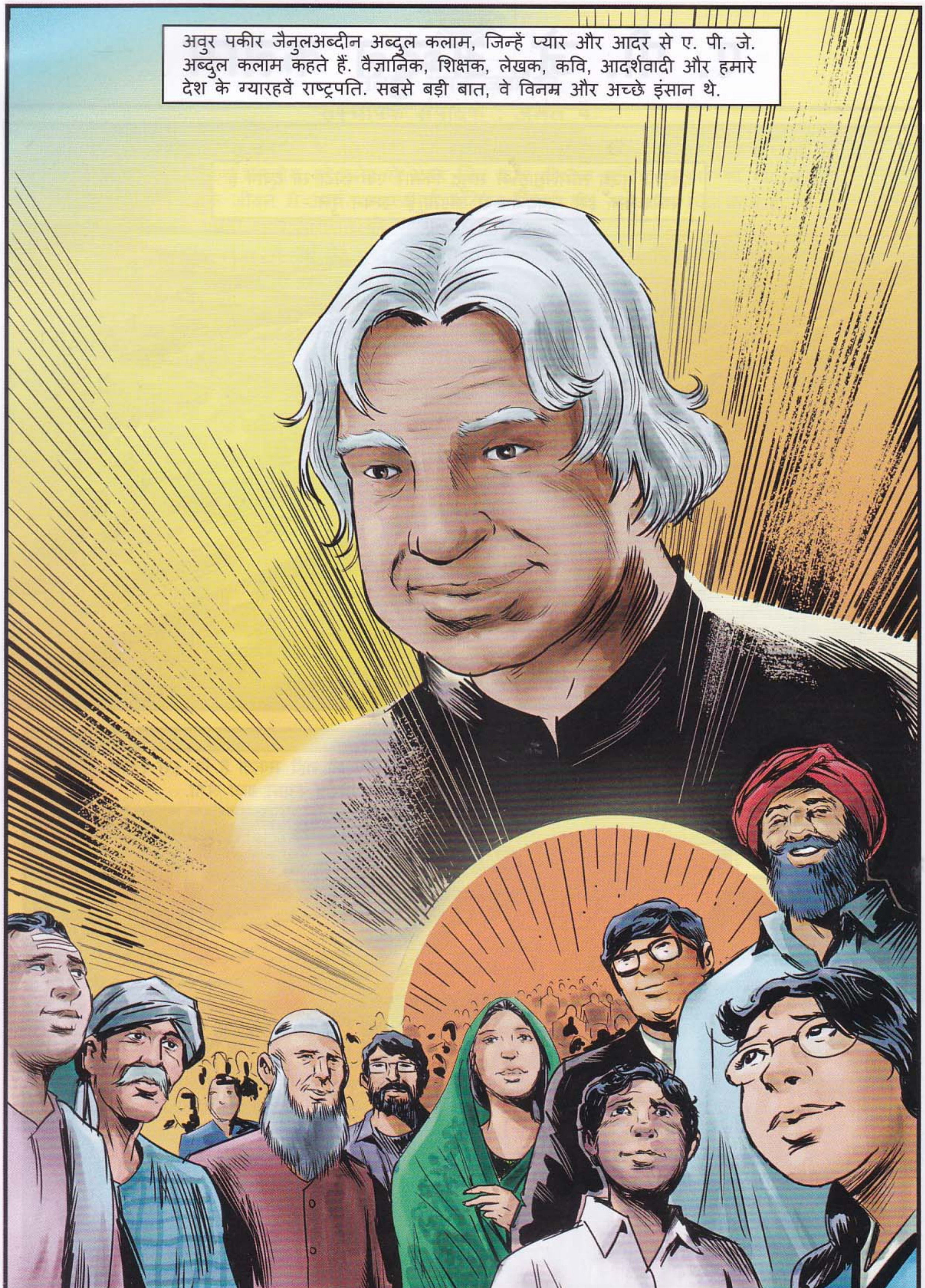
अवुर पकीर जैनुलअब्दीन अब्दुल कलाम, जिन्हें प्यार और आदर से ए. पी. जे. अब्दुल कलाम कहते हैं. वैज्ञानिक, शिक्षक, लेखक, कवि, आदर्शवादी और हमारे देश के ग्यारहवें राष्ट्रपति. सबसे बड़ी बात, वे विनम्र और अच्छे इंसान थे.

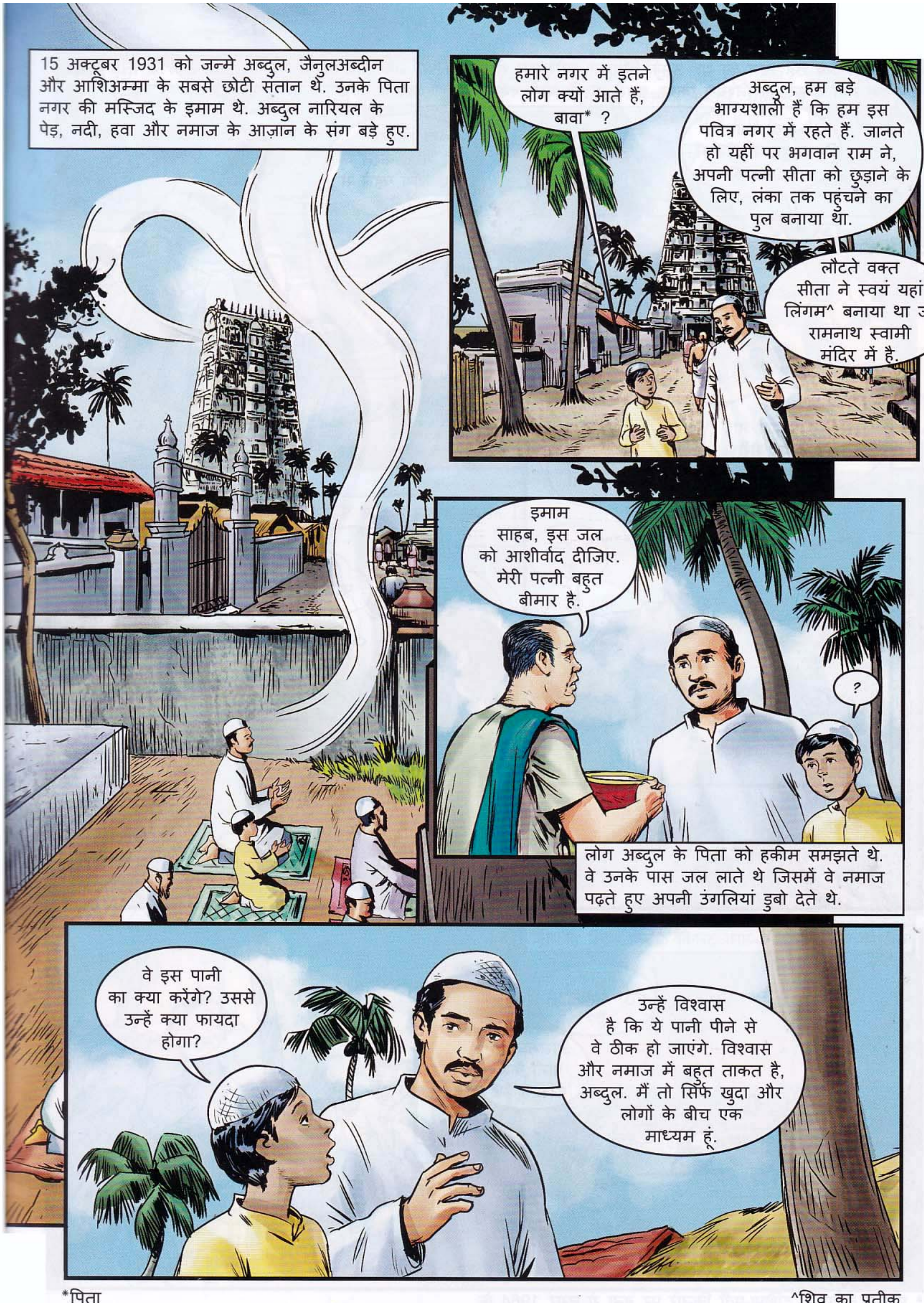
15 अक्टूबर 1931 को जन्मे अब्दुल, जैनुलअब्दीन और आशिअम्मा के सबसे छोटी संतान थे. उनके पिता नगर की मस्जिद के इमाम थे. अब्दुल नारियल के पेड़, नदी, हवा और नमाज के आज़ान के संग बड़े हुए.
हमारे नगर में इतने लोग क्यों आते हैं, बावा* ?
अब्दुल, हम बड़े भाग्यशाली हैं कि हम इस पवित्र नगर में रहते हैं. जानते हो यहीं पर भगवान राम ने, अपनी पत्नी सीता को छुड़ाने के लिए, लंका तक पहुंचने का पुल बनाया था.
लौटते वक्त सीता ने स्वयं यहां लिंगम^ बनाया था जो रामनाथ स्वामी मंदिर में है.
इमाम साहब, इस जल को आशीर्वाद दीजिए. मेरी पत्नी बहुत बीमार है.
?
लोग अब्दुल के पिता को हकीम समझते थे. वे उनके पास जल लाते थे जिसमें वे नमाज पढ़ते हुए अपनी उंगलियां डुबो देते थे.
वे इस पानी का क्या करेंगे? उससे उन्हें क्या फायदा होगा?
उन्हें विश्वास है कि ये पानी पीने से वे ठीक हो जाएंगे. विश्वास और नमाज में बहुत ताकत है, अब्दुल. मैं तो सिर्फ खुदा और लोगों के बीच एक माध्यम हूं.

*पिता

^शिव का प्रतीक

* पम्बन द्वीप के दक्षिण-पूर्वी किनारे पर बना ये नगर 1964 के चक्रवात में पूरी तरह से बरबाद हो गया था. आज ये भुतहा नगर है.

तुम हंस क्यों रहे हो?
कितने सवाल पूछते हो!
एक दिन खुद जान जाओगे, अब्दुल. सीखने के लिए बहुत कुछ है.
कहां पर?
इस छोटे से द्वीप से बाहर की दुनिया में. एक दिन तुम पंख फैला कर यहां से उड़ जाओगे.
तुम तो यहीं हो जलाल. तुम क्यों नहीं गए?
मेरी हालत अलग है. मेरे माता-पिता मुझे ज्यादा नहीं पढ़ा पाए...परंतु मैंने सीखना बंद नहीं किया है.
वह रहा शमसुद्दीन!

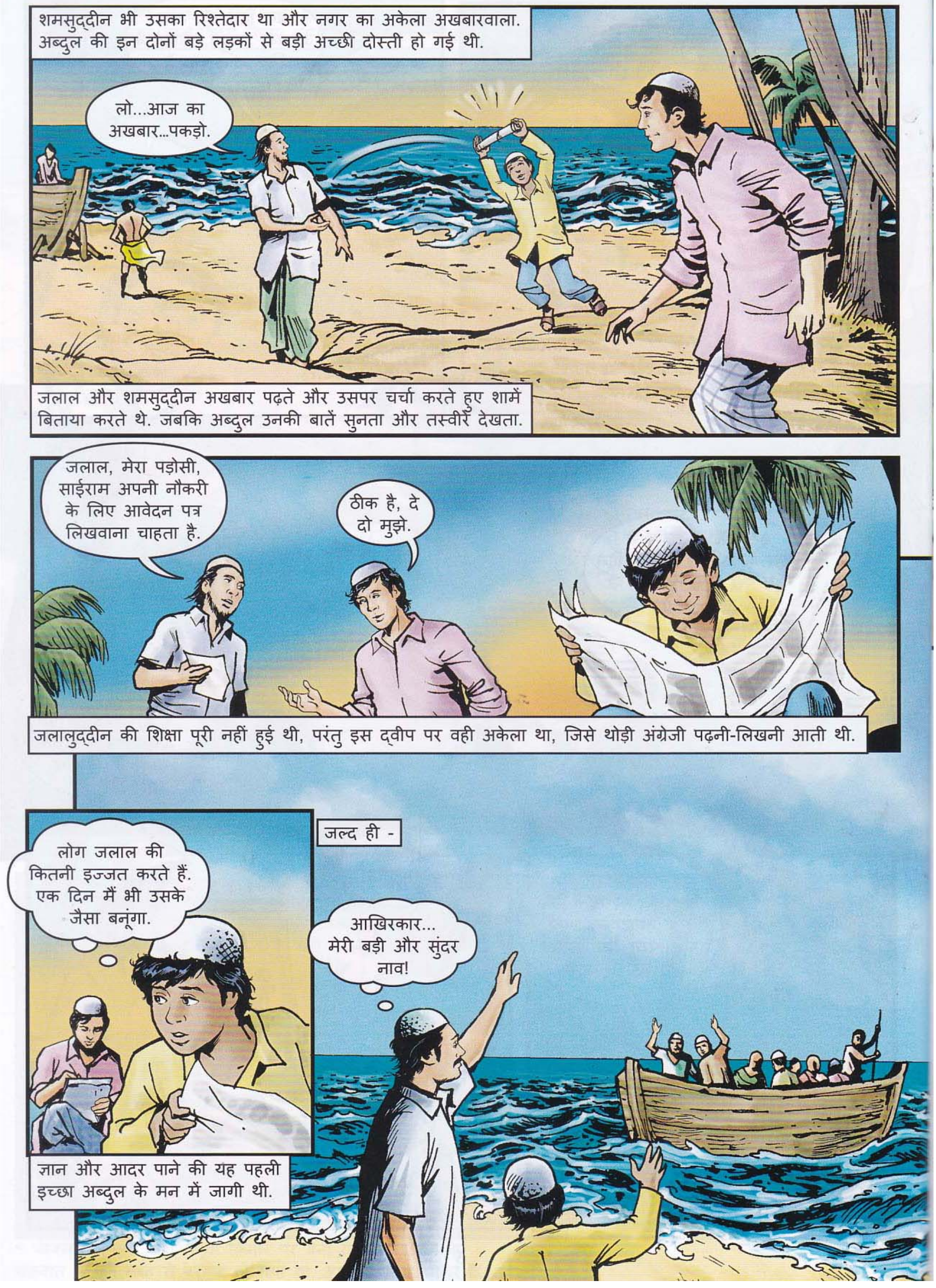
शमसुद्दीन भी उसका रिश्तेदार था और नगर का अकेला अखबारवाला. अब्दुल की इन दोनों बड़े लड़कों से बड़ी अच्छी दोस्ती हो गई थी.
लो...आज का अखबार...पकड़ो.
जलाल और शमसुद्दीन अखबार पढ़ते और उसपर चर्चा करते हुए शामें बिताया करते थे. जबकि अब्दुल उनकी बातें सुनता और तस्वीरें देखता.
जलाल, मेरा पड़ोसी, साईराम अपनी नौकरी के लिए आवेदन पत्र लिखवाना चाहता है.
ठीक है, दे दो मुझे.
जलालुद्दीन की शिक्षा पूरी नहीं हुई थी, परंतु इस द्वीप पर वही अकेला था, जिसे थोड़ी अंग्रेजी पढ़नी-लिखनी आती थी.
लोग जलाल की कितनी इज्जत करते हैं. एक दिन मैं भी उसके जैसा बनूंगा.
ज्ञान और आदर पाने की यह पहली इच्छा अब्दुल के मन में जागी थी.
जल्द ही -
आखिरकार... मेरी बड़ी और सुंदर नाव!

नाव बन चुकी थी परंतु अब भी अब्दुल और जलाल एक-दूसरे के साथ वक्त बिताते थे.
आज मेरी मदद करने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया.
तुम किससे बात कर रहे हो?
उससे...जो अंदर है. जब भी कहता हूं वह मेरी मदद करता है.
भगवान? तुम भगवान से बात कर रहे थे?
हां, हम दोस्त हैं.
परंतु बावा और ये तीर्थयात्री...
मेरा मतलब बावा और ये तीर्थयात्री...सभी भगवान से अलग ढंग से बात करते हैं. क्या तुम्हारी प्रार्थना अलग-अलग भगवान तक जाती है?

*इनका जलपान और दवा के रूप में इस्तेमाल होता है

*जलाल उसे आजाद पुकारता था, शायद स्वतंत्रता सेनानी अबुल कलाम आजाद के नाम पर.

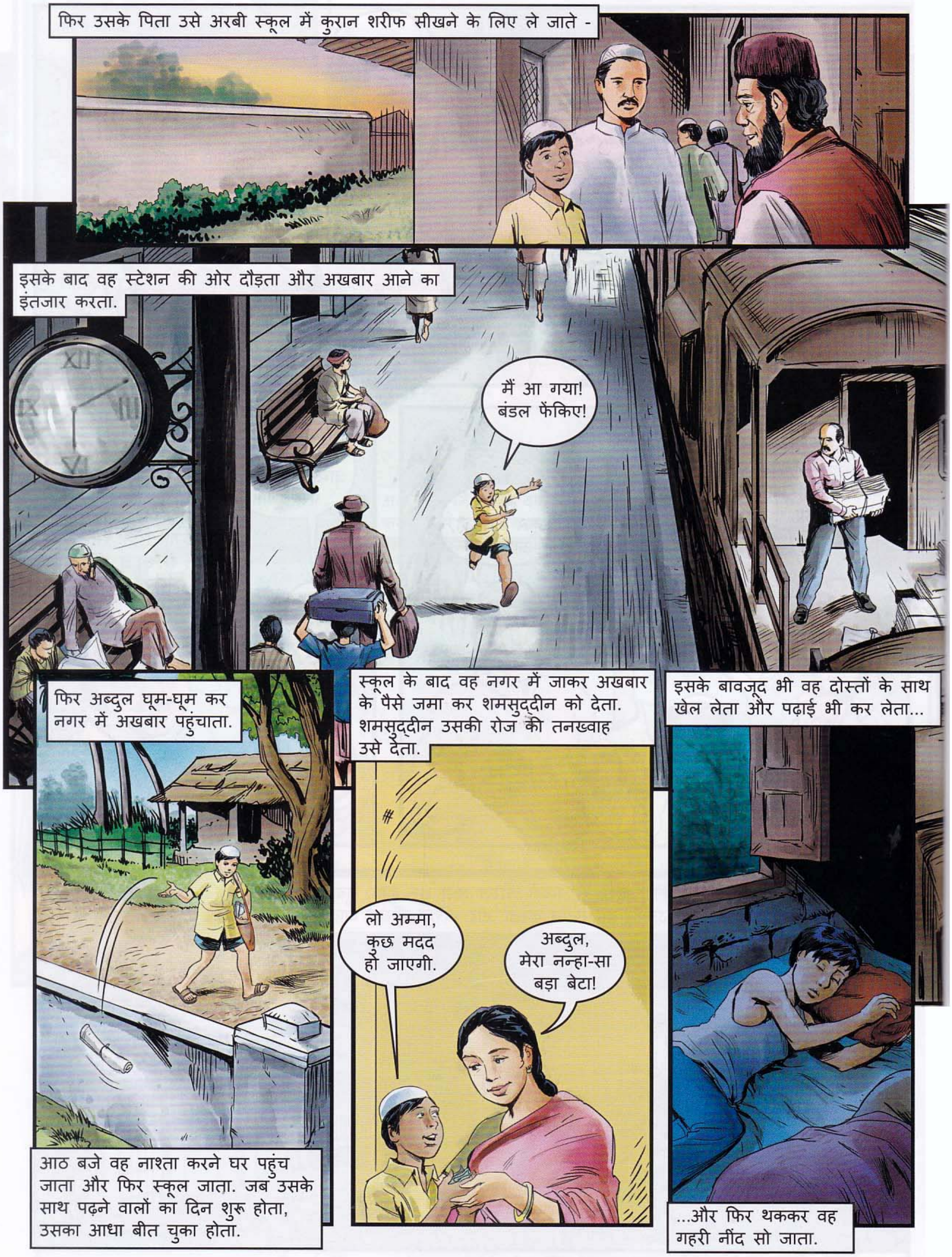
फिर उसके पिता उसे अरबी स्कूल में कुरान शरीफ सीखने के लिए ले जाते -
इसके बाद वह स्टेशन की ओर दौड़ता और अखबार आने का इंतजार करता.
मैं आ गया! बंडल फेंकिए!
फिर अब्दुल घूम-घूम कर नगर में अखबार पहुंचाता.
आठ बजे वह नाश्ता करने घर पहुंच जाता और फिर स्कूल जाता. जब उसके साथ पढ़ने वालों का दिन शुरू होता, उसका आधा बीत चुका होता.
स्कूल के बाद वह नगर में जाकर अखबार के पैसे जमा कर शमसुद्दीन को देता. शमसुद्दीन उसकी रोज की तनख्वाह उसे देता.
लो अम्मा, कुछ मदद हो जाएगी.
अब्दुल, मेरा नन्हा-सा बड़ा बेटा!
इसके बावजूद भी वह दोस्तों के साथ खेल लेता और पढ़ाई भी कर लेता...
...और फिर थककर वह गहरी नींद सो जाता.

कई दिनों तक इस तरह काम करने के बाद एक रात अब्दुल थकान के मारे रो पड़ा.
कितना थक गया है. मेरा बेटा अचानक बड़ा बनना चाह रहा है.
ऊं हूं! ऊं हूं! ऊ हू!
नन्हा अब्दुल समझ नहीं पाया कि वह क्यों रो रहा था, परंतु उसकी मां उसका दुख समझ गई थी.
एक नए शिक्षक आने वाले थे इसलिए एक दिन स्कूल में सभी बड़े उत्साहित थे. परंतु -
ये क्या मजाक है? उच्च जाति के ब्राह्मण के साथ बैठने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?
???
तुम पीछे जाओ और वहीं बैठे रहना!
पर अब्दुल मेरे प्रिय मित्र हैं.
ऊंss ऊंss ऊंss

स्कूल से छूटते ही लड़कों ने घर जाकर अपने-अपने पिता को सारी बात बताई. रामानाधा के पिता रामनाथ स्वामी मंदिर के मुख्य पुजारी और अब्दुल के पिता के करीबी मित्र थे.
हुम्म...नया शिक्षक कुछ नहीं जानता. हमें उसे सबक सिखाना पड़ेगा.

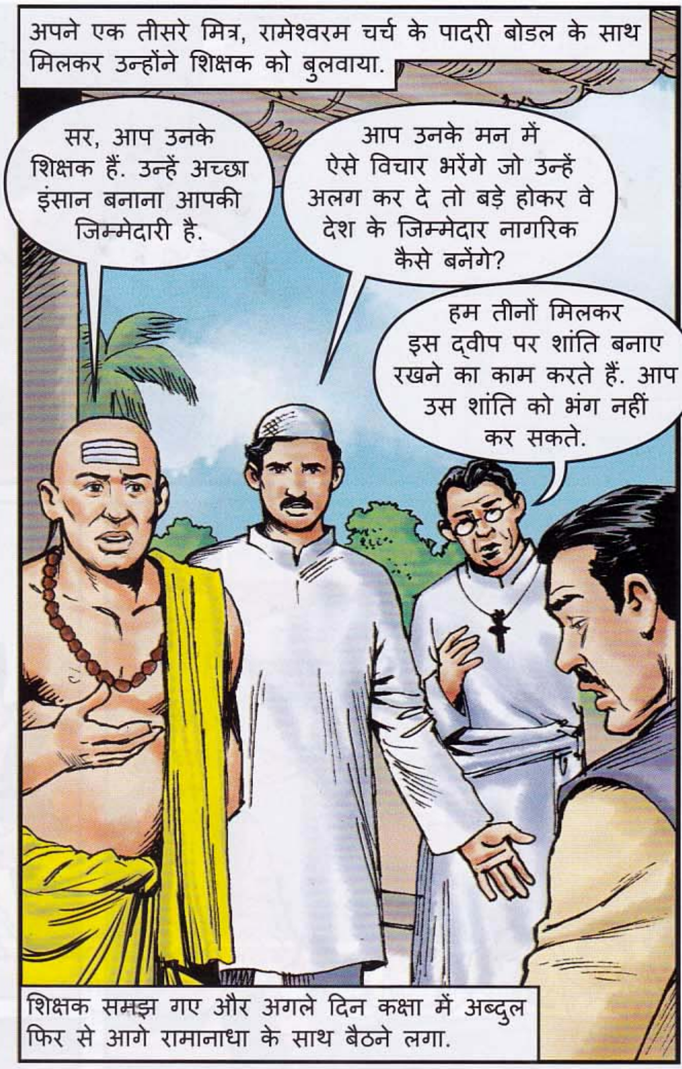
अपने एक तीसरे मित्र, रामेश्वरम चर्च के पादरी बोडल के साथ मिलकर उन्होंने शिक्षक को बुलवाया.
सर, आप उनके शिक्षक हैं. उन्हें अच्छा इंसान बनाना आपकी जिम्मेदारी है.
आप उनके मन में ऐसे विचार भरेंगे जो उन्हें अलग कर दे तो बड़े होकर वे देश के जिम्मेदार नागरिक कैसे बनेंगे?
हम तीनों मिलकर इस द्वीप पर शांति बनाए रखने का काम करते हैं. आप उस शांति को भंग नहीं कर सकते.
शिक्षक समझ गए और अगले दिन कक्षा में अब्दुल फिर से आगे रामानाधा के साथ बैठने लगा.

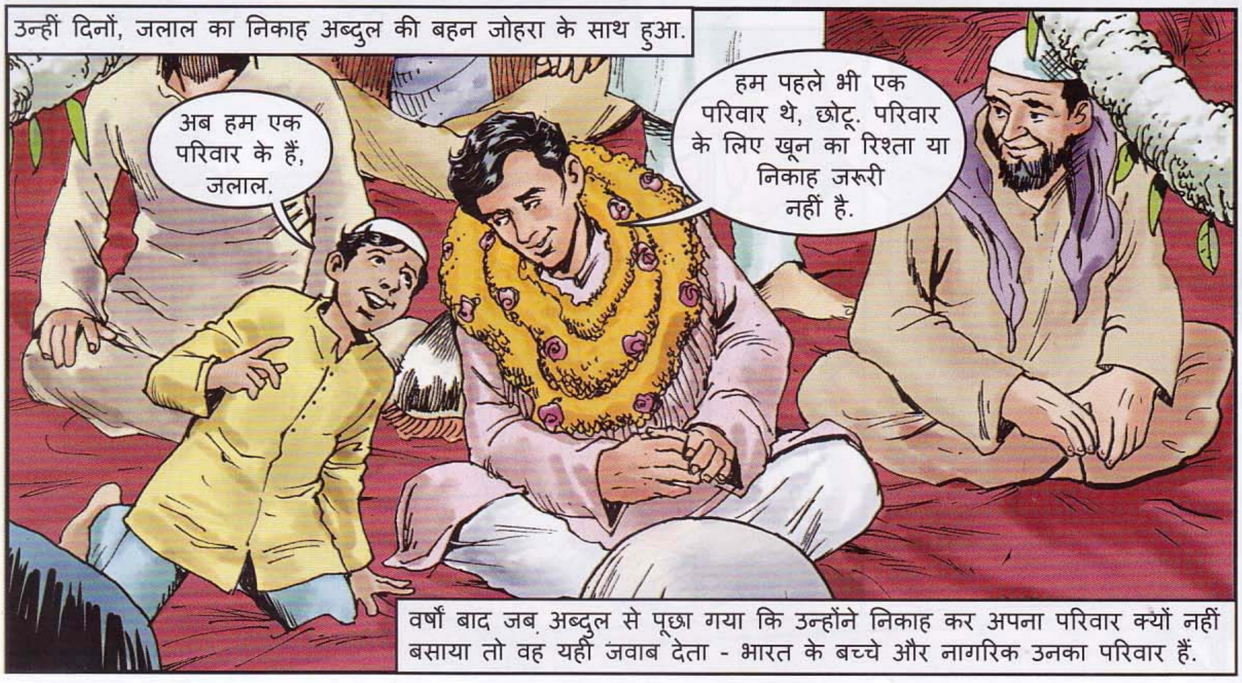
उन्हीं दिनों, जलाल का निकाह अब्दुल की बहन जोहरा के साथ हुआ.
अब हम एक परिवार के हैं, जलाल.
हम पहले भी एक परिवार थे, छोटू. परिवार के लिए खून का रिश्ता या निकाह जरूरी नहीं है.
वर्षों बाद जब अब्दुल से पूछा गया कि उन्होंने निकाह कर अपना परिवार क्यों नहीं बसाया तो वह यही जवाब देता - भारत के बच्चे और नागरिक उनका परिवार हैं.

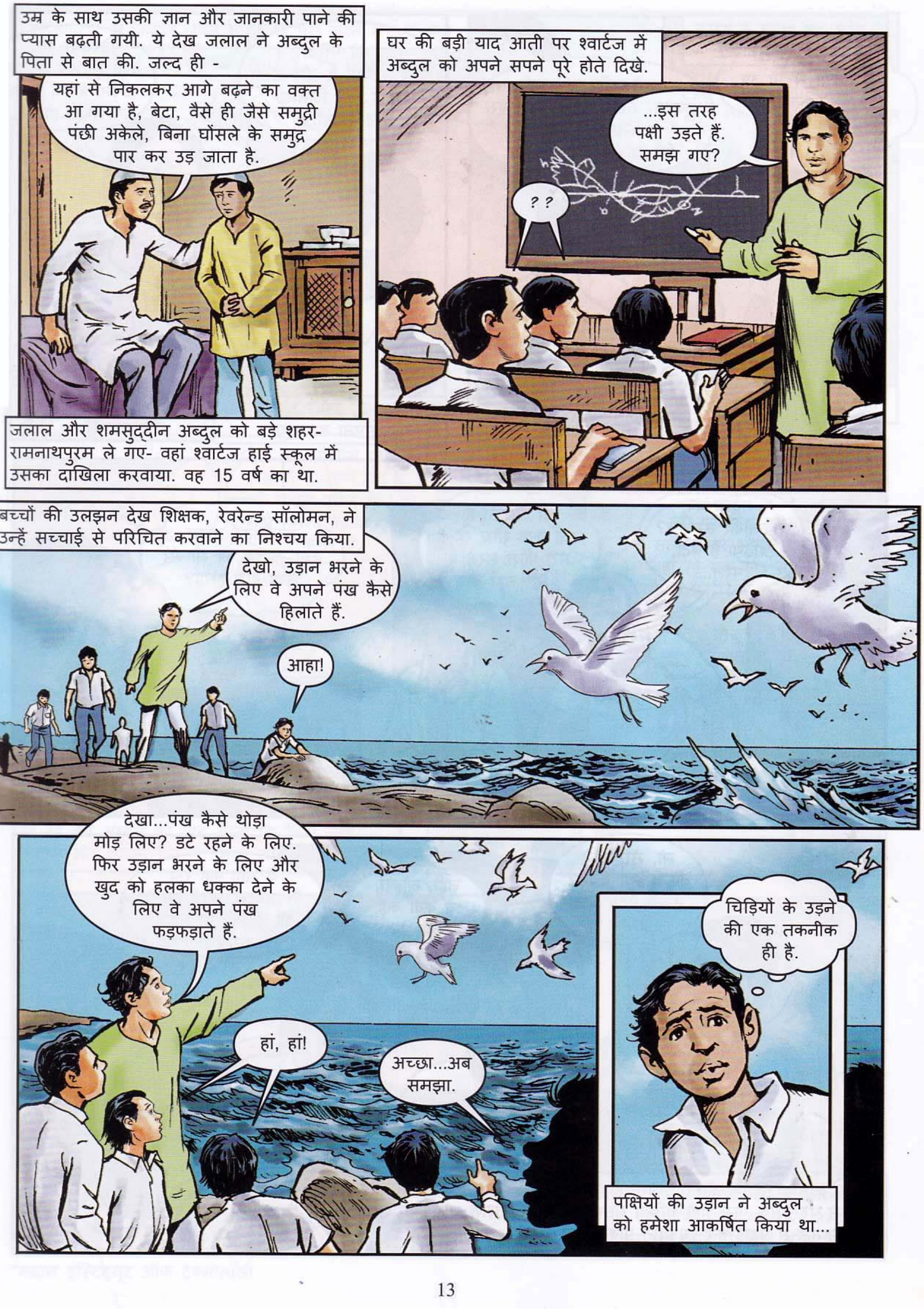
उम्र के साथ उसकी ज्ञान और जानकारी पाने की प्यास बढ़ती गयी. ये देख जलाल ने अब्दुल के पिता से बात की. जल्द ही -
यहां से निकलकर आगे बढ़ने का वक्त आ गया है, बेटा, वैसे ही जैसे समुद्री पंछी अकेले, बिना घोंसले के समुद्र पार कर उड़ जाता है.
जलाल और शमसुद्दीन अब्दुल को बड़े शहर- रामनाथपुरम ले गए- वहां श्वार्टज हाई स्कूल में उसका दाखिला करवाया. वह 15 वर्ष का था.
घर की बड़ी याद आती पर श्वार्टज में अब्दुल को अपने सपने पूरे होते दिखे.
...इस तरह पक्षी उड़ते हैं. समझ गए?
? ?
बच्चों की उलझन देख शिक्षक, रेवरेन्ड सॉलोमन, ने उन्हें सच्चाई से परिचित करवाने का निश्चय किया.
देखो, उड़ान भरने के लिए वे अपने पंख कैसे हिलाते हैं.
आहा!
देखा...पंख कैसे थोड़ा मोड़ लिए? डटे रहने के लिए. फिर उड़ान भरने के लिए और खुद को हलका धक्का देने के लिए वे अपने पंख फड़फड़ाते हैं.
हां, हां!
अच्छा...अब समझा.
चिड़ियों के उड़ने की एक तकनीक ही है.
पक्षियों की उड़ान ने अब्दुल को हमेशा आकर्षित किया था...

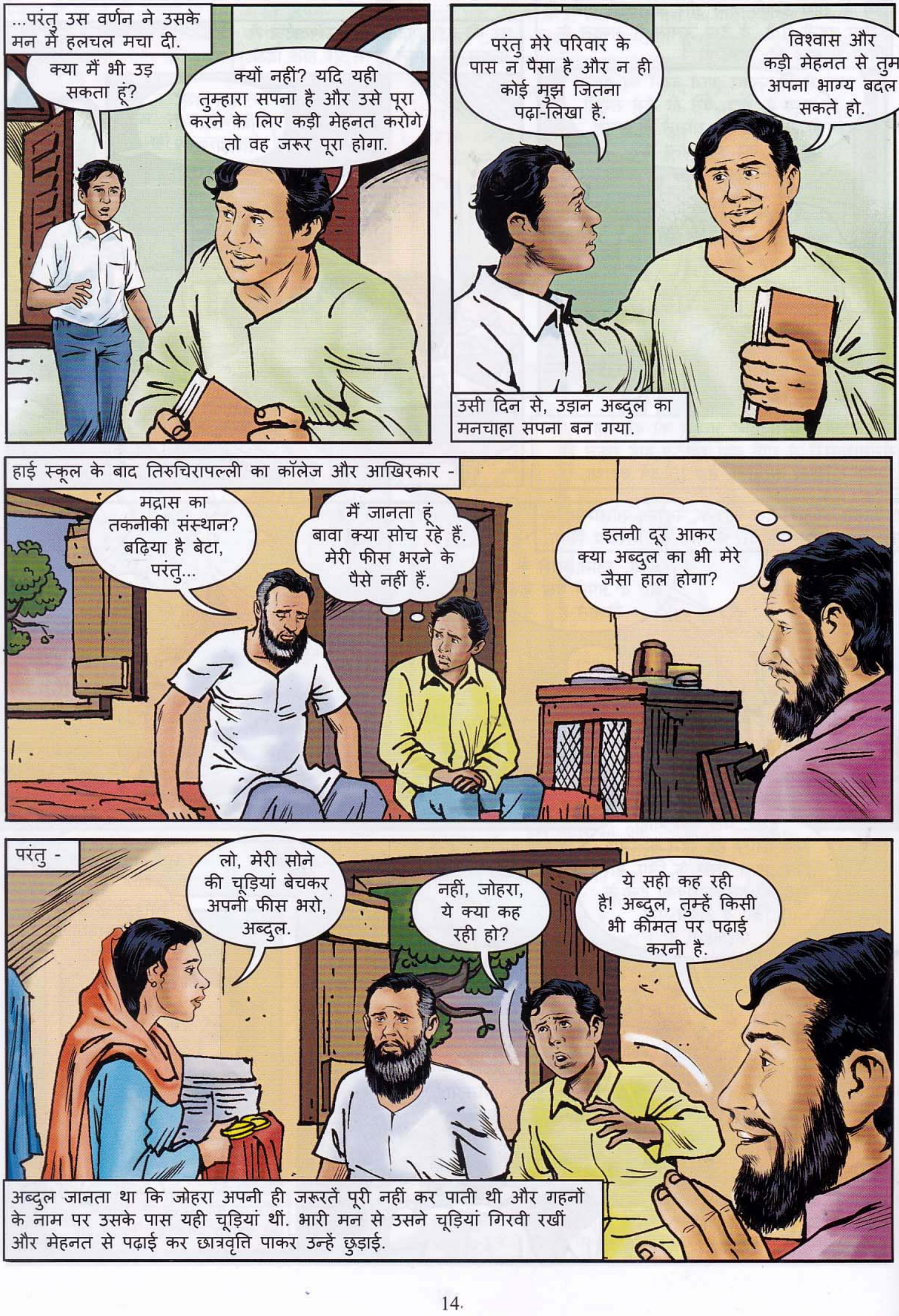
...परंतु उस वर्णन ने उसके मन में हलचल मचा दी.
क्या मैं भी उड़ सकता हूं?
क्यों नहीं? यदि यही तुम्हारा सपना है और उसे पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करोगे तो वह जरूर पूरा होगा.
परंतु मेरे परिवार के पास न पैसा है और न ही कोई मुझ जितना पढ़ा-लिखा है.
विश्वास और कड़ी मेहनत से तुम अपना भाग्य बदल सकते हो.
उसी दिन से, उड़ान अब्दुल का मनचाहा सपना बन गया.
हाई स्कूल के बाद तिरुचिरापल्ली का कॉलेज और आखिरकार -
मद्रास का तकनीकी संस्थान? बढ़िया है बेटा, परंतु...
मैं जानता हूं बावा क्या सोच रहे हैं. मेरी फीस भरने के पैसे नहीं हैं.
इतनी दूर आकर क्या अब्दुल का भी मेरे जैसा हाल होगा?
परंतु -
लो, मेरी सोने की चूड़ियां बेचकर अपनी फीस भरो, अब्दुल.
नहीं, जोहरा, ये क्या कह रही हो?
ये सही कह रही है! अब्दुल, तुम्हें किसी भी कीमत पर पढ़ाई करनी है.
अब्दुल जानता था कि जोहरा अपनी ही जरूरतें पूरी नहीं कर पाती थी और गहनों के नाम पर उसके पास यही चूड़ियां थीं. भारी मन से उसने चूड़ियां गिरवी रखीं और मेहनत से पढ़ाई कर छात्रवृत्ति पाकर उन्हें छुड़ाई.

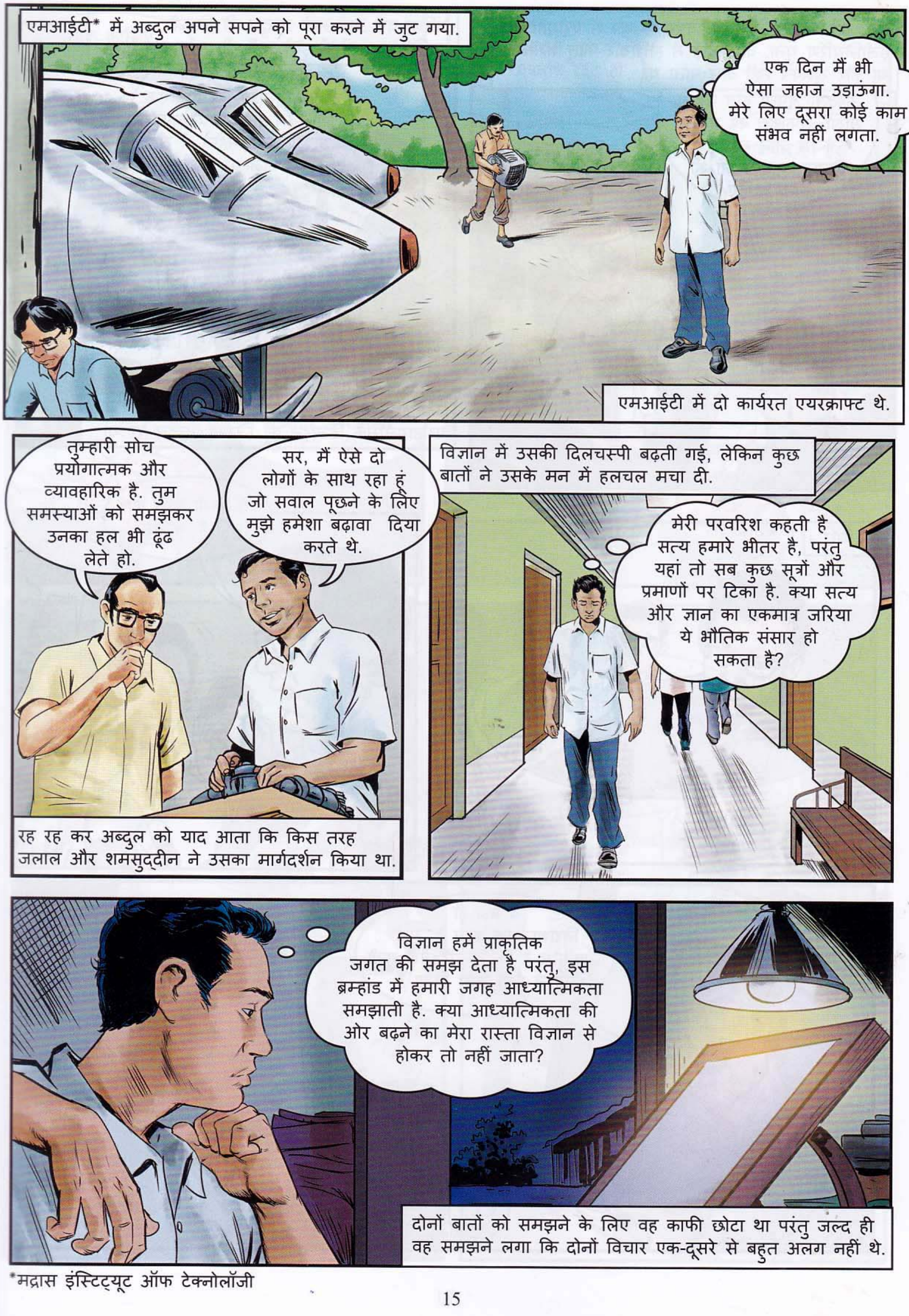

*मद्रास इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी

दूसरे वर्ष अब्दुल ने मुख्य विषय के रूप में एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग चुना. वह पढ़ाई में होशियार परंतु शर्मीला था और खुलकर नहीं बोल पाता था.
अब्दुल, अपनी बात कहना सीखो, सफलता का मतलब केवल ज्ञान नहीं है. विचार प्रकट करना भी आना चाहिए.
यदि विषय पर तुम्हारा अधिकार है तो बोलने के लिए तुम्हें शब्द भी मिल जाएंगे.
अंतिम वर्ष आते-आते अब्दुल की गिनती बुद्धिमान छात्रों में होने लगी थी. परंतु एक दिन -
चार-चार लोगों का दो दल बनाओ. हर दल एक लो-लेवल अटैक एयरक्राफ्ट बनाएगा. एक महीने में मुझे उसका डिजाइन दिखाओ.
उत्साह से वे काम में जुट गए. अपने दल के एरोडायनैमिक डिजाइन का जिम्मा अब्दुल पर था...
...परंतु -
ये किसी काम का नहीं है, कलाम.
क्या!!
ये बड़ा ही निराशाजनक काम है. मुझे अफसोस है कि तुम्हारे जैसे गुणी छात्र ने ऐसा काम किया है.

माफ कीजिए, सर, मैं दोबारा बनाता हूं.
तुम्हें फिर से शुरू करना पड़ेगा. अपने विचारों को थोड़ा बदलो. मुझे सोमवार तक नया डिजाइन चाहिए...
...वरना तुम्हारी छात्रवृत्ति रद्द हो जाएगी.
सर, आज शुक्रवार है! इसे बनाने में एक महीना लगा.
दो दिन या घर लौट जाओ.
मैंने ये क्या किया? प्रोत्साहन का नशा मेरे सिर चढ़ गया क्या?

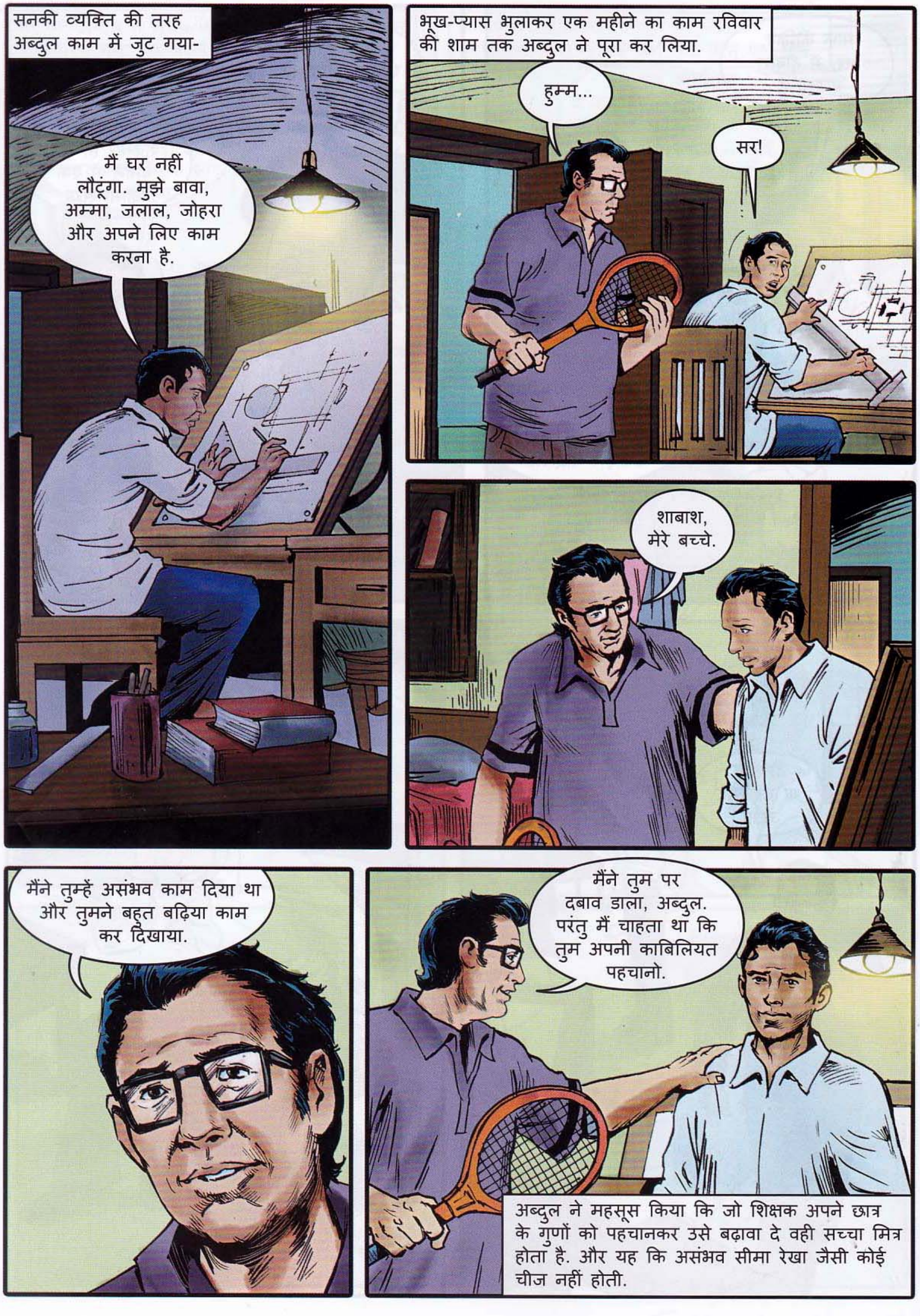
सनकी व्यक्ति की तरह अब्दुल काम में जुट गया-
मैं घर नहीं लौटूंगा. मुझे बावा, अम्मा, जलाल, जोहरा और अपने लिए काम करना है.
भूख-प्यास भुलाकर एक महीने का काम रविवार की शाम तक अब्दुल ने पूरा कर लिया.
हुम्म...
सर!
शाबाश, मेरे बच्चे.
मैंने तुम्हें असंभव काम दिया था और तुमने बहुत बढ़िया काम कर दिखाया.
मैंने तुम पर दबाव डाला, अब्दुल. परंतु मैं चाहता था कि तुम अपनी काबिलियत पहचानो.
अब्दुल ने महसूस किया कि जो शिक्षक अपने छात्र के गुणों को पहचानकर उसे बढ़ावा दे वही सच्चा मित्र होता है. और यह कि असंभव सीमा रेखा जैसी कोई चीज नहीं होती.

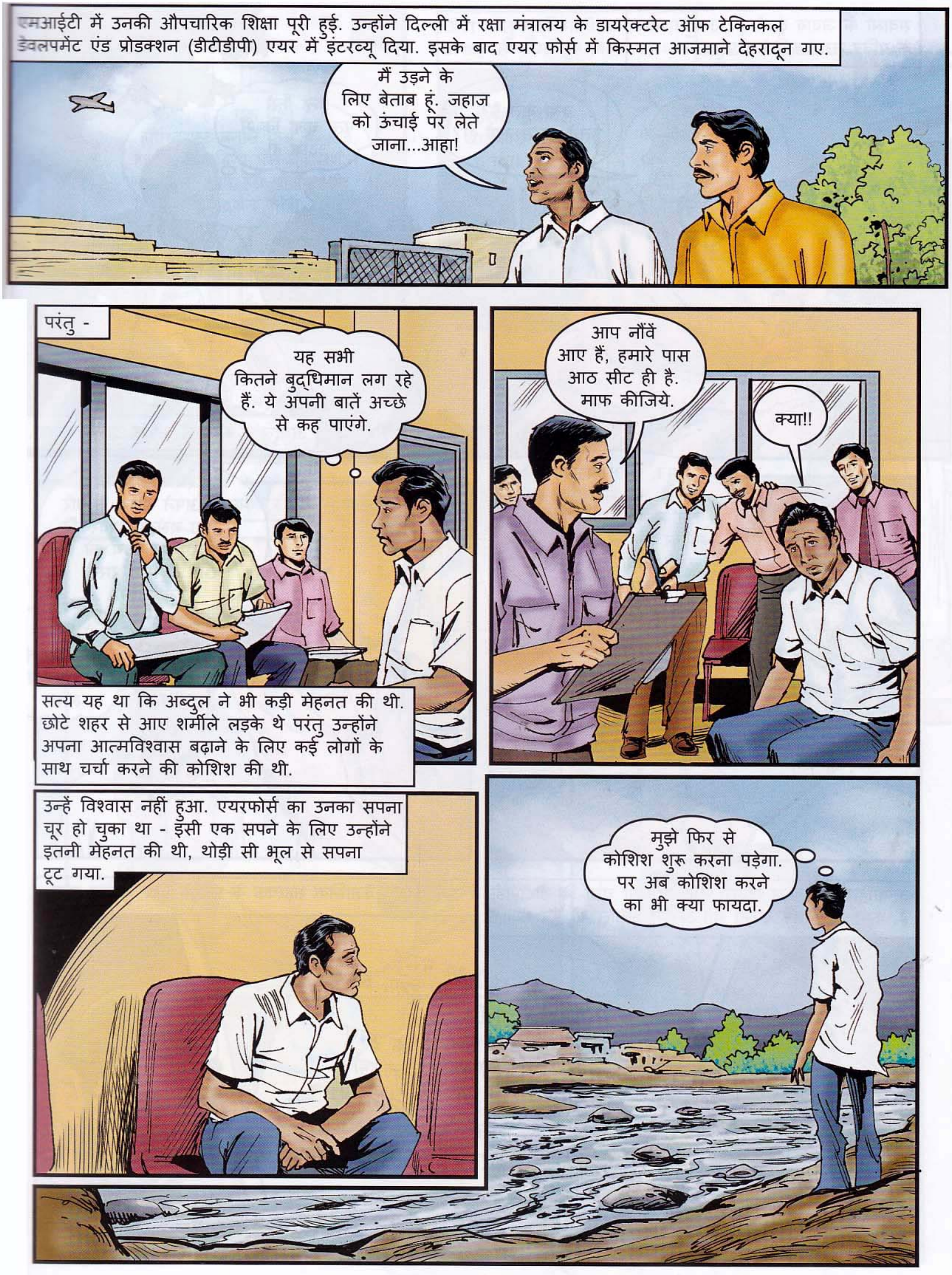
एमआईटी में उनकी औपचारिक शिक्षा पूरी हुई. उन्होंने दिल्ली में रक्षा मंत्रालय के डायरेक्टरेट ऑफ टेक्निकल डेवलपमेंट एंड प्रोडक्शन (डीटीडीपी) एयर में इंटरव्यू दिया. इसके बाद एयर फोर्स में किस्मत आजमाने देहरादून गए.
मैं उड़ने के लिए बेताब हूं. जहाज को ऊंचाई पर लेते जाना...आहा!
परंतु -
यह सभी कितने बुद्धिमान लग रहे हैं. ये अपनी बातें अच्छे से कह पाएंगे.
सत्य यह था कि अब्दुल ने भी कड़ी मेहनत की थी. छोटे शहर से आए शर्मीले लड़के थे परंतु उन्होंने अपना आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए कई लोगों के साथ चर्चा करने की कोशिश की थी.
आप नौवें आए हैं, हमारे पास आठ सीट ही है. माफ कीजिये.
क्या!!
उन्हें विश्वास नहीं हुआ. एयरफोर्स का उनका सपना चूर हो चुका था - इसी एक सपने के लिए उन्होंने इतनी मेहनत की थी, थोड़ी सी भूल से सपना टूट गया.
मुझे फिर से कोशिश शुरू करना पड़ेगा. पर अब कोशिश करने का भी क्या फायदा.

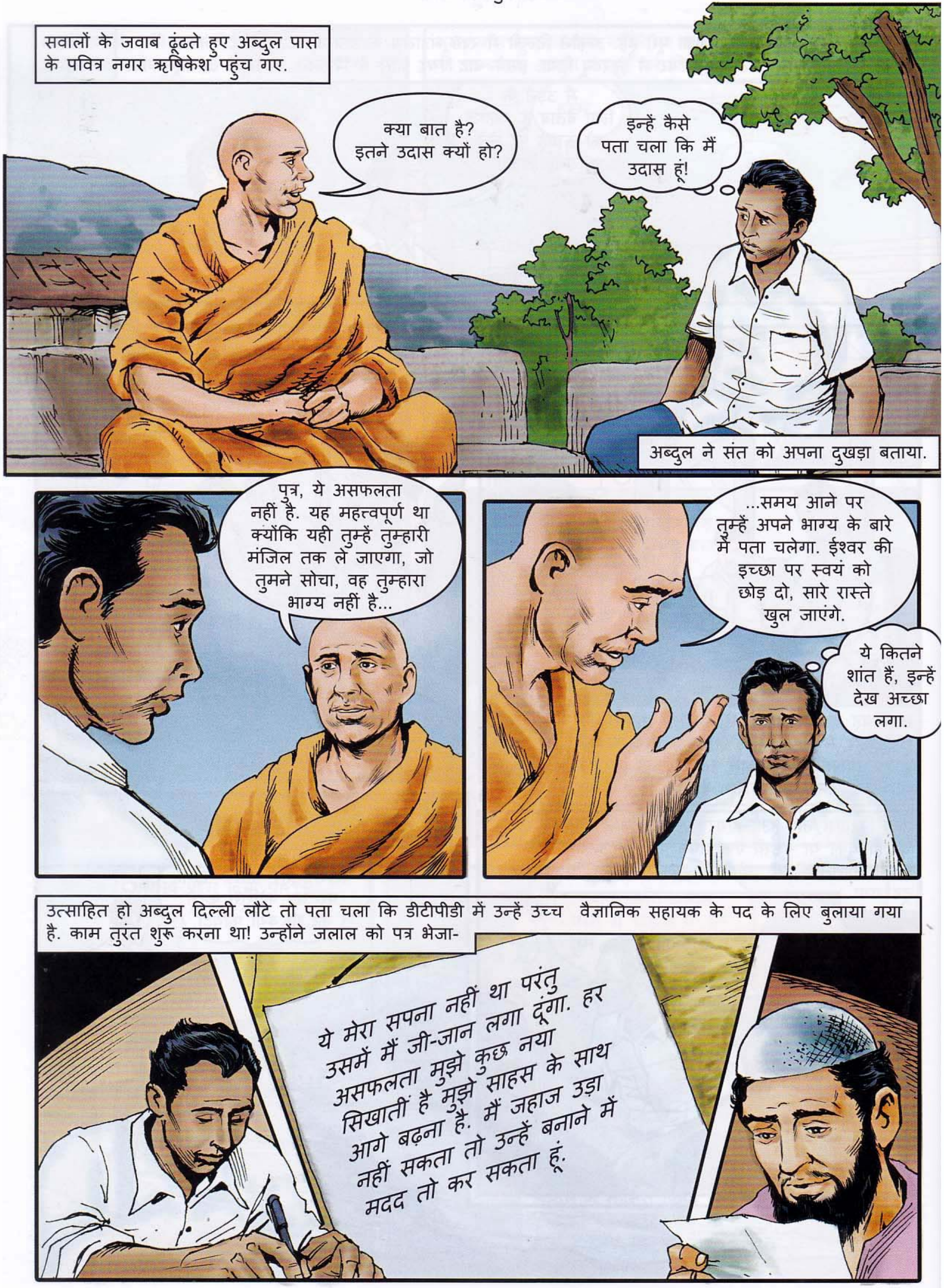
सवालों के जवाब ढूंढते हुए अब्दुल पास के पवित्र नगर ऋषिकेश पहुंच गए.
क्या बात है? इतने उदास क्यों हो?
इन्हें कैसे पता चला कि मैं उदास हूं!
अब्दुल ने संत को अपना दुखड़ा बताया.
पुत्र, ये असफलता नहीं है. यह महत्वपूर्ण था क्योंकि यही तुम्हें तुम्हारी मंजिल तक ले जाएगा, जो तुमने सोचा, वह तुम्हारा भाग्य नहीं है...
...समय आने पर तुम्हें अपने भाग्य के बारे में पता चलेगा. ईश्वर की इच्छा पर स्वयं को छोड़ दो, सारे रास्ते खुल जाएंगे.
ये कितने शांत हैं, इन्हें देख अच्छा लगा.
उत्साहित हो अब्दुल दिल्ली लौटे तो पता चला कि डीटीपीडी में उन्हें उच्च वैज्ञानिक सहायक के पद के लिए बुलाया गया है. काम तुरंत शुरू करना था! उन्होंने जलाल को पत्र भेजा-
ये मेरा सपना नहीं था परंतु उसमें मैं जी-जान लगा दूंगा. हर असफलता मुझे कुछ नया सिखाती है मुझे साहस के साथ आगे बढ़ना है. मैं जहाज उड़ा नहीं सकता तो उन्हें बनाने में मदद तो कर सकता हूं.

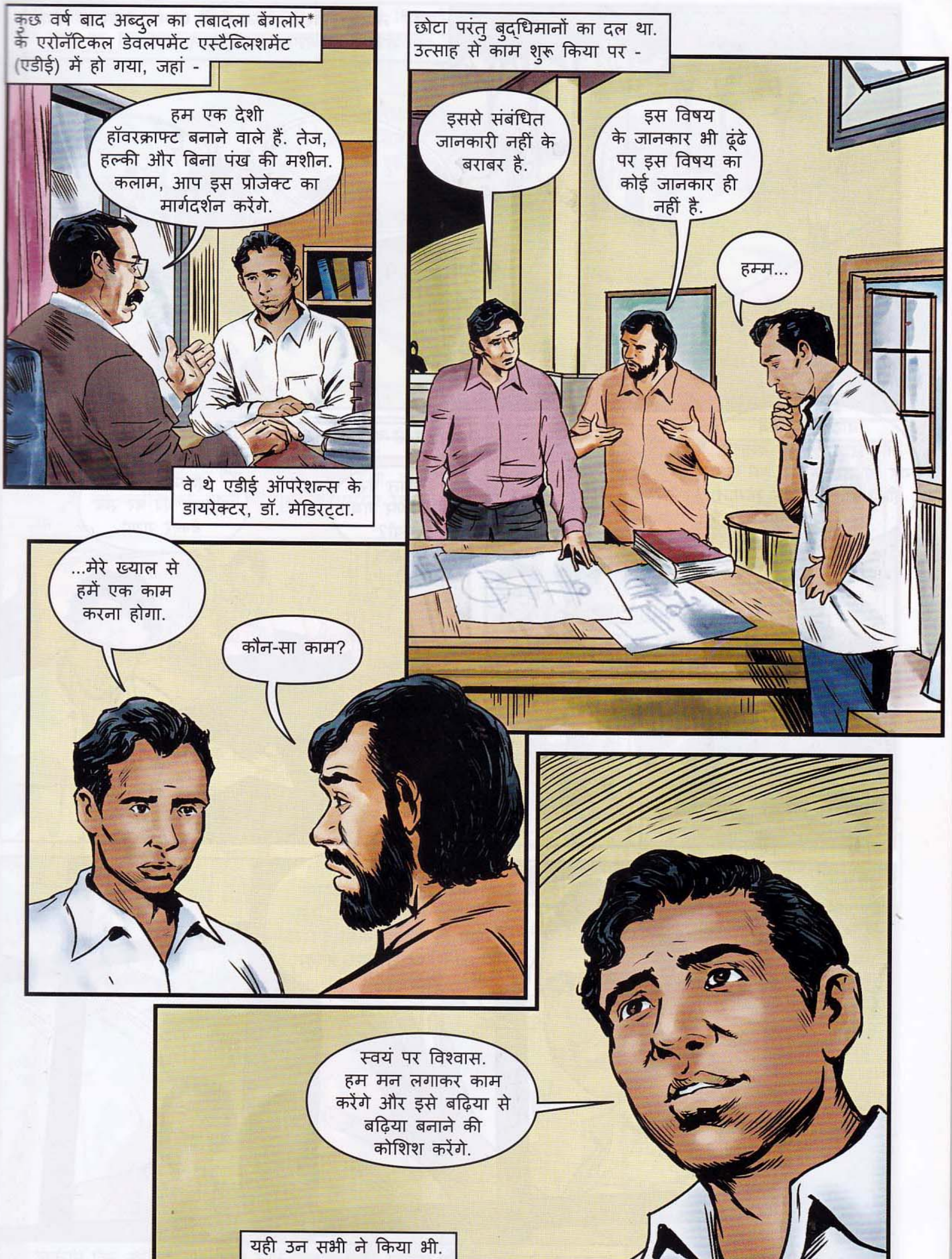
कुछ वर्ष बाद अब्दुल का तबादला बैंगलोर* के एरोनॉटिकल डेवलपमेंट एस्टैब्लिशमेंट (एडीई) में हो गया, जहां -
हम एक देशी हॉवरक्राफ्ट बनाने वाले हैं. तेज, हल्की और बिना पंख की मशीन. कलाम, आप इस प्रोजेक्ट का मार्गदर्शन करेंगे.
वे थे एडीई ऑपरेशन्स के डायरेक्टर, डॉ. मेडिरट्टा.
छोटा परंतु बुद्धिमानों का दल था. उत्साह से काम शुरू किया पर -
इससे संबंधित जानकारी नहीं के बराबर है.
इस विषय के जानकार भी ढूंढे पर इस विषय का कोई जानकार ही नहीं है.
हम्म...
...मेरे ख्याल से हमें एक काम करना होगा.
कौन-सा काम?
स्वयं पर विश्वास. हम मन लगाकर काम करेंगे और इसे बढ़िया से बढ़िया बनाने की कोशिश करेंगे.
यही उन सभी ने किया भी.

*आज बेंगलुरु

*भगवान शिव के वाहन, नन्दी बैल पर हॉवर क्राफ्ट का नाम रखा गया था.

*इंडियन नेशनल कमिटी फॉर स्पेस रिसर्च, बाद में इसरो (इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन)

^नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन, यूएसए

**अब मुंबई

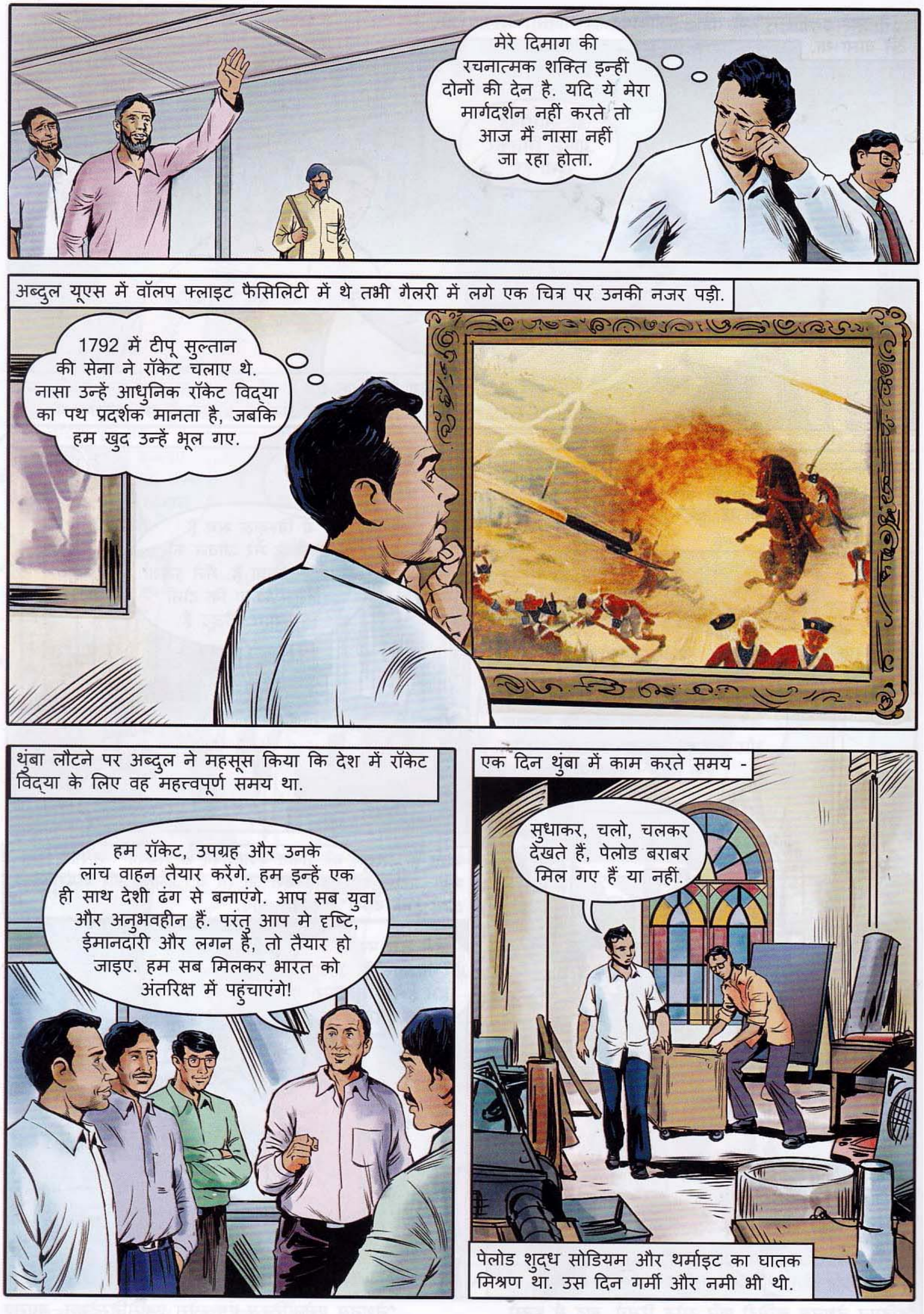
मेरे दिमाग की रचनात्मक शक्ति इन्हीं दोनों की देन है. यदि ये मेरा मार्गदर्शन नहीं करते तो आज मैं नासा नहीं जा रहा होता.
अब्दुल यूएस में वॉलप फ्लाइट फैसिलिटी में थे तभी गैलरी में लगे एक चित्र पर उनकी नजर पड़ी.
1792 में टीपू सुल्तान की सेना ने रॉकेट चलाए थे. नासा उन्हें आधुनिक रॉकेट विद्या का पथ प्रदर्शक मानता है, जबकि हम खुद उन्हें भूल गए.
थुंबा लौटने पर अब्दुल ने महसूस किया कि देश में रॉकेट विद्या के लिए वह महत्त्वपूर्ण समय था.
हम रॉकेट, उपग्रह और उनके लांच वाहन तैयार करेंगे. हम इन्हें एक ही साथ देशी ढंग से बनाएंगे. आप सब युवा और अनुभवहीन हैं. परंतु आप मे दृष्टि, ईमानदारी और लगन है, तो तैयार हो जाइए. हम सब मिलकर भारत को अंतरिक्ष में पहुंचाएंगे!
एक दिन थुंबा में काम करते समय -
सुधाकर, चलो, चलकर देखते हैं, पेलोड बराबर मिल गए हैं या नहीं.
पेलोड शुद्ध सोडियम और थर्माइट का घातक मिश्रण था. उस दिन गर्मी और नमी भी थी.

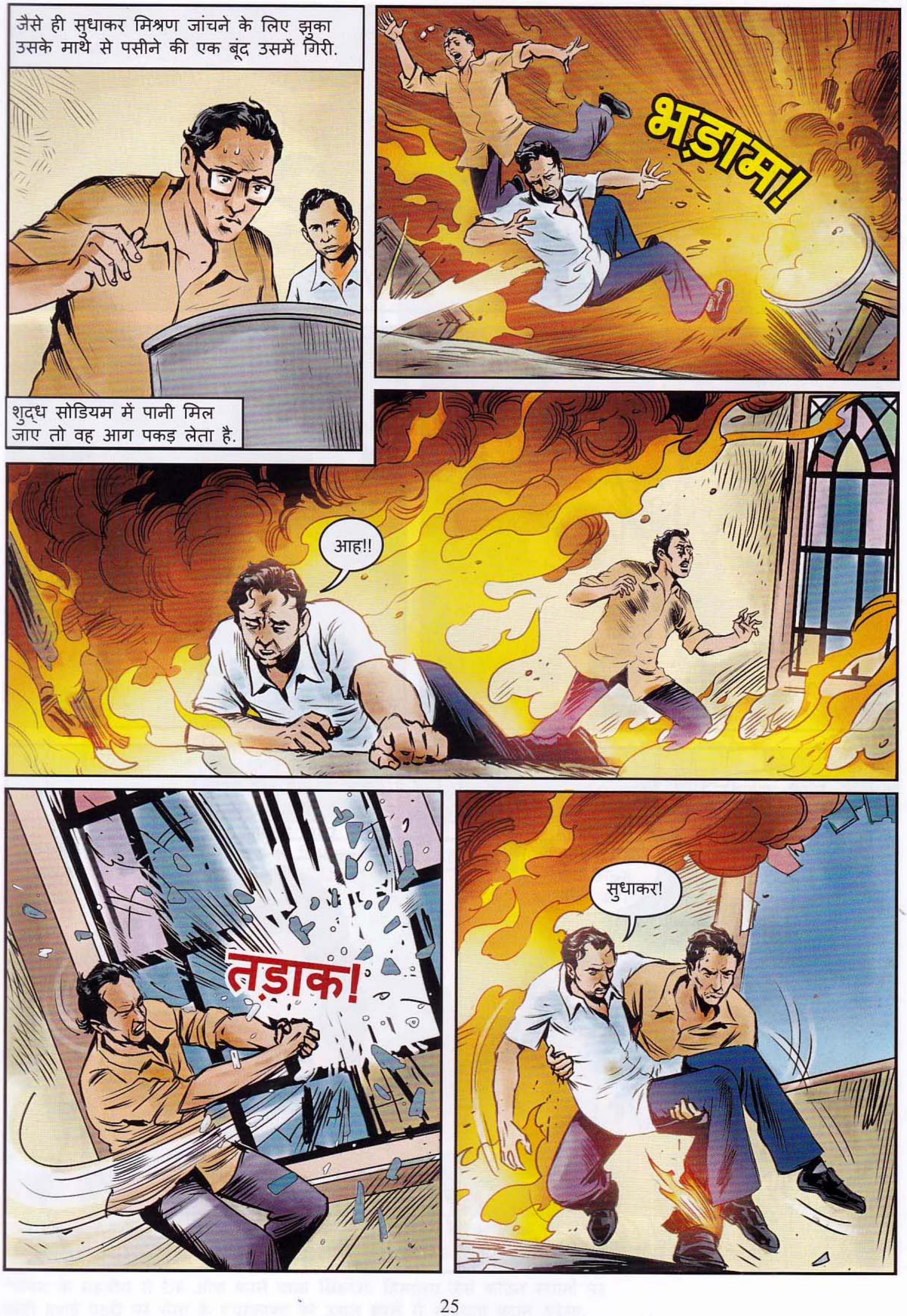
जैसे ही सुधाकर मिश्रण जांचने के लिए झुका उसके माथे से पसीने की एक बूंद उसमें गिरी.
शुद्ध सोडियम में पानी मिल जाए तो वह आग पकड़ लेता है.
भड़ाम!
आह!!
तड़ाक!
सुधाकर!

हं ह!!
अपनी जान की परवाह न कर तुमने मेरी जान बचाई. दोस्त, मैं तुम्हारा ये कर्ज कैसे उतारूँ?
बस इतना ध्यान रखना कि हमारा काम रुके नहीं.
सुधाकर ने सोचा मेरी जान कीमती और बचाने लायक थी. मैं इसकी बात का ध्यान रखूंगा.

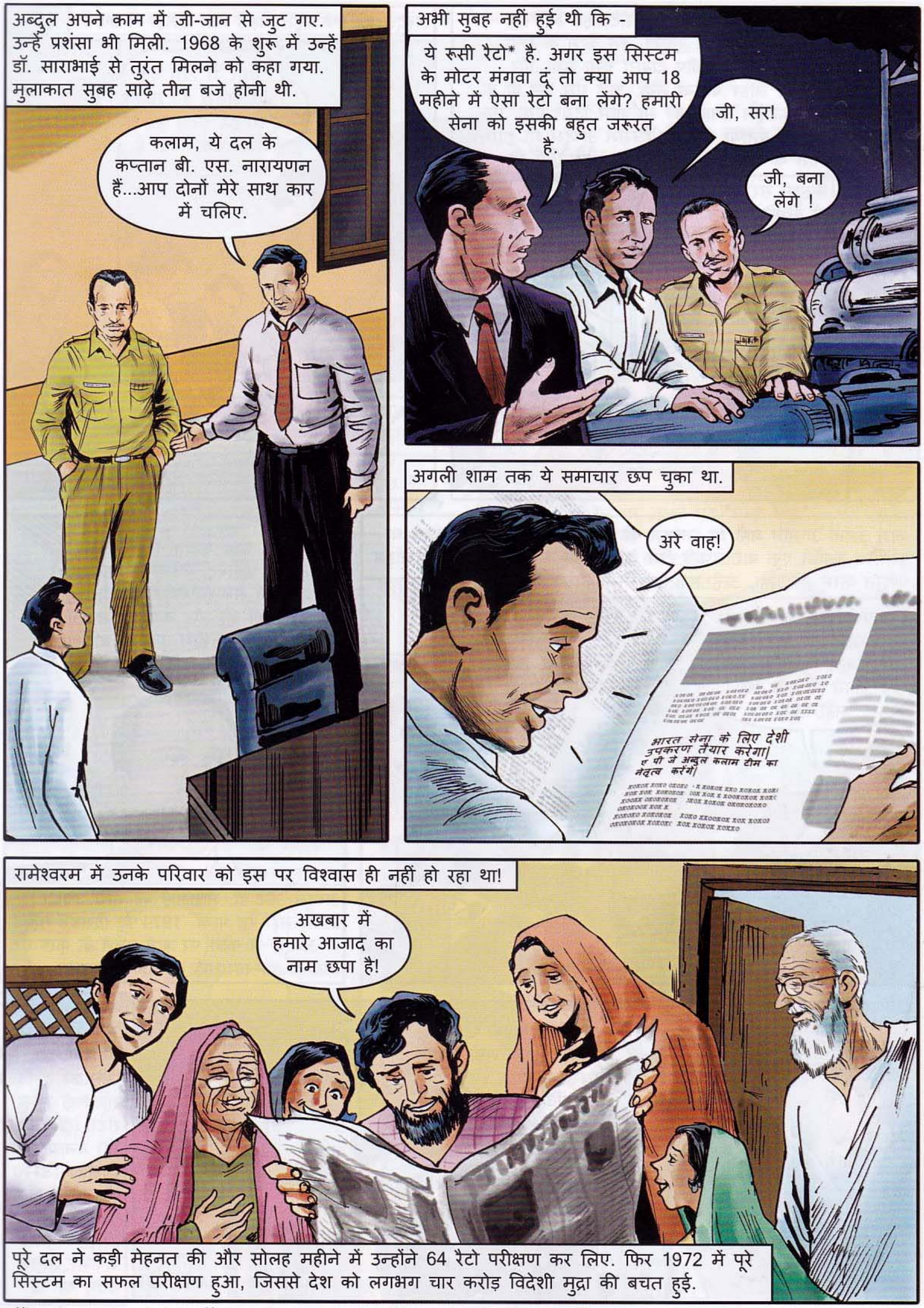

*रॉकेट के सहयोग से टेक ऑफ करने वाला सिस्टम. हिमालय जैसे कठिन स्थानों पर छोटी हवाई पट्टी पर सेना के एयरक्राफ्ट को उड़ान भरने में सहायता प्रदान करेगा.

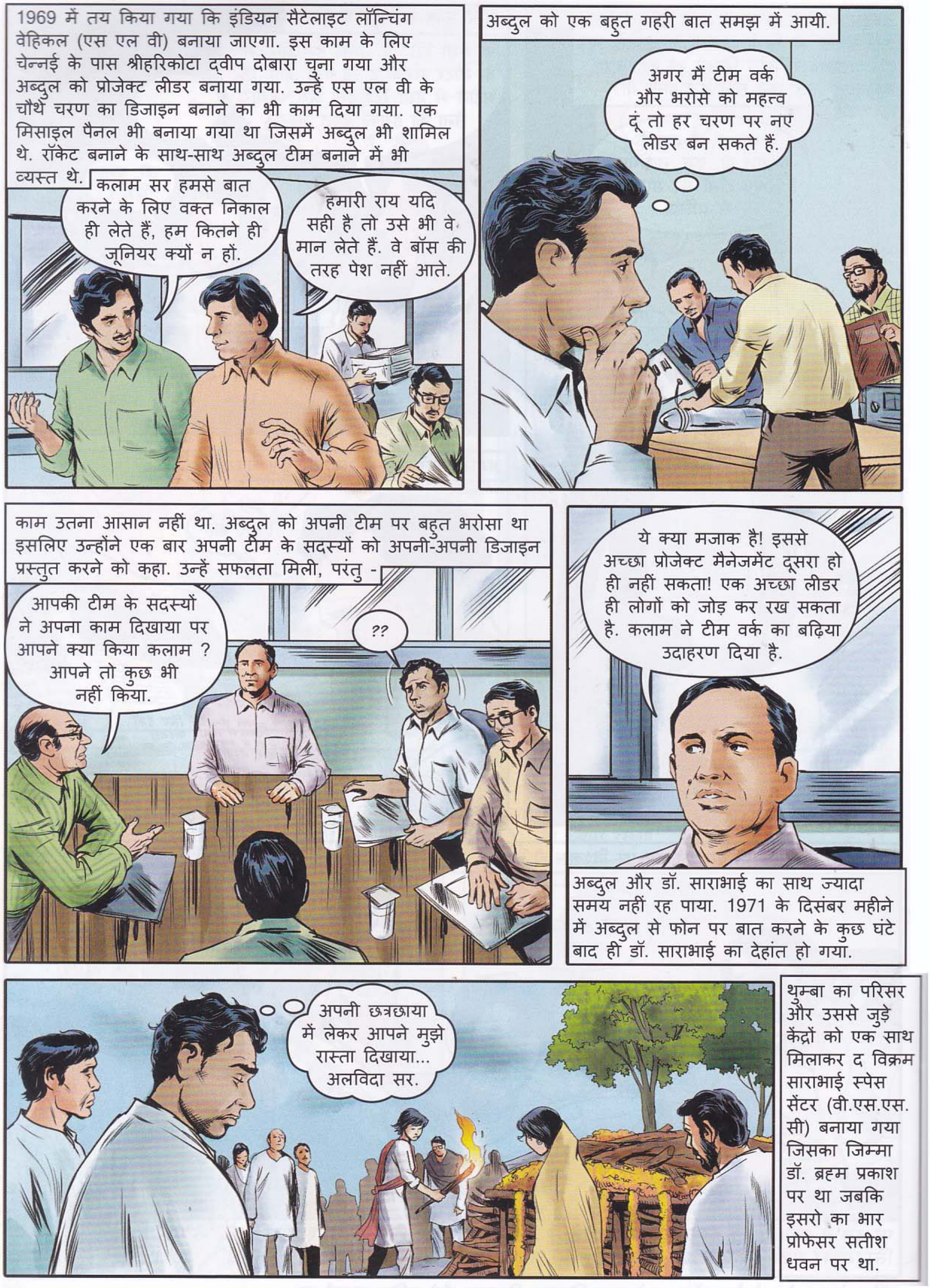
1969 में तय किया गया कि इंडियन सैटेलाइट लॉन्चिंग वेहिकल (एस एल वी) बनाया जाएगा. इस काम के लिए चेन्नई के पास श्रीहरिकोटा द्वीप दोबारा चुना गया और अब्दुल को प्रोजेक्ट लीडर बनाया गया. उन्हें एस एल वी के चौथे चरण का डिजाइन बनाने का भी काम दिया गया. एक मिसाइल पैनल भी बनाया गया था जिसमें अब्दुल भी शामिल थे. रॉकेट बनाने के साथ-साथ अब्दुल टीम बनाने में भी व्यस्त थे.
कलाम सर हमसे बात करने के लिए वक्त निकाल ही लेते हैं, हम कितने ही जूनियर क्यों न हों.
हमारी राय यदि सही है तो उसे भी वे मान लेते हैं. वे बॉस की तरह पेश नहीं आते.
अब्दुल को एक बहुत गहरी बात समझ में आयी.
अगर मैं टीम वर्क और भरोसे को महत्त्व दूं तो हर चरण पर नए लीडर बन सकते हैं.
काम उतना आसान नहीं था. अब्दुल को अपनी टीम पर बहुत भरोसा था इसलिए उन्होंने एक बार अपनी टीम के सदस्यों को अपनी-अपनी डिजाइन प्रस्तुत करने को कहा. उन्हें सफलता मिली, परंतु -
आपकी टीम के सदस्यों ने अपना काम दिखाया पर आपने क्या किया कलाम ? आपने तो कुछ भी नहीं किया.
??
ये क्या मजाक है! इससे अच्छा प्रोजेक्ट मैनेजमेंट दूसरा हो ही नहीं सकता! एक अच्छा लीडर ही लोगों को जोड़ कर रख सकता है. कलाम ने टीम वर्क का बढ़िया उदाहरण दिया है.
अब्दुल और डॉ. साराभाई का साथ ज्यादा समय नहीं रह पाया. 1971 के दिसंबर महीने में अब्दुल से फोन पर बात करने के कुछ घंटे बाद ही डॉ. साराभाई का देहांत हो गया.
अपनी छत्रछाया में लेकर आपने मुझे रास्ता दिखाया... अलविदा सर.
थुम्बा का परिसर और उससे जुड़े केंद्रों को एक साथ मिलाकर द विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर (वी.एस.एस.सी) बनाया गया जिसका जिम्मा डॉ. ब्रह्म प्रकाश पर था जबकि इसरो का भार प्रोफेसर सतीश धवन पर था.

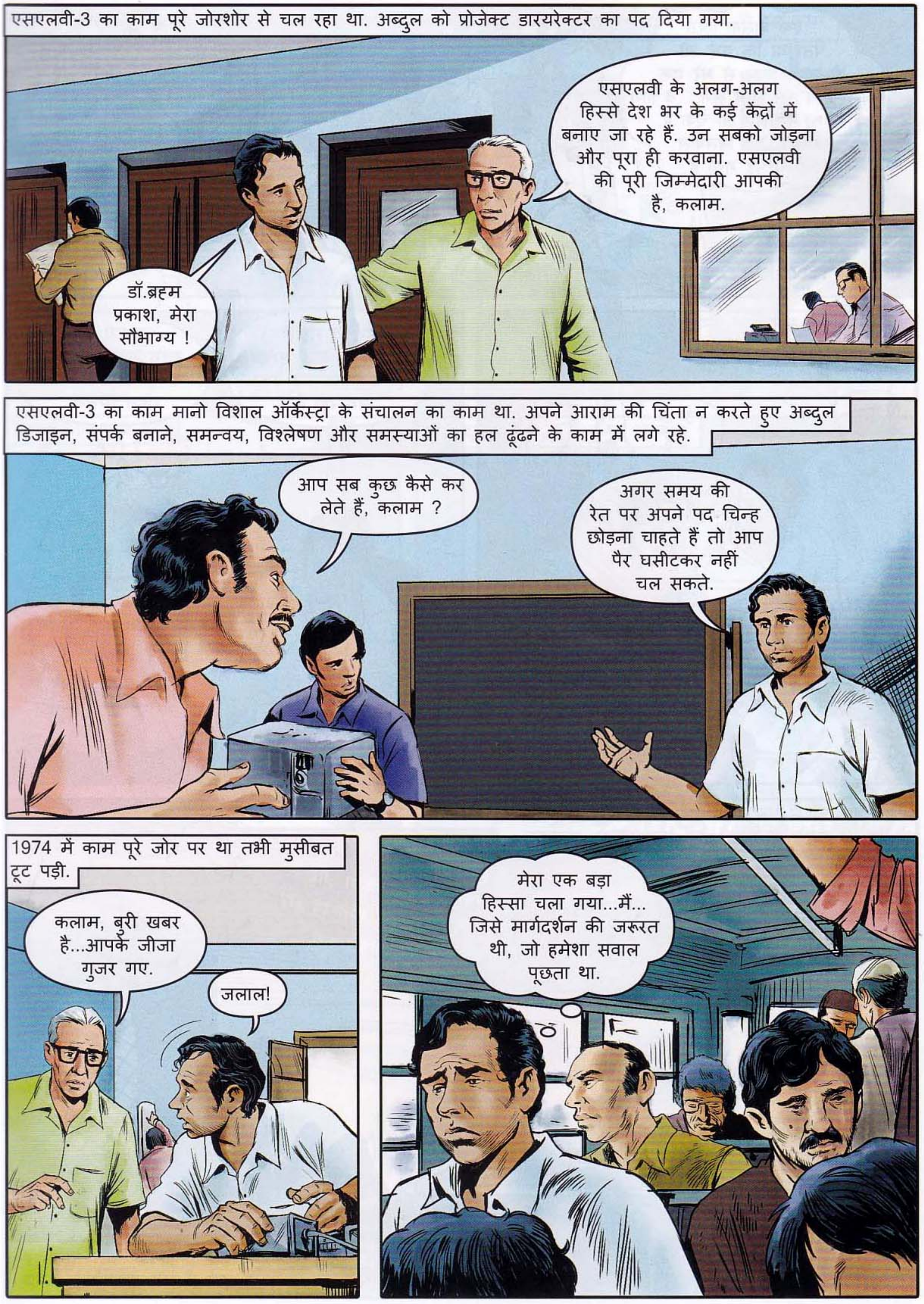
एसएलवी-3 का काम पूरे जोरशोर से चल रहा था. अब्दुल को प्रोजेक्ट डारयरेक्टर का पद दिया गया.
एसएलवी के अलग-अलग हिस्से देश भर के कई केंद्रों में बनाए जा रहे हैं. उन सबको जोड़ना और पूरा ही करवाना. एसएलवी की पूरी जिम्मेदारी आपकी है, कलाम.
डॉ.ब्रह्म प्रकाश, मेरा सौभाग्य !
एसएलवी-3 का काम मानो विशाल ऑर्केस्ट्रा के संचालन का काम था. अपने आराम की चिंता न करते हुए अब्दुल डिजाइन, संपर्क बनाने, समन्वय, विश्लेषण और समस्याओं का हल ढूंढने के काम में लगे रहे.
आप सब कुछ कैसे कर लेते हैं, कलाम ?
अगर समय की रेत पर अपने पद चिन्ह छोड़ना चाहते हैं तो आप पैर घसीटकर नहीं चल सकते.
1974 में काम पूरे जोर पर था तभी मुसीबत टूट पड़ी.
कलाम, बुरी खबर है...आपके जीजा गुजर गए.
जलाल!
मेरा एक बड़ा हिस्सा चला गया...मैं... जिसे मार्गदर्शन की जरूरत थी, जो हमेशा सवाल पूछता था.

...एक बालक जिसे पता था कि चाहे जो हो जाए, प्यार से भरे एक जोड़ी हाथ उसे थाम लेंगे... वे हाथ हमेशा के लिए जा चुके हैं. जलाल, अब बिलकुल अकेला पड़ गया हूं.
जोहरा खुद को संभाल न पायी.
ऊं ऊं ऊँहूँ .
सर, ये मुझसे नहीं होगा. कुछ समझ नहीं आ रहा. सब बेकार लग रहा है.
तुम्हारा दुख बहुत गहरा है, परंतु काम करने से थोड़ी राहत मिलेगी.
अगले दो वर्षों में अब्दुल के बावा और अम्मी का देहांत हो गया. बचपन के अपने मस्जिद में बैठ वह उनके जाने का शोक मना रहे थे. अचानक -
मैंने जो काम दिया, उन्होंने ईमानदारी और लगन के साथ किया और फिर मेरे पास आए. उनकी उपलब्धि के दिन तुम शोक क्यों मना रहे हो? काम पर ध्यान दो और अपने कार्यों से मेरे यश को घोषित करो.
ये शब्द किसी ने नहीं कहे, परंतु अब्दुल ने उन्हें साफ-साफ सुना. अगली सुबह थुम्बा पहुंचकर वे अपने काम में मन लगाकर जुट गए.

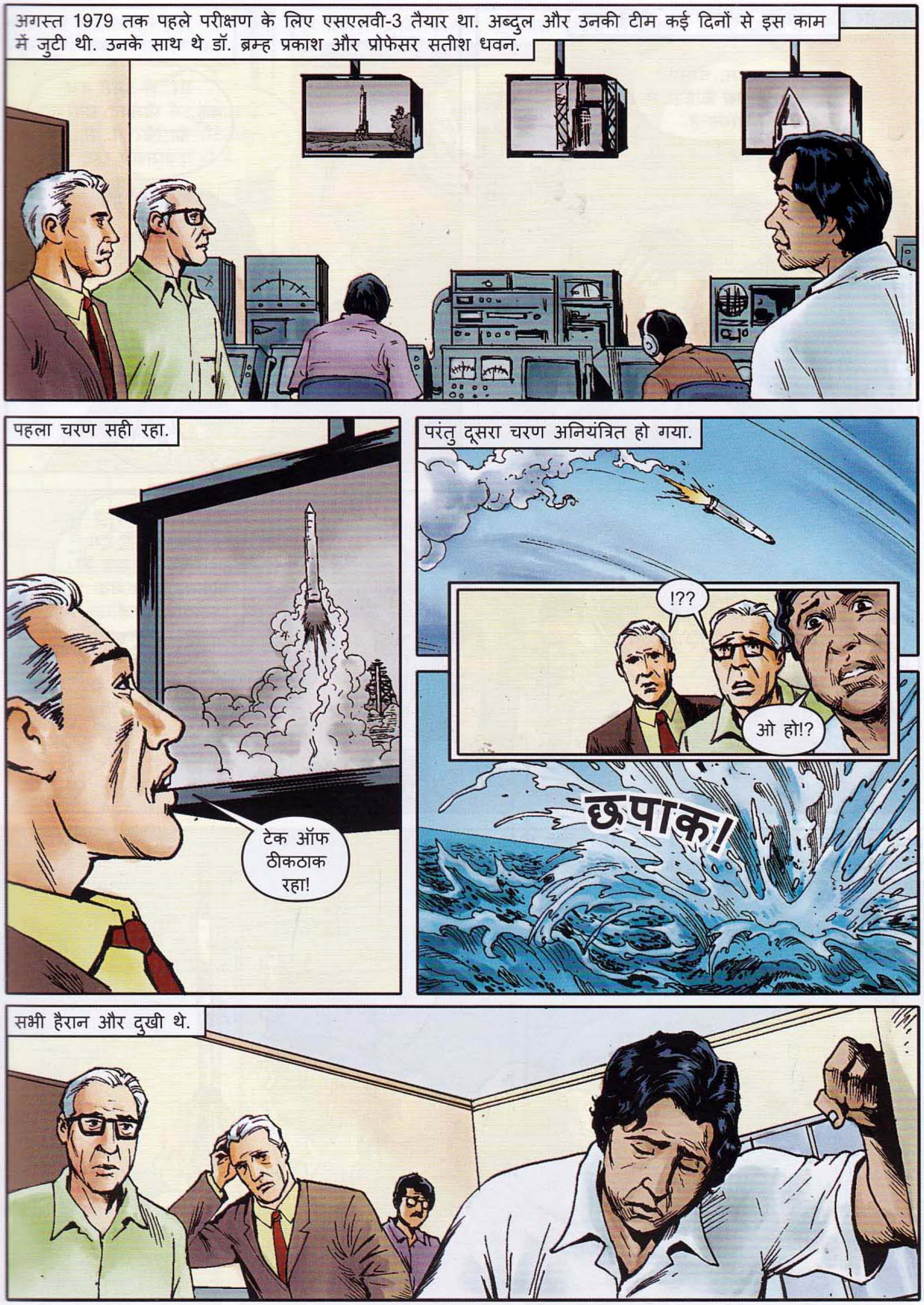
अगस्त 1979 तक पहले परीक्षण के लिए एसएलवी-3 तैयार था. अब्दुल और उनकी टीम कई दिनों से इस काम में जुटी थी. उनके साथ थे डॉ. ब्रम्ह प्रकाश और प्रोफेसर सतीश धवन.
पहला चरण सही रहा.
टेक ऑफ ठीकठाक रहा!
परंतु दूसरा चरण अनियंत्रित हो गया.
!??
ओ हो!?
छपाक!
सभी हैरान और दुखी थे.

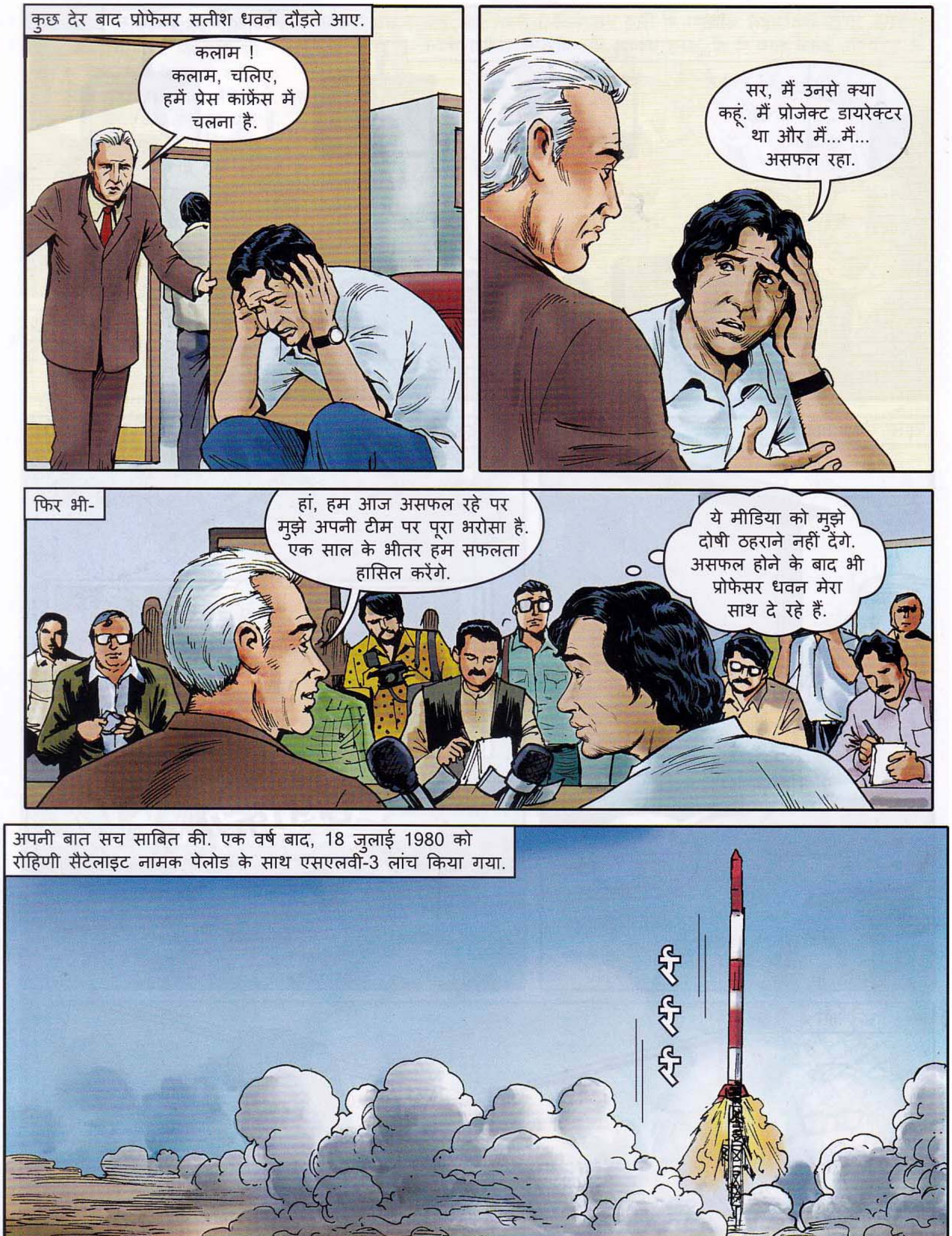
कुछ देर बाद प्रोफेसर सतीश धवन दौड़ते आए.
कलाम ! कलाम, चलिए, हमें प्रेस कांफ्रेंस में चलना है.
सर, मैं उनसे क्या कहूं. मैं प्रोजेक्ट डायरेक्टर था और मैं...मैं... असफल रहा.
फिर भी-
हां, हम आज असफल रहे पर मुझे अपनी टीम पर पूरा भरोसा है. एक साल के भीतर हम सफलता हासिल करेंगे.
ये मीडिया को मुझे दोषी ठहराने नहीं देंगे. असफल होने के बाद भी प्रोफेसर धवन मेरा साथ दे रहे हैं.
अपनी बात सच साबित की. एक वर्ष बाद, 18 जुलाई 1980 को रोहिणी सैटेलाइट नामक पेलोड के साथ एसएलवी-3 लांच किया गया.

*इंदिरा गांधी, तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री

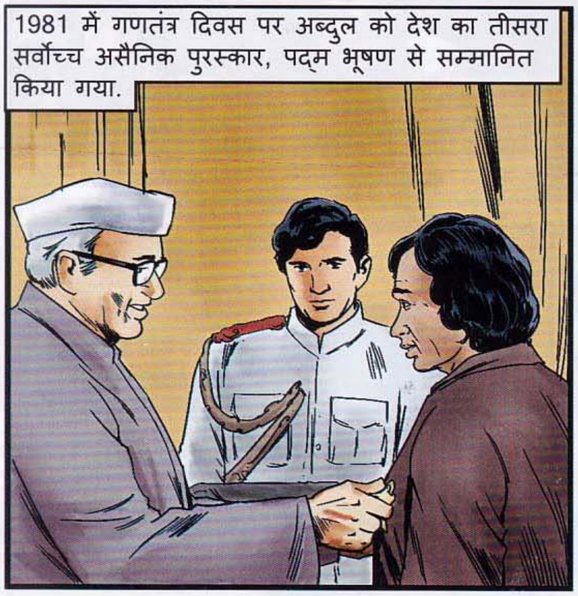

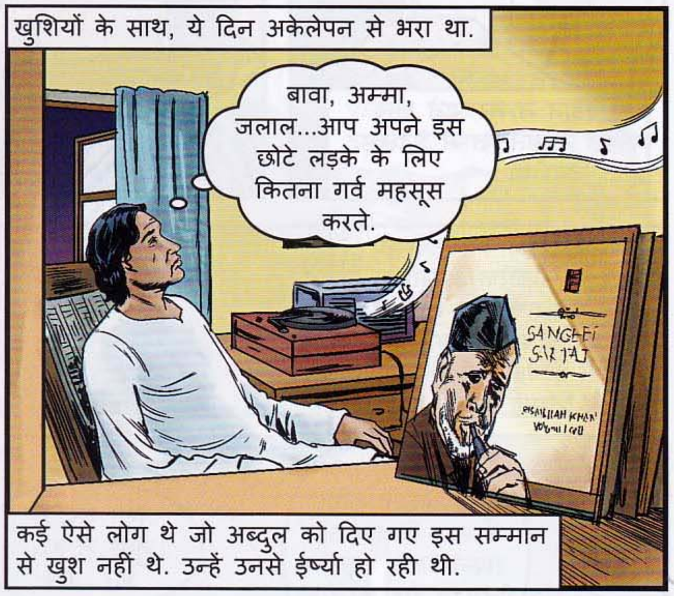

*डिफेन्स रिसर्च एंड डेवलपमेंट लेबोरेटरी, ड़ीआरडीओ का मिसाइल सिस्टम लेबोरेट्री (डिफेन्स रिसर्च एंड डेवलपमेंट आर्गेनाइजेशन)

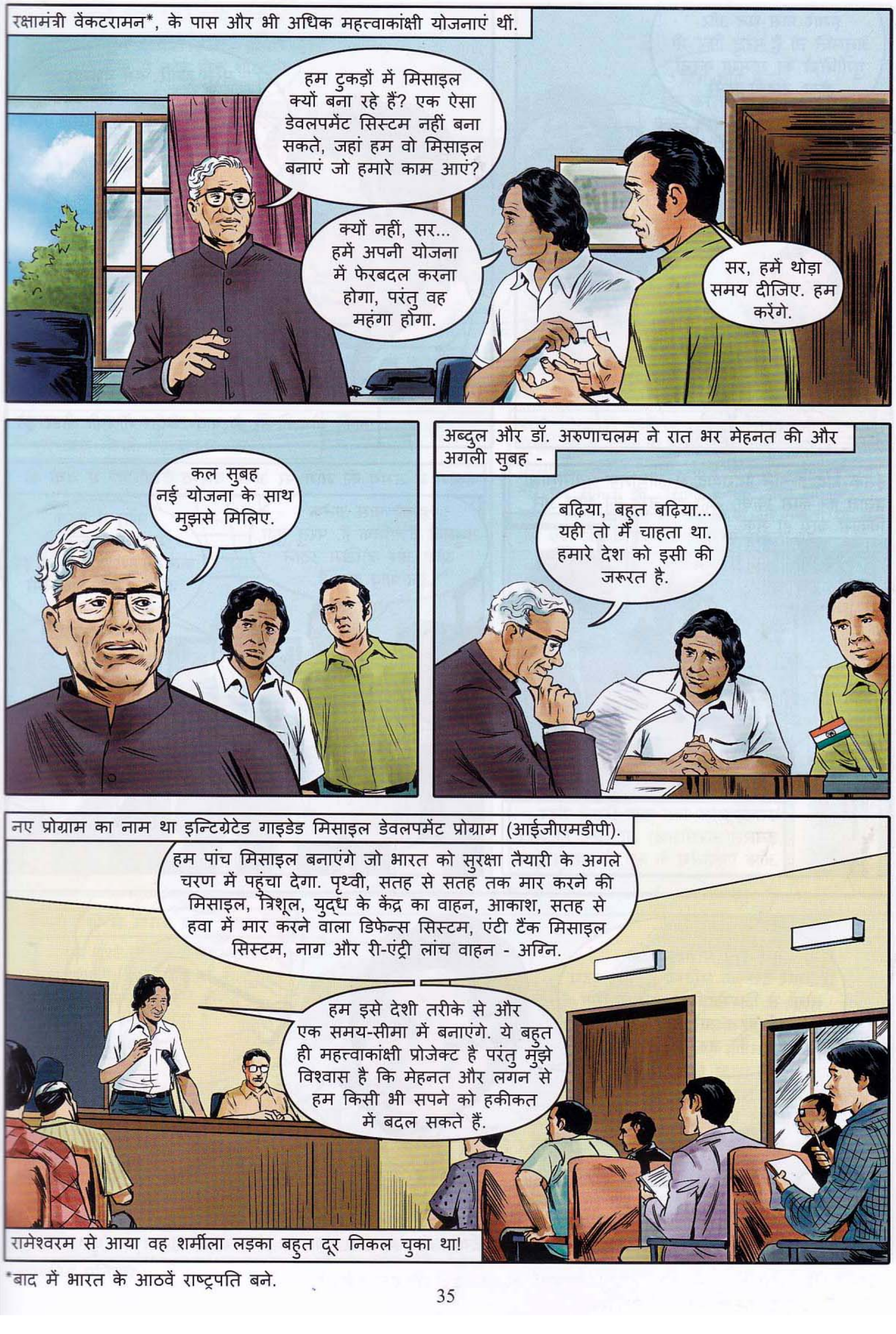

*बाद में भारत के आठवें राष्ट्रपति बने.

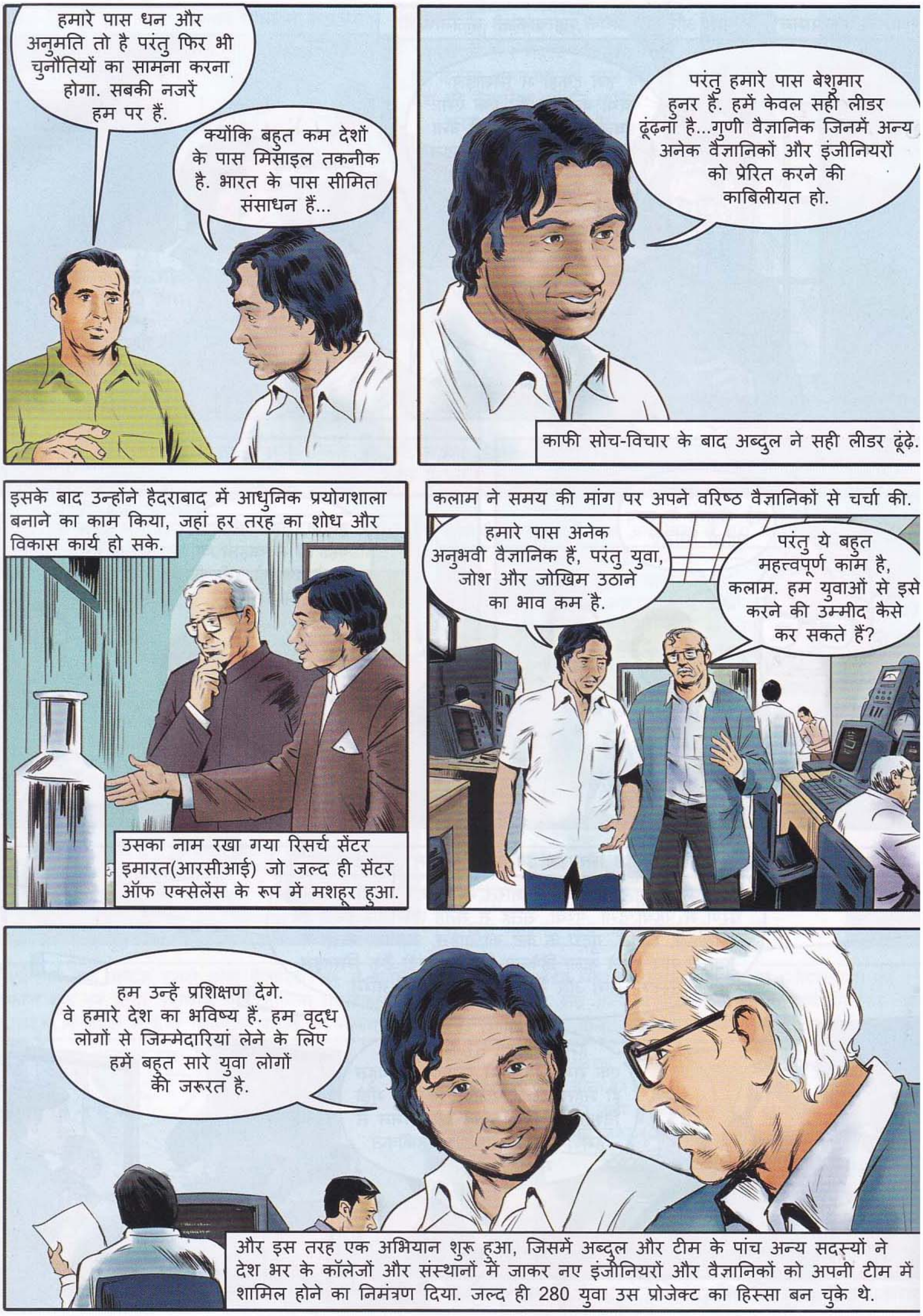
हमारे पास धन और अनुमति तो है परंतु फिर भी चुनौतियों का सामना करना होगा. सबकी नजरें हम पर हैं.
क्योंकि बहुत कम देशों के पास मिसाइल तकनीक है. भारत के पास सीमित संसाधन हैं...
परंतु हमारे पास बेशुमार हुनर हैं. हमें केवल सही लीडर ढूंढ़ना है...गुणी वैज्ञानिक जिनमें अन्य अनेक वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को प्रेरित करने की काबिलीयत हो.
काफी सोच-विचार के बाद अब्दुल ने सही लीडर ढूंढ़े.
इसके बाद उन्होंने हैदराबाद में आधुनिक प्रयोगशाला बनाने का काम किया, जहां हर तरह का शोध और विकास कार्य हो सके.
उसका नाम रखा गया रिसर्च सेंटर इमारत(आरसीआई) जो जल्द ही सेंटर ऑफ एक्सेलेंस के रूप में मशहूर हुआ.
कलाम ने समय की मांग पर अपने वरिष्ठ वैज्ञानिकों से चर्चा की.
हमारे पास अनेक अनुभवी वैज्ञानिक हैं, परंतु युवा, जोश और जोखिम उठाने का भाव कम है.
परंतु ये बहुत महत्त्वपूर्ण काम है, कलाम. हम युवाओं से इसे करने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?
हम उन्हें प्रशिक्षण देंगे. वे हमारे देश का भविष्य हैं. हम वृद्ध लोगों से जिम्मेदारियां लेने के लिए हमें बहुत सारे युवा लोगों की जरूरत है.
और इस तरह एक अभियान शुरू हुआ, जिसमें अब्दुल और टीम के पांच अन्य सदस्यों ने देश भर के कॉलेजों और संस्थानों में जाकर नए इंजीनियरों और वैज्ञानिकों को अपनी टीम में शामिल होने का निमंत्रण दिया. जल्द ही 280 युवा उस प्रोजेक्ट का हिस्सा बन चुके थे.

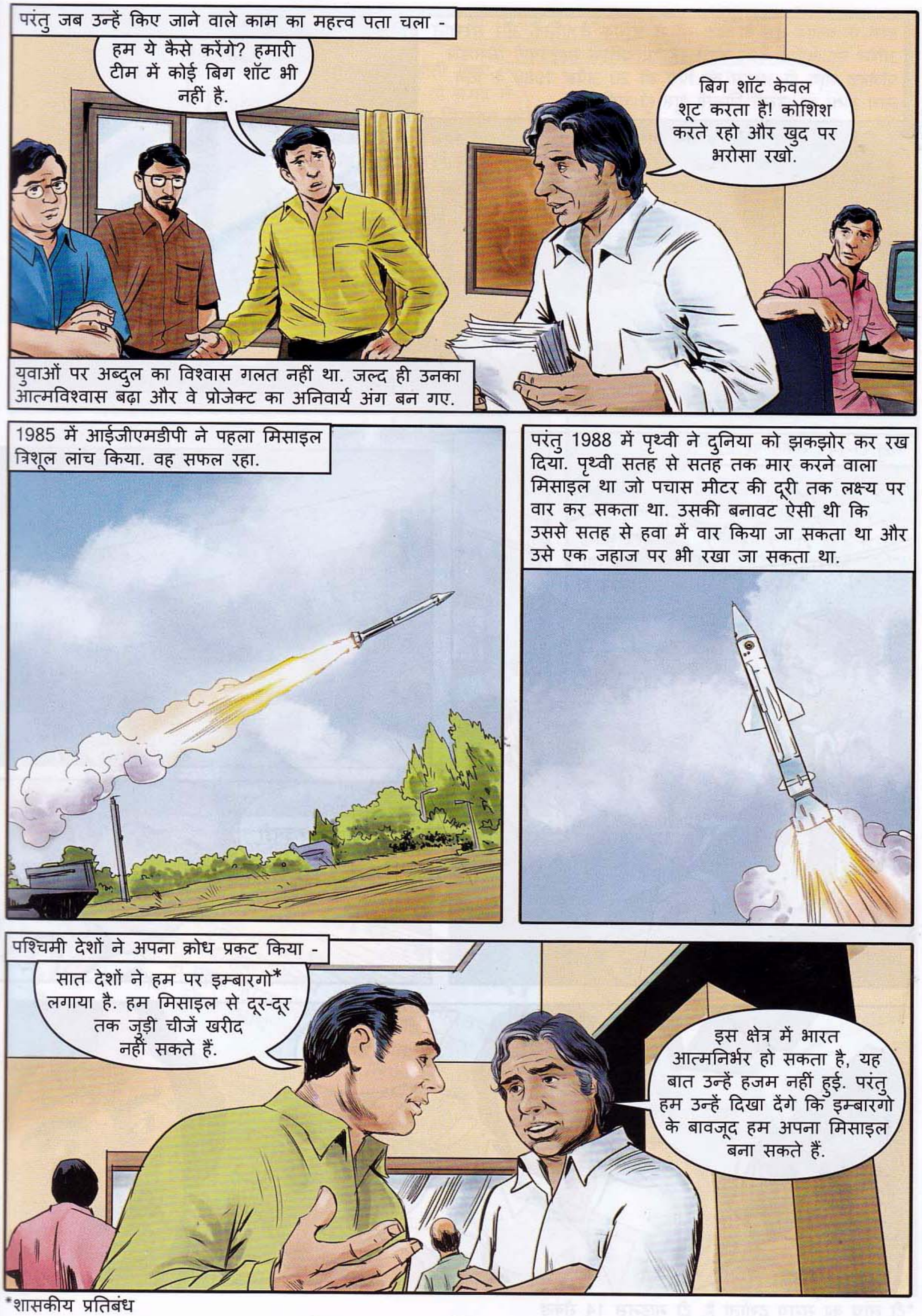
परंतु जब उन्हें किए जाने वाले काम का महत्त्व पता चला -
हम ये कैसे करेंगे? हमारी टीम में कोई बिग शॉट भी नहीं है.
बिग शॉट केवल शूट करता है! कोशिश करते रहो और खुद पर भरोसा रखो.
युवाओं पर अब्दुल का विश्वास गलत नहीं था. जल्द ही उनका आत्मविश्वास बढ़ा और वे प्रोजेक्ट का अनिवार्य अंग बन गए.
1985 में आईजीएमडीपी ने पहला मिसाइल त्रिशूल लांच किया. वह सफल रहा.
परंतु 1988 में पृथ्वी ने दुनिया को झकझोर कर रख दिया. पृथ्वी सतह से सतह तक मार करने वाला मिसाइल था जो पचास मीटर की दूरी तक लक्ष्य पर वार कर सकता था. उसकी बनावट ऐसी थी कि उससे सतह से हवा में वार किया जा सकता था और उसे एक जहाज पर भी रखा जा सकता था.
पश्चिमी देशों ने अपना क्रोध प्रकट किया -
सात देशों ने हम पर इम्बारगो* लगाया है. हम मिसाइल से दूर-दूर तक जुड़ी चीजें खरीद नहीं सकते हैं.
इस क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भर हो सकता है, यह बात उन्हें हजम नहीं हुई. परंतु हम उन्हें दिखा देंगे कि इम्बारगो के बावजूद हम अपना मिसाइल बना सकते हैं.

*शासकीय प्रतिबंध

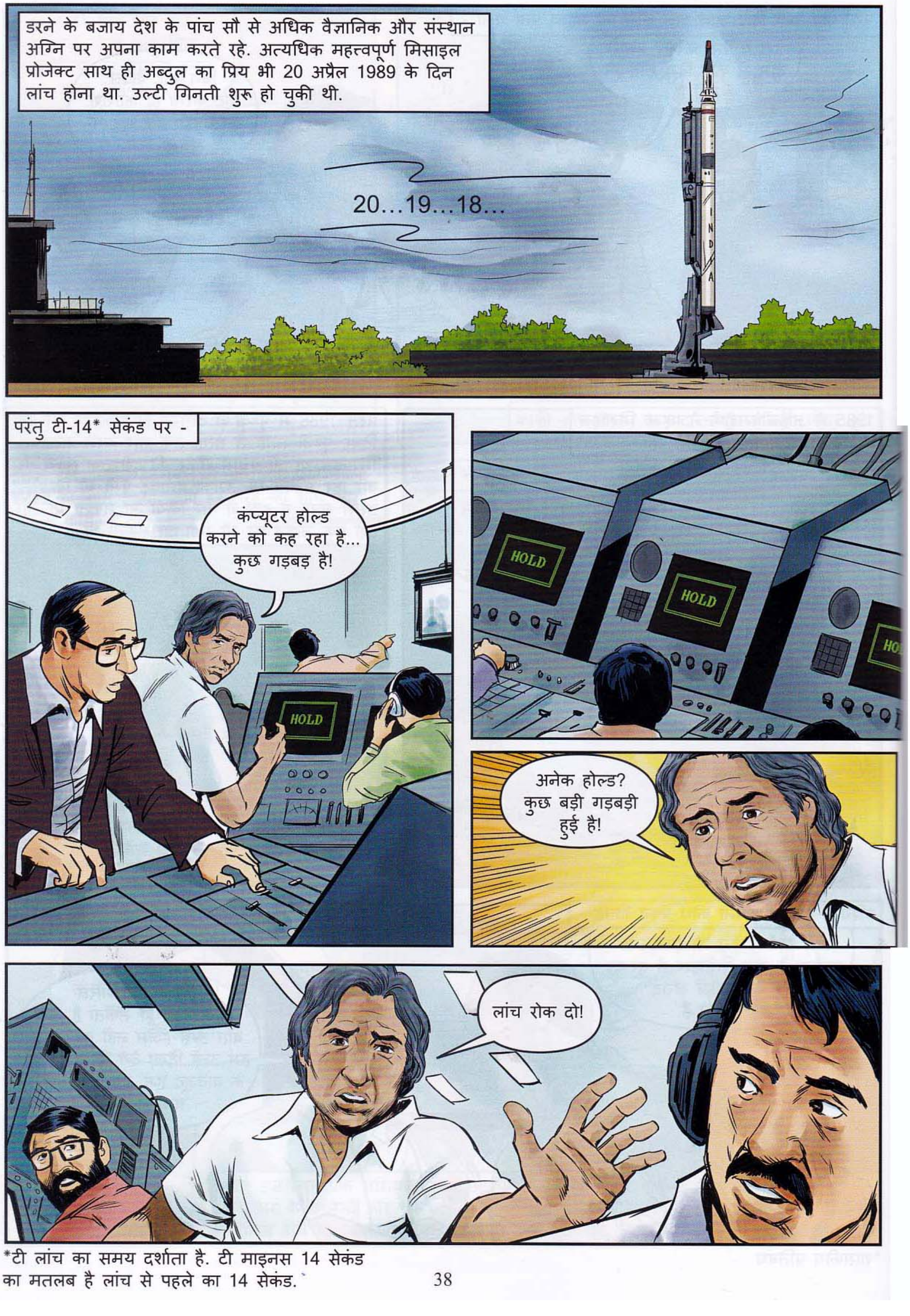

*टी लांच का समय दर्शाता है. टी माइनस 14 सेकंड का मतलब है लांच से पहले का 14 सेकंड.

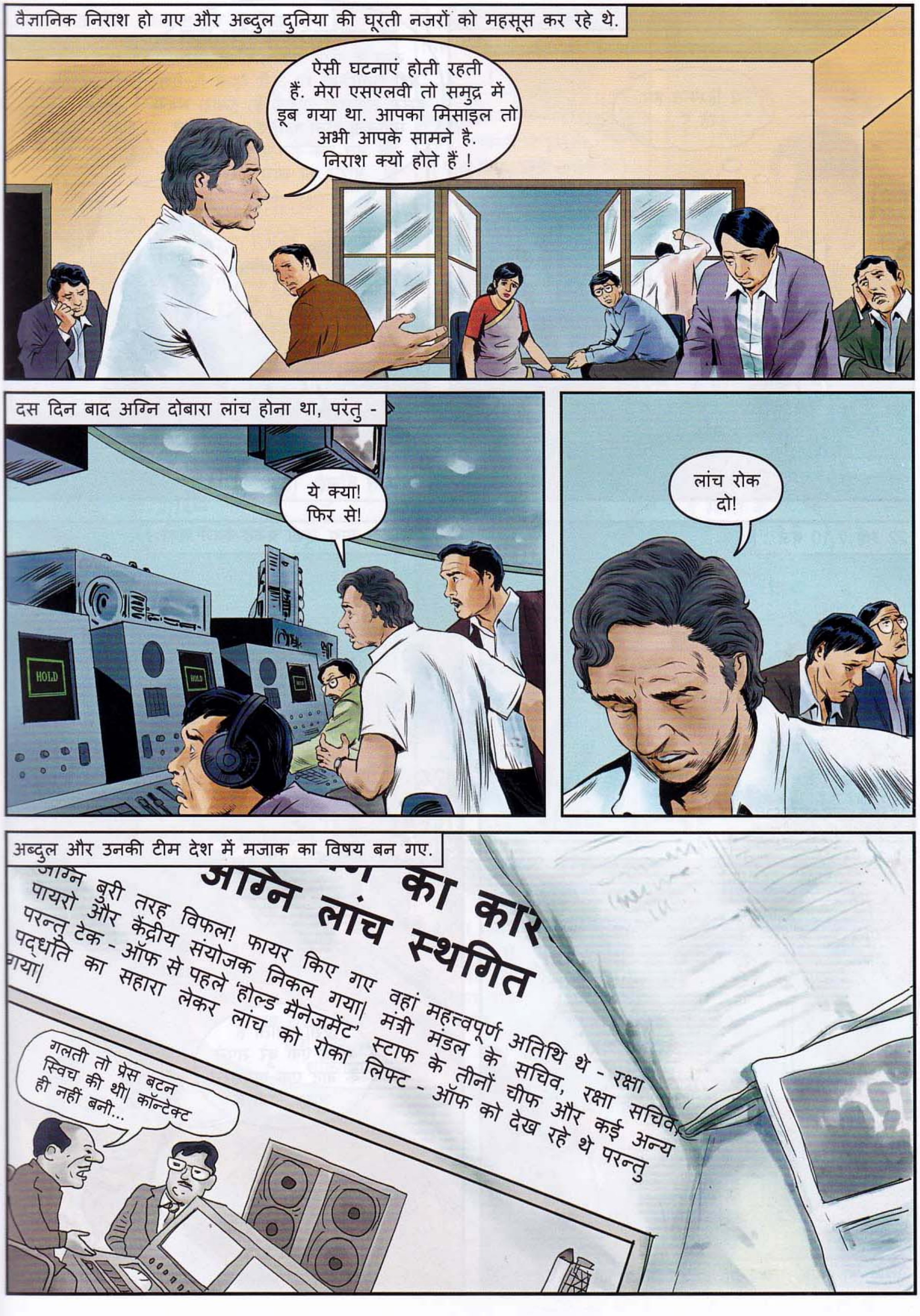
वैज्ञानिक निराश हो गए और अब्दुल दुनिया की घूरती नजरों को महसूस कर रहे थे.
ऐसी घटनाएं होती रहती हैं. मेरा एसएलवी तो समुद्र में डूब गया था. आपका मिसाइल तो अभी आपके सामने है. निराश क्यों होते हैं !
दस दिन बाद अग्नि दोबारा लांच होना था, परंतु -
HOLD
ये क्या! फिर से!
लांच रोक दो!
अब्दुल और उनकी टीम देश में मजाक का विषय बन गए.
अग्नि लांच स्थगित
अग्नि बुरी तरह विफल! फायर किए गए वहां महत्त्वपूर्ण अतिथि थे - रक्षा
पायरो और केंद्रीय संयोजक निकल गया। मंत्री मंडल के सचिव, रक्षा सचिव,
परन्तु टेक - ऑफ से पहले 'होल्ड मैनेजमेंट' स्टाफ के तीनों चीफ और कई अन्य
पद्धति का सहारा लेकर लांच को रोका लिफ्ट - ऑफ को देख रहे थे परन्तु
गया।
गलती तो प्रेस बटन स्विच की थी। कॉन्टेक्ट ही नहीं बनी...

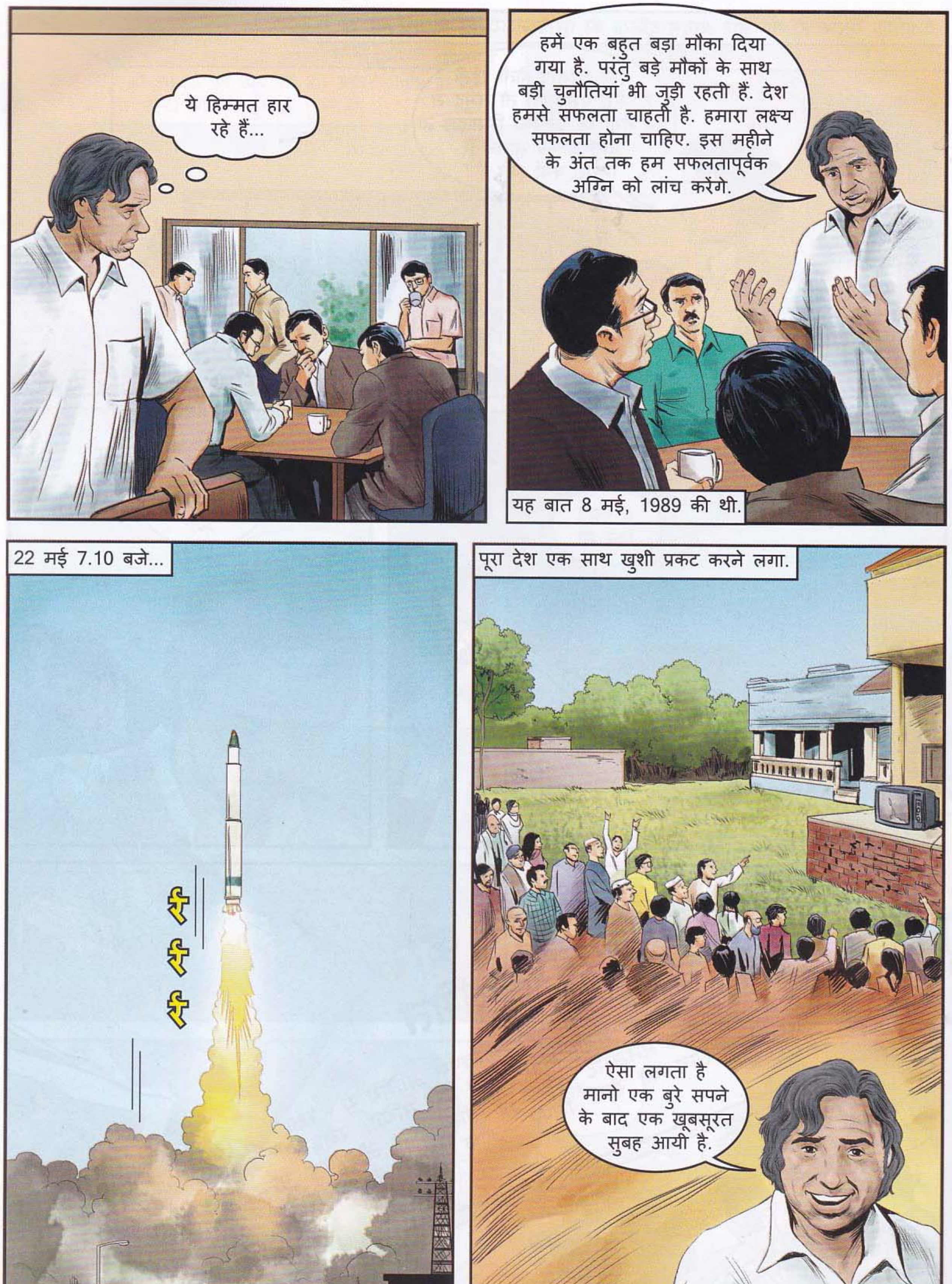
ये हिम्मत हार रहे हैं...
हमें एक बहुत बड़ा मौका दिया गया है. परंतु बड़े मौकों के साथ बड़ी चुनौतियां भी जुड़ी रहती हैं. देश हमसे सफलता चाहती है. हमारा लक्ष्य सफलता होना चाहिए. इस महीने के अंत तक हम सफलतापूर्वक अग्नि को लांच करेंगे.
यह बात 8 मई, 1989 की थी.
22 मई 7.10 बजे...
र्र
र्र
र्र
अग्नि का भव्य लांच हुआ.
पूरा देश एक साथ खुशी प्रकट करने लगा.
ऐसा लगता है मानो एक बुरे सपने के बाद एक खूबसूरत सुबह आयी है.

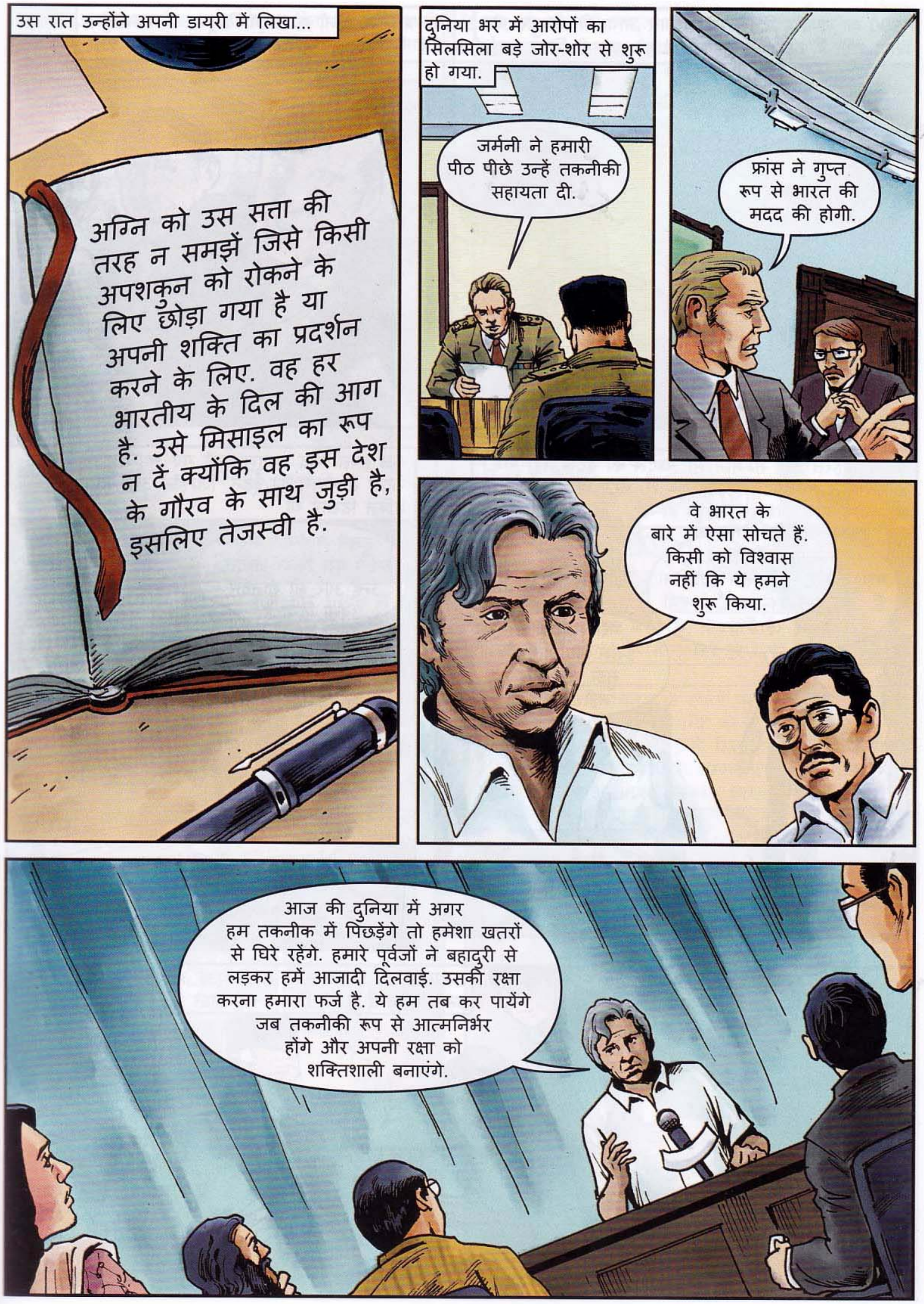
उस रात उन्होंने अपनी डायरी में लिखा...
अग्नि को उस सत्ता की तरह न समझें जिसे किसी अपशकुन को रोकने के लिए छोड़ा गया है या अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए. वह हर भारतीय के दिल की आग है. उसे मिसाइल का रूप न दें क्योंकि वह इस देश के गौरव के साथ जुड़ी है, इसलिए तेजस्वी है.
दुनिया भर में आरोपों का सिलसिला बड़े जोर-शोर से शुरू हो गया.
जर्मनी ने हमारी पीठ पीछे उन्हें तकनीकी सहायता दी.
फ्रांस ने गुप्त रूप से भारत की मदद की होगी.
वे भारत के बारे में ऐसा सोचते हैं. किसी को विश्वास नहीं कि ये हमने शुरू किया.
आज की दुनिया में अगर हम तकनीक में पिछड़ेंगे तो हमेशा खतरों से घिरे रहेंगे. हमारे पूर्वजों ने बहादुरी से लड़कर हमें आजादी दिलवाई. उसकी रक्षा करना हमारा फर्ज है. ये हम तब कर पायेंगे जब तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर होंगे और अपनी रक्षा को शक्तिशाली बनाएंगे.

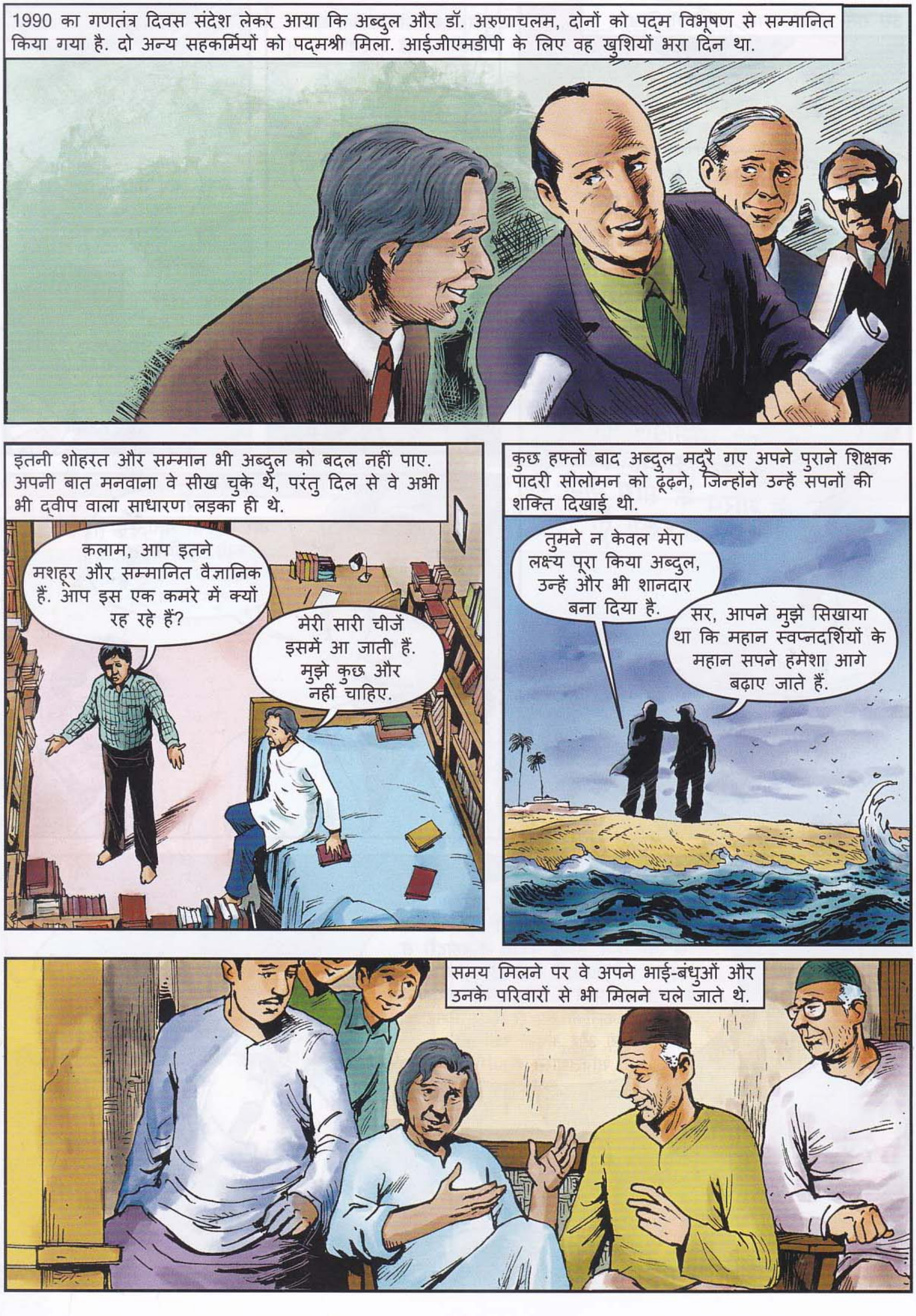
1990 का गणतंत्र दिवस संदेश लेकर आया कि अब्दुल और डॉ. अरुणाचलम, दोनों को पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया है. दो अन्य सहकर्मियों को पद्मश्री मिला. आईजीएमडीपी के लिए वह खुशियों भरा दिन था.
इतनी शोहरत और सम्मान भी अब्दुल को बदल नहीं पाए. अपनी बात मनवाना वे सीख चुके थे, परंतु दिल से वे अभी भी द्वीप वाला साधारण लड़का ही थे.
कलाम, आप इतने मशहूर और सम्मानित वैज्ञानिक हैं. आप इस एक कमरे में क्यों रह रहे हैं?
मेरी सारी चीजें इसमें आ जाती हैं. मुझे कुछ और नहीं चाहिए.
कुछ हफ्तों बाद अब्दुल मदुरै गए अपने पुराने शिक्षक पादरी सोलोमन को ढूंढ़ने, जिन्होंने उन्हें सपनों की शक्ति दिखाई थी.
तुमने न केवल मेरा लक्ष्य पूरा किया अब्दुल, उन्हें और भी शानदार बना दिया है.
सर, आपने मुझे सिखाया था कि महान स्वप्नदर्शियों के महान सपने हमेशा आगे बढ़ाए जाते हैं.
समय मिलने पर वे अपने भाई-बंधुओं और उनके परिवारों से भी मिलने चले जाते थे.

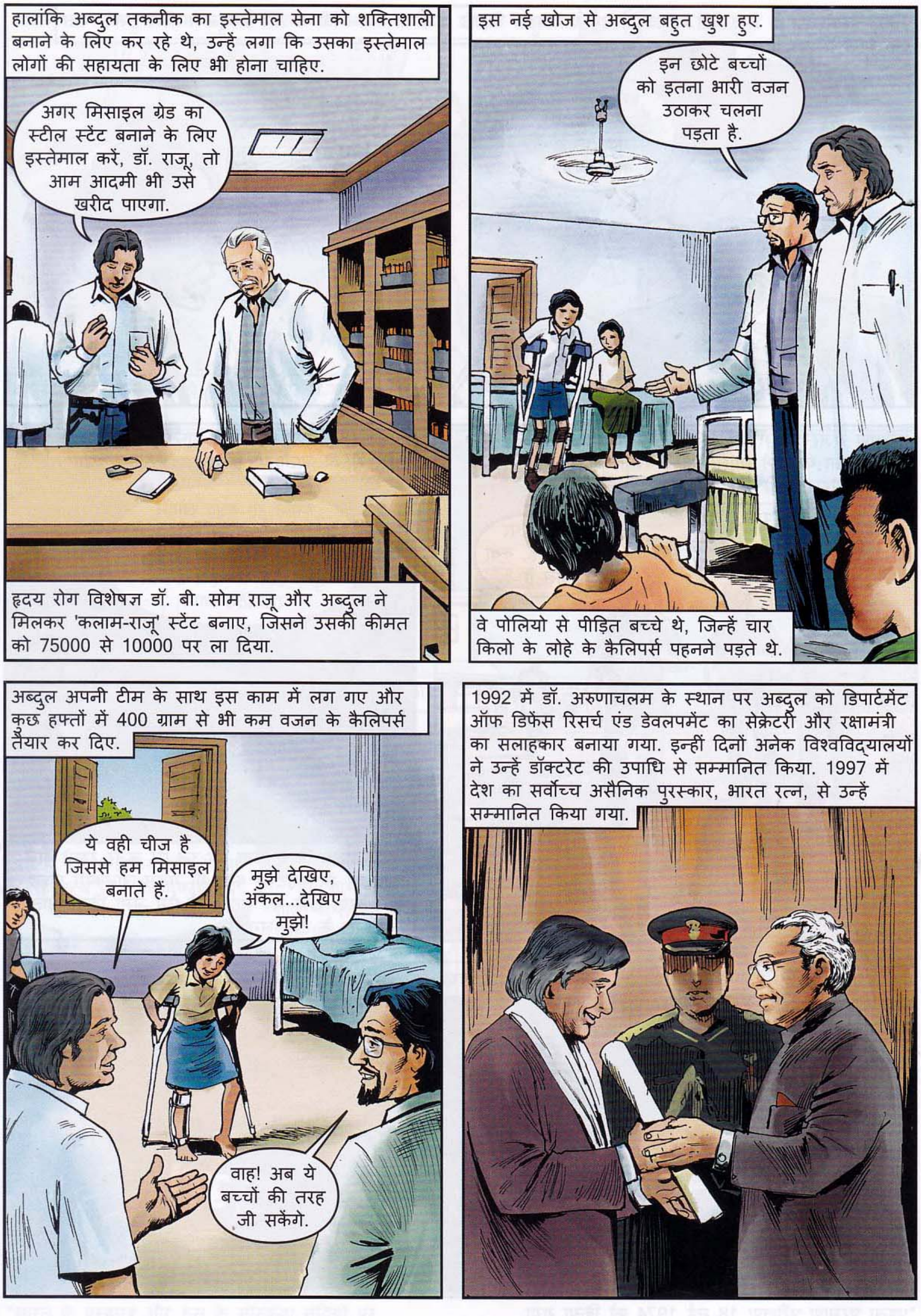
हालांकि अब्दुल तकनीक का इस्तेमाल सेना को शक्तिशाली बनाने के लिए कर रहे थे, उन्हें लगा कि उसका इस्तेमाल लोगों की सहायता के लिए भी होना चाहिए.
अगर मिसाइल ग्रेड का स्टील स्टेंट बनाने के लिए इस्तेमाल करें, डॉ. राजू, तो आम आदमी भी उसे खरीद पाएगा.
हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. बी. सोम राजू और अब्दुल ने मिलकर 'कलाम-राजू' स्टेंट बनाए, जिसने उसकी कीमत को 75000 से 10000 पर ला दिया.
इस नई खोज से अब्दुल बहुत खुश हुए.
इन छोटे बच्चों को इतना भारी वजन उठाकर चलना पड़ता है.
वे पोलियो से पीड़ित बच्चे थे, जिन्हें चार किलो के लोहे के कैलिपर्स पहनने पड़ते थे.
अब्दुल अपनी टीम के साथ इस काम में लग गए और कुछ हफ्तों में 400 ग्राम से भी कम वजन के कैलिपर्स तैयार कर दिए.
ये वही चीज है जिससे हम मिसाइल बनाते हैं.
मुझे देखिए, अंकल...देखिए मुझे!
वाह! अब ये बच्चों की तरह जी सकेंगे.
1992 में डॉ. अरुणाचलम के स्थान पर अब्दुल को डिपार्टमेंट ऑफ डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट का सेक्रेटरी और रक्षामंत्री का सलाहकार बनाया गया. इन्हीं दिनों अनेक विश्वविद्यालयों ने उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया. 1997 में देश का सर्वोच्च असैनिक पुरस्कार, भारत रत्न, से उन्हें सम्मानित किया गया.

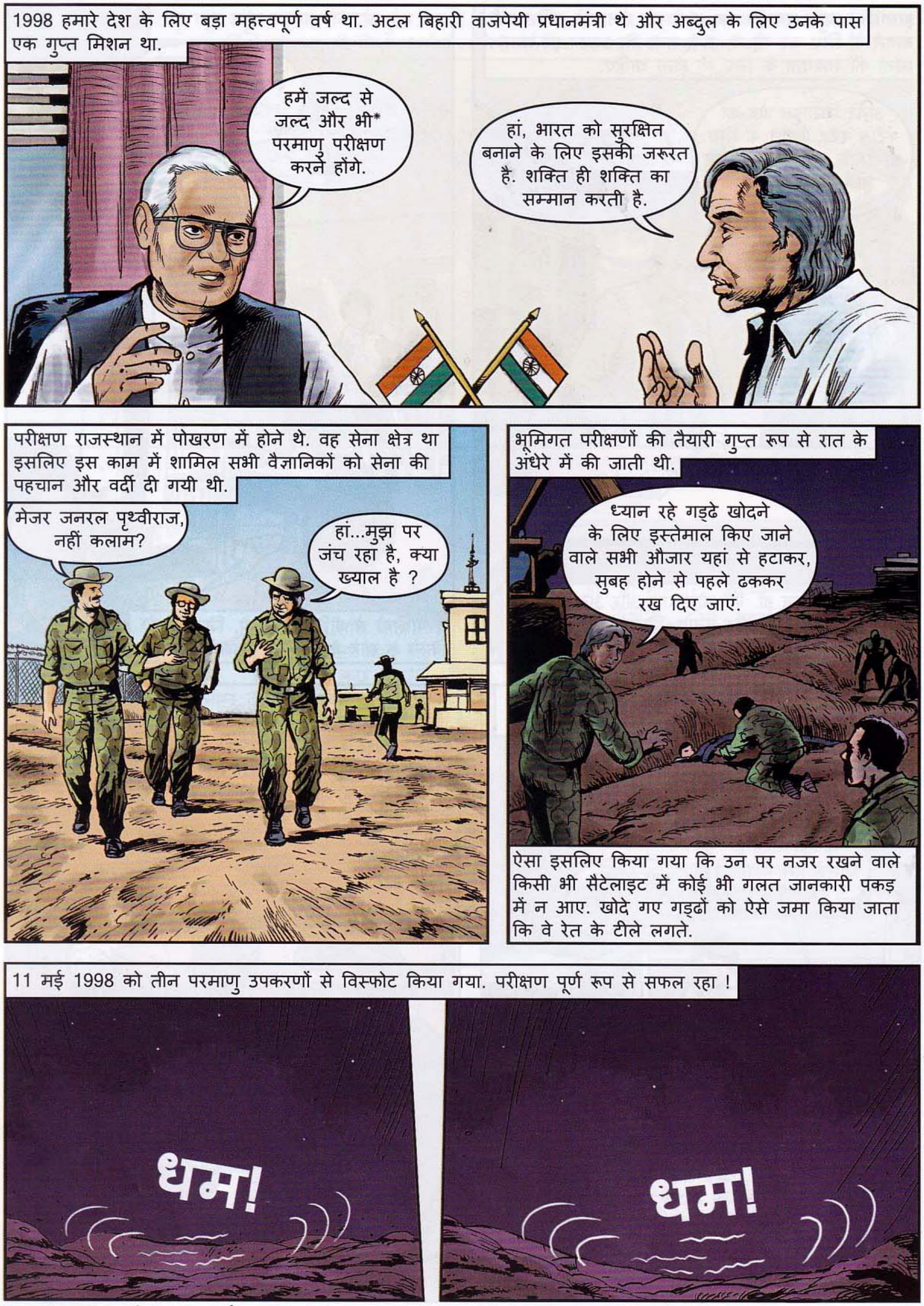

*पहला परमाणु परीक्षण 18 मई 1974 को किया गया, जब इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थीं.

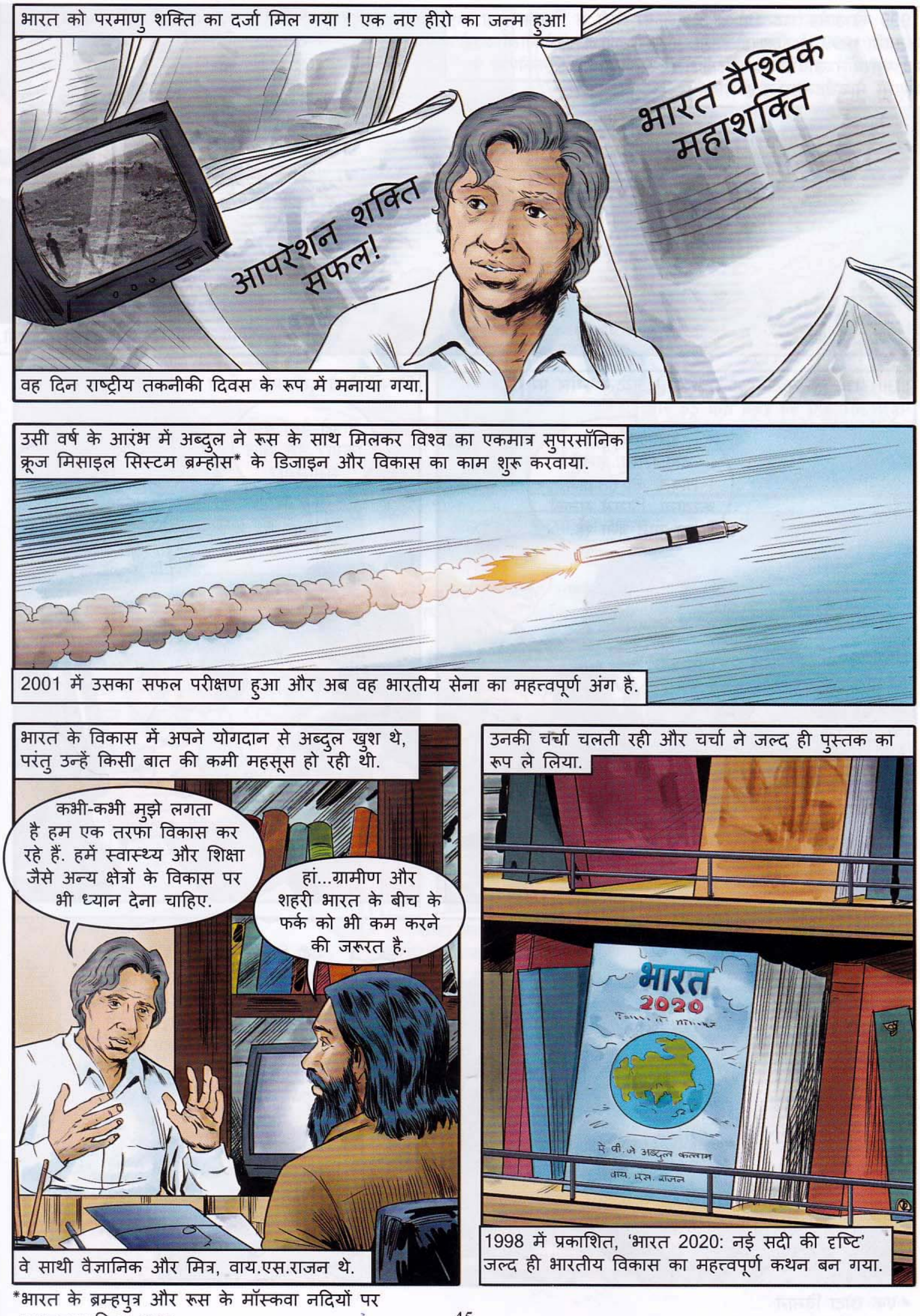

*भारत के ब्रम्हपुत्र और रूस के मॉस्कवा नदियों पर नामकरण किया गया.

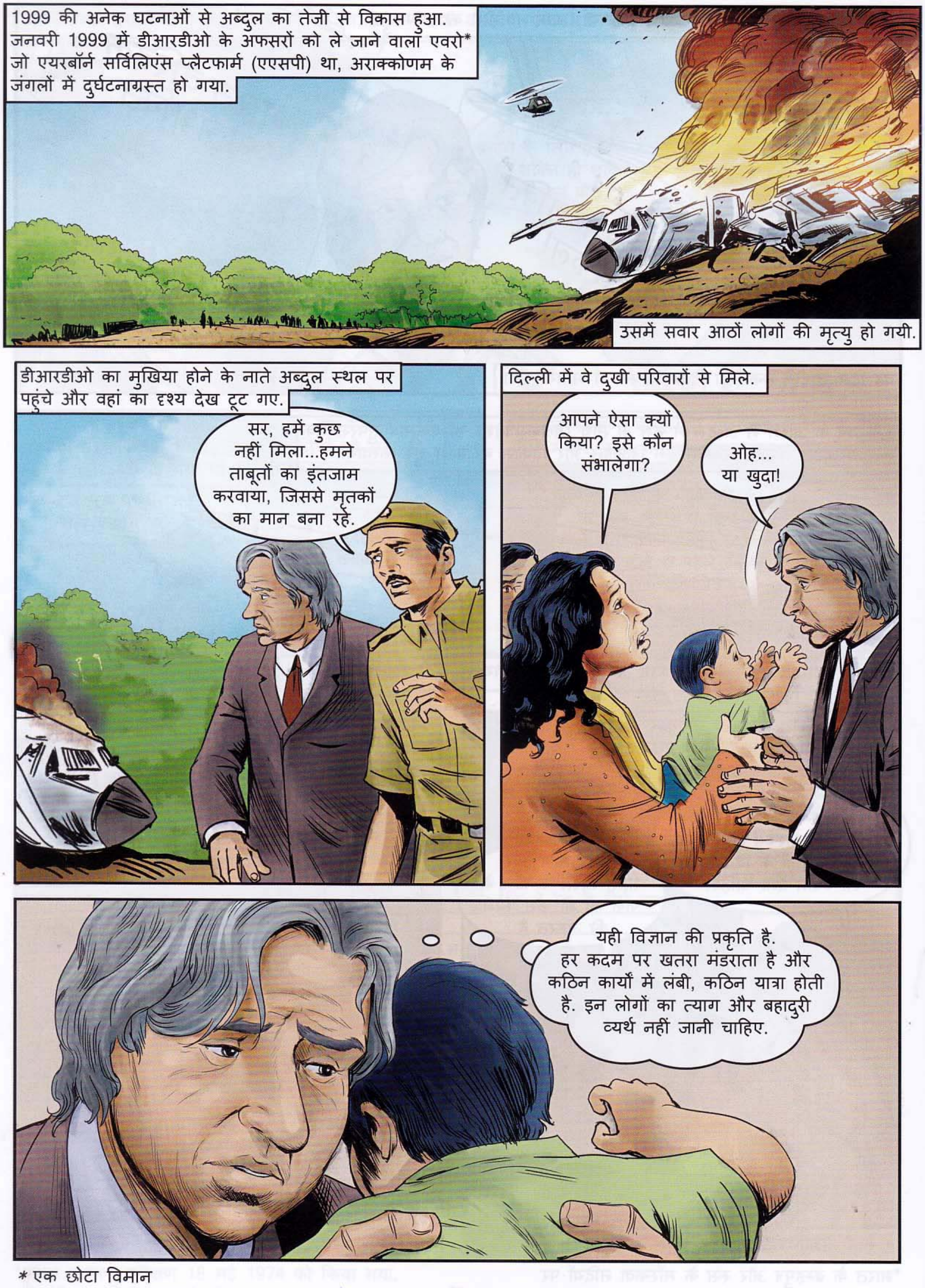
1999 की अनेक घटनाओं से अब्दुल का तेजी से विकास हुआ. जनवरी 1999 में डीआरडीओ के अफसरों को ले जाने वाला एवरो* जो एयरबॉर्न सर्विलिएंस प्लैटफार्म (एएसपी) था, अराक्कोणम के जंगलों में दुर्घटनाग्रस्त हो गया.
उसमें सवार आठों लोगों की मृत्यु हो गयी.
डीआरडीओ का मुखिया होने के नाते अब्दुल स्थल पर पहुंचे और वहां का दृश्य देख टूट गए.
सर, हमें कुछ नहीं मिला...हमने ताबूतों का इंतजाम करवाया, जिससे मृतकों का मान बना रहे.
दिल्ली में वे दुखी परिवारों से मिले.
आपने ऐसा क्यों किया? इसे कौन संभालेगा?
ओह... या खुदा!
यही विज्ञान की प्रकृति है. हर कदम पर खतरा मंडराता है और कठिन कार्यों में लंबी, कठिन यात्रा होती है. इन लोगों का त्याग और बहादुरी व्यर्थ नहीं जानी चाहिए.

* एक छोटा विमान

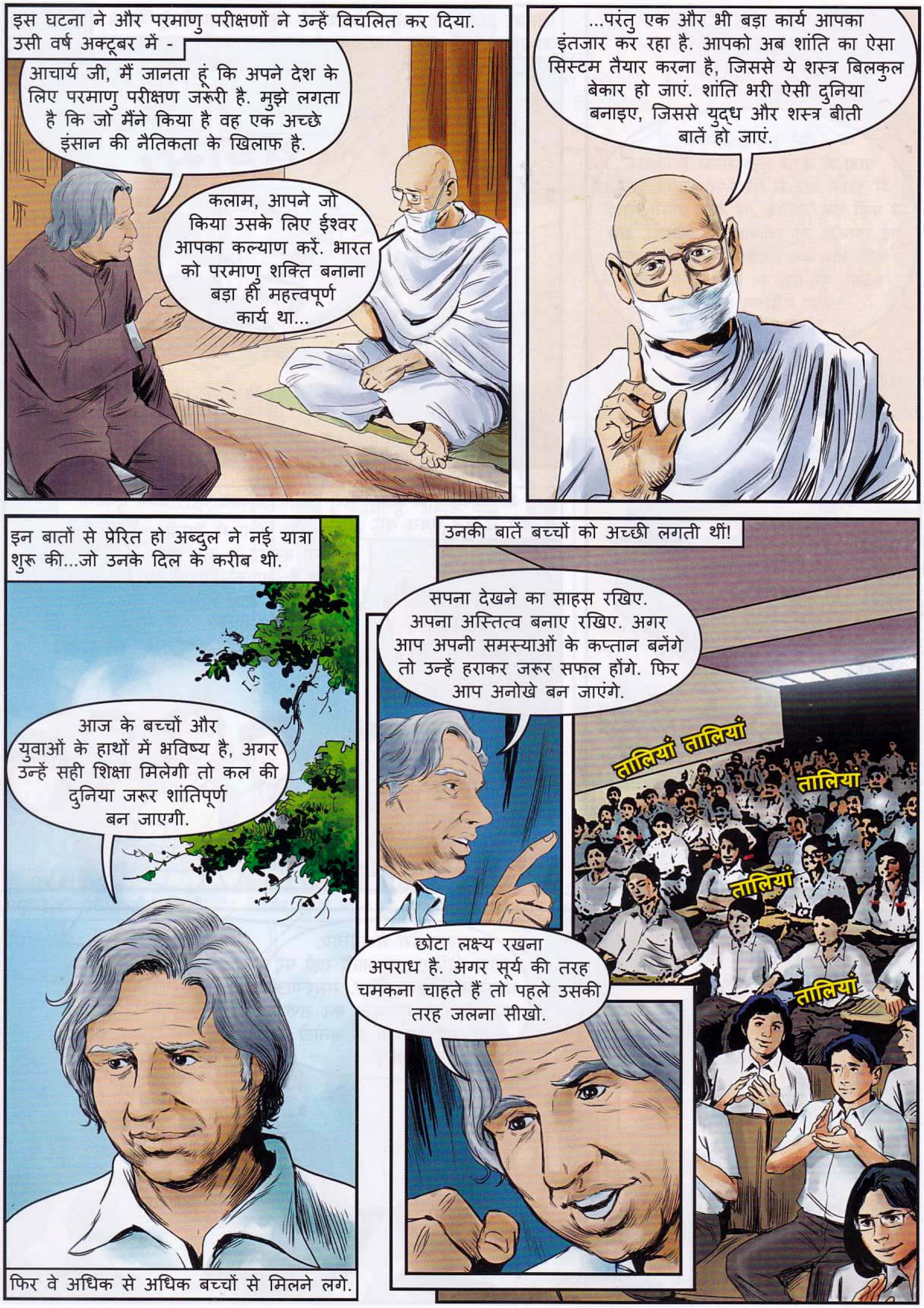
इस घटना ने और परमाणु परीक्षणों ने उन्हें विचलित कर दिया. उसी वर्ष अक्टूबर में -
आचार्य जी, मैं जानता हूं कि अपने देश के लिए परमाणु परीक्षण जरूरी है. मुझे लगता है कि जो मैंने किया है वह एक अच्छे इंसान की नैतिकता के खिलाफ है.
कलाम, आपने जो किया उसके लिए ईश्वर आपका कल्याण करें. भारत को परमाणु शक्ति बनाना बड़ा ही महत्त्वपूर्ण कार्य था...
...परंतु एक और भी बड़ा कार्य आपका इंतजार कर रहा है. आपको अब शांति का ऐसा सिस्टम तैयार करना है, जिससे ये शस्त्र बिलकुल बेकार हो जाएं. शांति भरी ऐसी दुनिया बनाइए, जिससे युद्ध और शस्त्र बीती बातें हो जाएं.
इन बातों से प्रेरित हो अब्दुल ने नई यात्रा शुरू की...जो उनके दिल के करीब थी.
आज के बच्चों और युवाओं के हाथों में भविष्य है, अगर उन्हें सही शिक्षा मिलेगी तो कल की दुनिया जरूर शांतिपूर्ण बन जाएगी.
फिर वे अधिक से अधिक बच्चों से मिलने लगे.
उनकी बातें बच्चों को अच्छी लगती थीं!
सपना देखने का साहस रखिए. अपना अस्तित्व बनाए रखिए. अगर आप अपनी समस्याओं के कप्तान बनेंगे तो उन्हें हराकर जरूर सफल होंगे. फिर आप अनोखे बन जाएंगे.
तालियां तालियां
तालियां
तालियां
तालियां
छोटा लक्ष्य रखना अपराध है. अगर सूर्य की तरह चमकना चाहते हैं तो पहले उसकी तरह जलना सीखो.

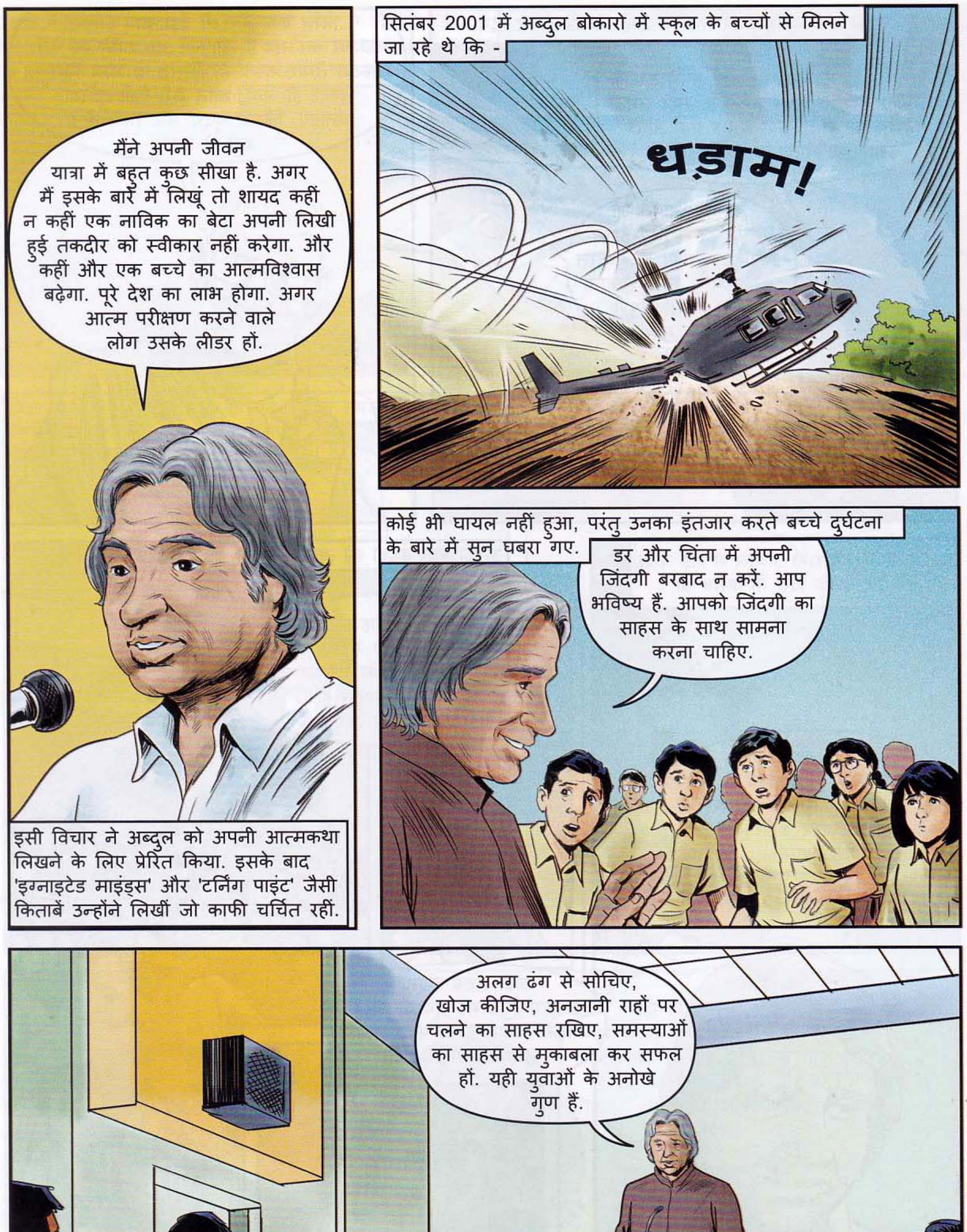
मैंने अपनी जीवन यात्रा में बहुत कुछ सीखा है. अगर मैं इसके बारे में लिखूं तो शायद कहीं न कहीं एक नाविक का बेटा अपनी लिखी हुई तकदीर को स्वीकार नहीं करेगा. और कहीं और एक बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ेगा. पूरे देश का लाभ होगा. अगर आत्म परीक्षण करने वाले लोग उसके लीडर हों.
इसी विचार ने अब्दुल को अपनी आत्मकथा लिखने के लिए प्रेरित किया. इसके बाद 'इग्नाइटेड माइंड्स' और 'टर्निंग पाइंट' जैसी किताबें उन्होंने लिखीं जो काफी चर्चित रहीं.
सितंबर 2001 में अब्दुल बोकारो में स्कूल के बच्चों से मिलने जा रहे थे कि -
धड़ाम!
कोई भी घायल नहीं हुआ, परंतु उनका इंतजार करते बच्चे दुर्घटना के बारे में सुन घबरा गए.
डर और चिंता में अपनी जिंदगी बरबाद न करें. आप भविष्य हैं. आपको जिंदगी का साहस के साथ सामना करना चाहिए.
अलग ढंग से सोचिए, खोज कीजिए, अनजानी राहों पर चलने का साहस रखिए, समस्याओं का साहस से मुकाबला कर सफल हों. यही युवाओं के अनोखे गुण हैं.

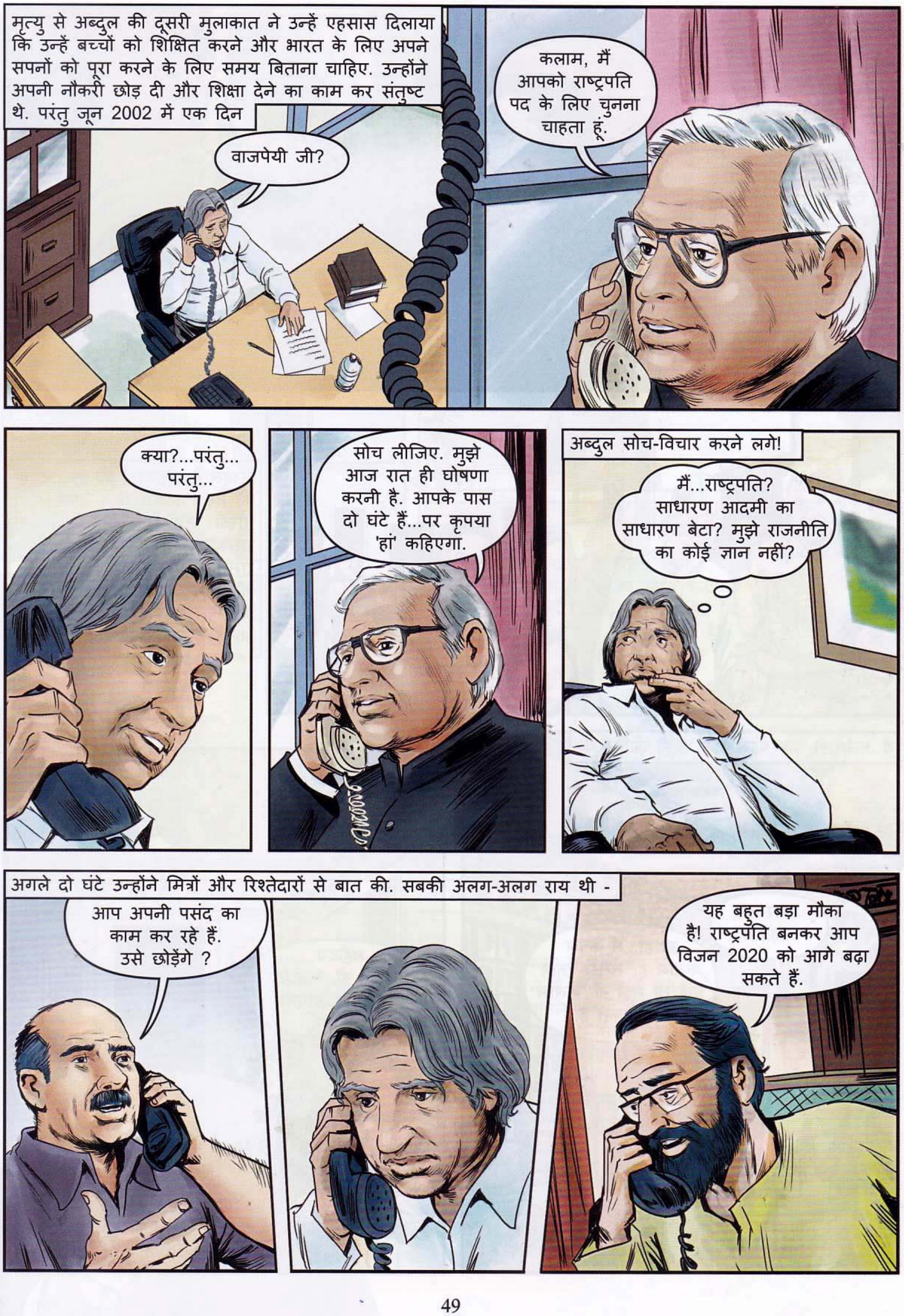
मृत्यु से अब्दुल की दूसरी मुलाकात ने उन्हें एहसास दिलाया कि उन्हें बच्चों को शिक्षित करने और भारत के लिए अपने सपनों को पूरा करने के लिए समय बिताना चाहिए. उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी और शिक्षा देने का काम कर संतुष्ट थे. परंतु जून 2002 में एक दिन
वाजपेयी जी?
कलाम, मैं आपको राष्ट्रपति पद के लिए चुनना चाहता हूं.
क्या?...परंतु... परंतु...
सोच लीजिए. मुझे आज रात ही घोषणा करनी है. आपके पास दो घंटे हैं...पर कृपया 'हां' कहिएगा.
अब्दुल सोच-विचार करने लगे!
मैं...राष्ट्रपति? साधारण आदमी का साधारण बेटा? मुझे राजनीति का कोई ज्ञान नहीं?
अगले दो घंटे उन्होंने मित्रों और रिश्तेदारों से बात की. सबकी अलग-अलग राय थी -
आप अपनी पसंद का काम कर रहे हैं. उसे छोड़ेंगे ?
यह बहुत बड़ा मौका है! राष्ट्रपति बनकर आप विजन 2020 को आगे बढ़ा सकते हैं.

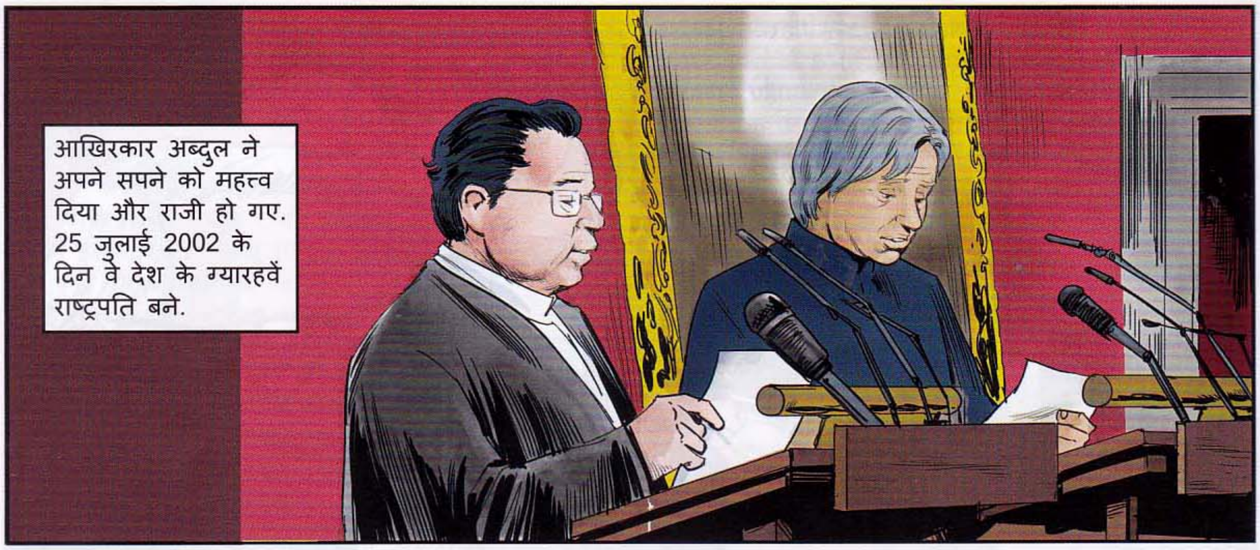

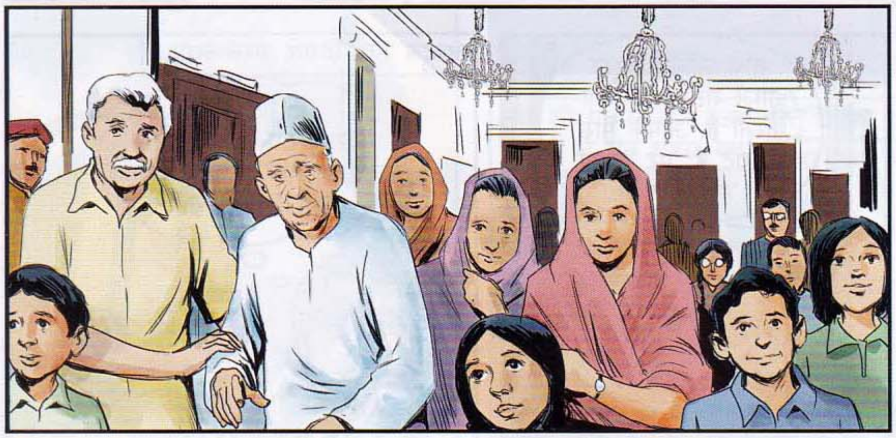

अब्दुल के मेहमानों की सूची उन्हीं की तरह अद्भुत थी ! अपने परिवार और सहकर्मियों के अलावा रामेश्वरम मस्जिद के इमाम, रामनाथस्वामी मंदिर के पुरोहित और रामेश्वरम चर्च के पादरी आमंत्रित थे. भारत के अलग-अलग राज्यों से सौ बच्चे भी थे.

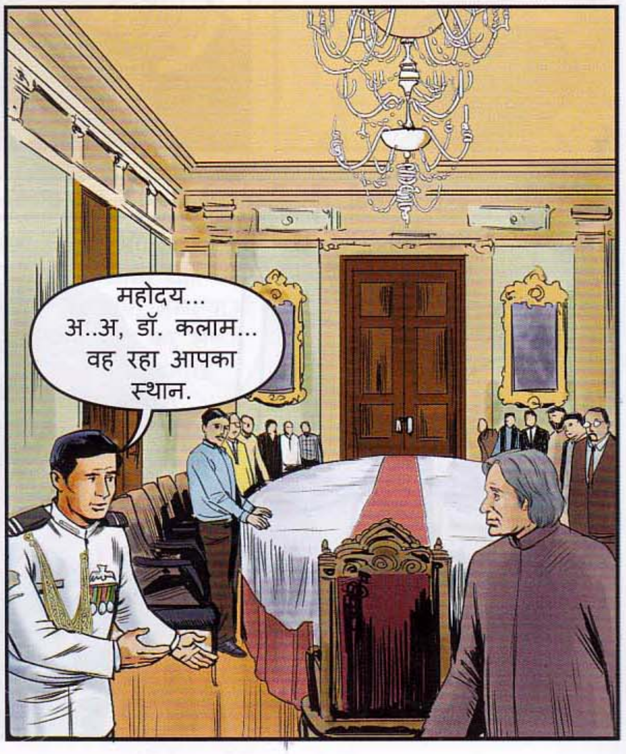

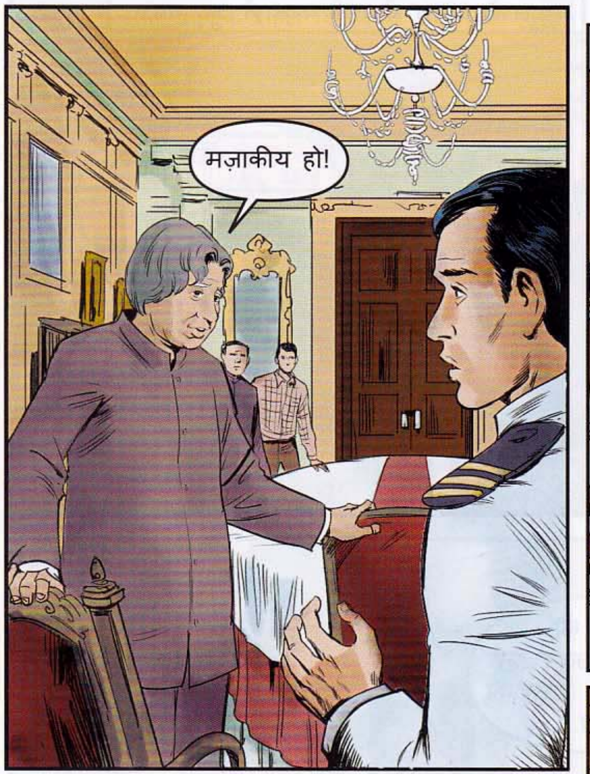
मज़ाकीय हो!

और अपने अंदाज में अब्दुल साधारण कुर्सी लेकर बैठ गए.
??
?!

मुझे पता है, ये महल जैसा है, परंतु मैं इसे लोगों का महल बनाना चाहता हूं. लोगों को लगना चाहिए कि यहां उनकी बात सुनी जा रही है. उन्हें पता चलना चाहिए कि हम सब समान हैं.

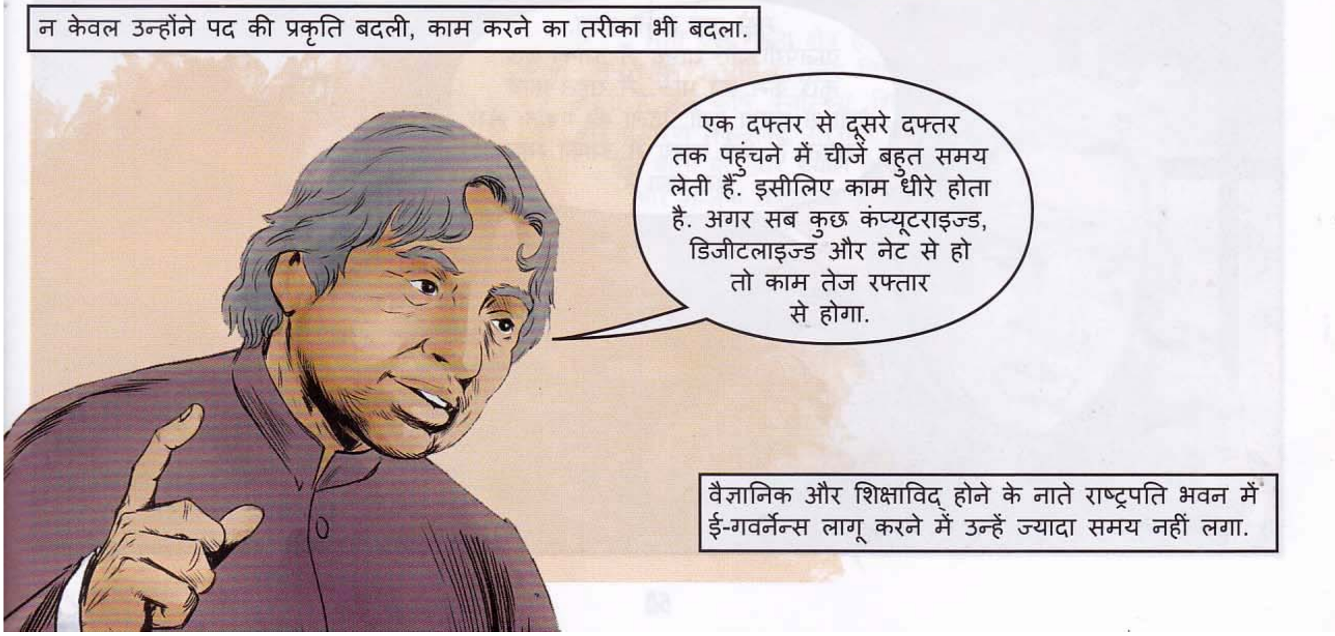
न केवल उन्होंने पद की प्रकृति बदली, काम करने का तरीका भी बदला.
एक दफ्तर से दूसरे दफ्तर तक पहुंचने में चीजें बहुत समय लेती हैं. इसीलिए काम धीरे होता है. अगर सब कुछ कंप्यूटराइज्ड, डिजीटलाइज्ड और नेट से हो तो काम तेज रफ्तार से होगा.
वैज्ञानिक और शिक्षाविद् होने के नाते राष्ट्रपति भवन में ई-गवर्नेन्स लागू करने में उन्हें ज्यादा समय नहीं लगा.

वे रोजाना के काम भी गंभीरता से करते थे.
सर, अलग-अलग राज्यों से संसद सदस्य जल्द ही आपसे मिलने आएंगे.
विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधियों से मिलना है तो तैयारी करनी होगी. औपचारिकता के नाम पर सबका समय क्यों बरबाद करें?
अब्दुल के दफ्तर में सभी काम में जुट गए...
...और हर सभा के लिए विषय तैयार रखा था.
आपके राज्यों की ये मूल क्षमताएं हैं. अगर इन्हें विकसित करें तो पूरे भारत का विकास होगा.
अब्दुल और उनकी टीम ने विस्तृत रिपोर्ट तैयार की कि किस तरह से नेता अपने-अपने राज्यों के विकास के लिए काम कर सकते थे.
जिस वर्ष अब्दुल राष्ट्रपति बने उसी वर्ष देश गुजरात दंगों से सुलग उठा.
मुझे वहां जाना होगा, वाजपेयी जी. शायद मैं उनका दुख कुछ कम कर पाऊं. मैं राहत कार्य तेजी से करवा दूंगा. दिलों की एकता मेरा सपना है. ऐसे समय में उसका महत्त्व बढ़ गया है.

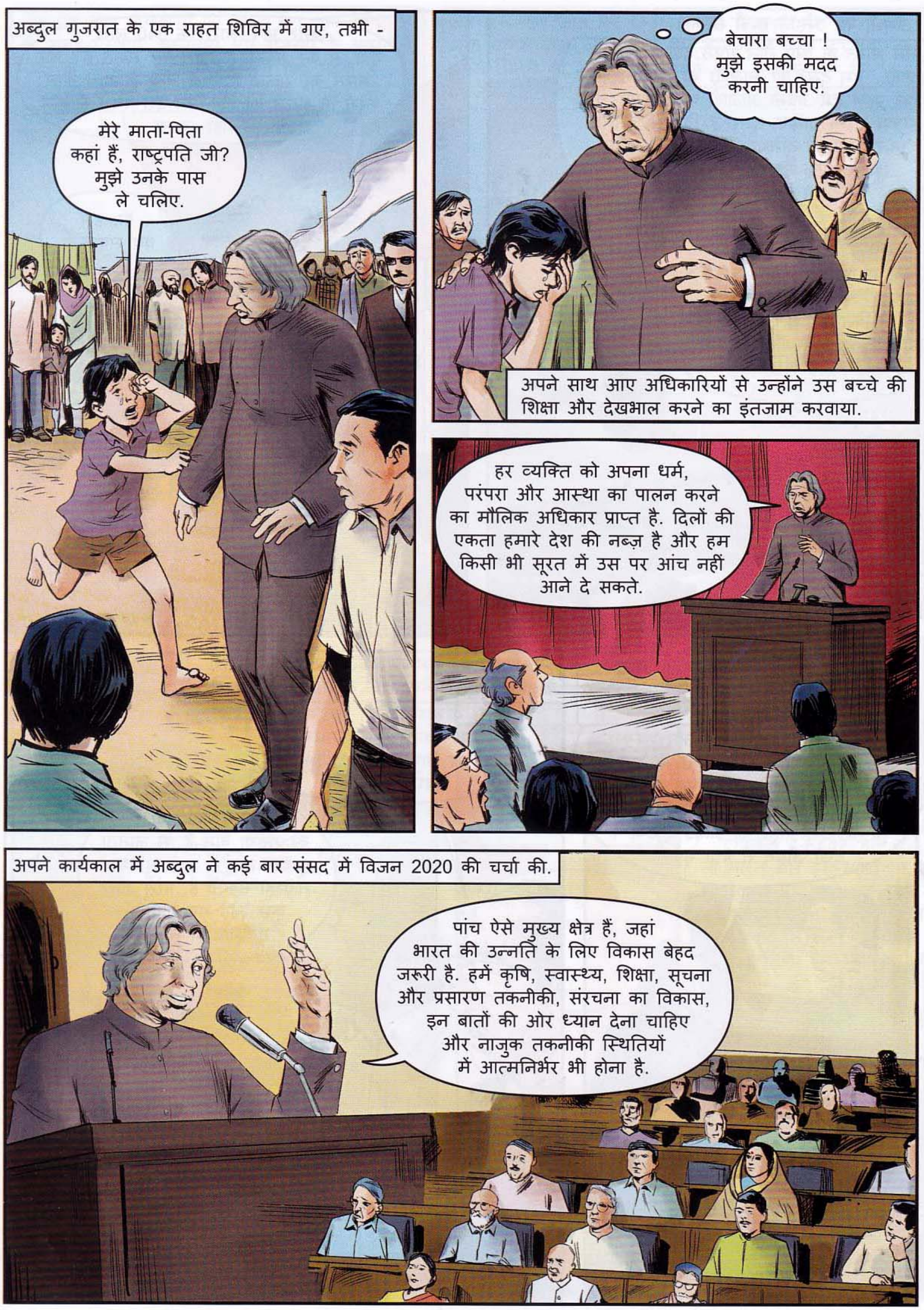
अब्दुल गुजरात के एक राहत शिविर में गए, तभी -
मेरे माता-पिता कहां हैं, राष्ट्रपति जी? मुझे उनके पास ले चलिए.
बेचारा बच्चा ! मुझे इसकी मदद करनी चाहिए.
अपने साथ आए अधिकारियों से उन्होंने उस बच्चे की शिक्षा और देखभाल करने का इंतजाम करवाया.
हर व्यक्ति को अपना धर्म, परंपरा और आस्था का पालन करने का मौलिक अधिकार प्राप्त है. दिलों की एकता हमारे देश की नब्ज़ है और हम किसी भी सूरत में उस पर आंच नहीं आने दे सकते.
अपने कार्यकाल में अब्दुल ने कई बार संसद में विजन 2020 की चर्चा की.
पांच ऐसे मुख्य क्षेत्र हैं, जहां भारत की उन्नति के लिए विकास बेहद जरूरी है. हमें कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, सूचना और प्रसारण तकनीकी, संरचना का विकास, इन बातों की ओर ध्यान देना चाहिए और नाज़ुक तकनीकी स्थितियों में आत्मनिर्भर भी होना है.

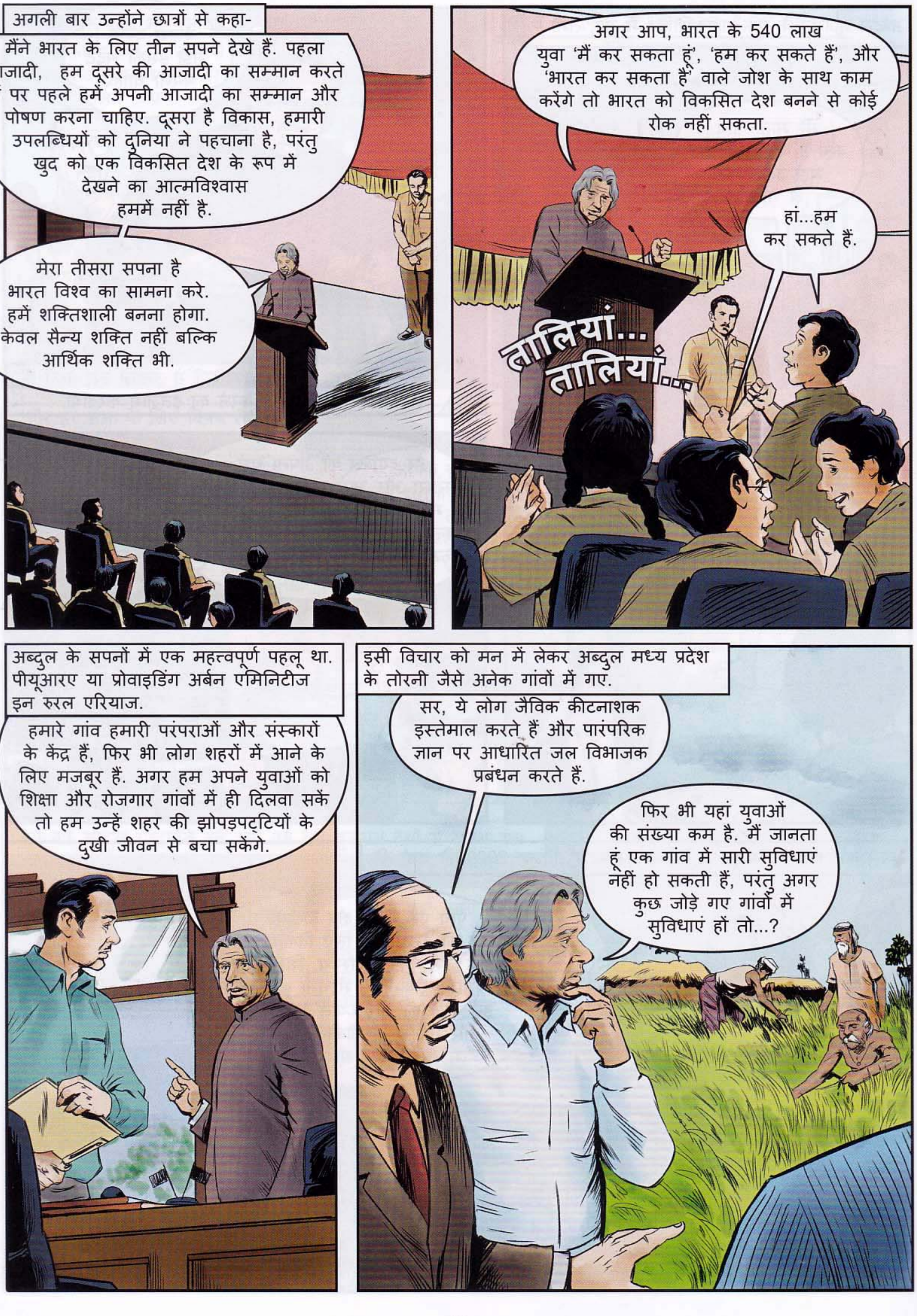
अगली बार उन्होंने छात्रों से कहा-
मैंने भारत के लिए तीन सपने देखे हैं. पहला आजादी, हम दूसरे की आजादी का सम्मान करते हैं पर पहले हमें अपनी आजादी का सम्मान और पोषण करना चाहिए. दूसरा है विकास, हमारी उपलब्धियों को दुनिया ने पहचाना है, परंतु खुद को एक विकसित देश के रूप में देखने का आत्मविश्वास हममें नहीं है.
मेरा तीसरा सपना है भारत विश्व का सामना करे. हमें शक्तिशाली बनना होगा. केवल सैन्य शक्ति नहीं बल्कि आर्थिक शक्ति भी.
अगर आप, भारत के 540 लाख युवा 'मैं कर सकता हूं', 'हम कर सकते हैं', और 'भारत कर सकता है' वाले जोश के साथ काम करेंगे तो भारत को विकसित देश बनने से कोई रोक नहीं सकता.
हां...हम कर सकते हैं.
तालियां... तालियां...
अब्दुल के सपनों में एक महत्त्वपूर्ण पहलू था. पीयूआरए या प्रोवाइडिंग अर्बन एमिनिटीज इन रुरल एरियाज.
हमारे गांव हमारी परंपराओं और संस्कारों के केंद्र हैं, फिर भी लोग शहरों में आने के लिए मजबूर हैं. अगर हम अपने युवाओं को शिक्षा और रोजगार गांवों में ही दिलवा सकें तो हम उन्हें शहर की झोपड़पट्टियों के दुखी जीवन से बचा सकेंगे.
इसी विचार को मन में लेकर अब्दुल मध्य प्रदेश के तोरनी जैसे अनेक गांवों में गए.
सर, ये लोग जैविक कीटनाशक इस्तेमाल करते हैं और पारंपरिक ज्ञान पर आधारित जल विभाजक प्रबंधन करते हैं.
फिर भी यहां युवाओं की संख्या कम है. मैं जानता हूं एक गांव में सारी सुविधाएं नहीं हो सकती हैं, परंतु अगर कुछ जोड़े गए गांवों में सुविधाएं हों तो...?

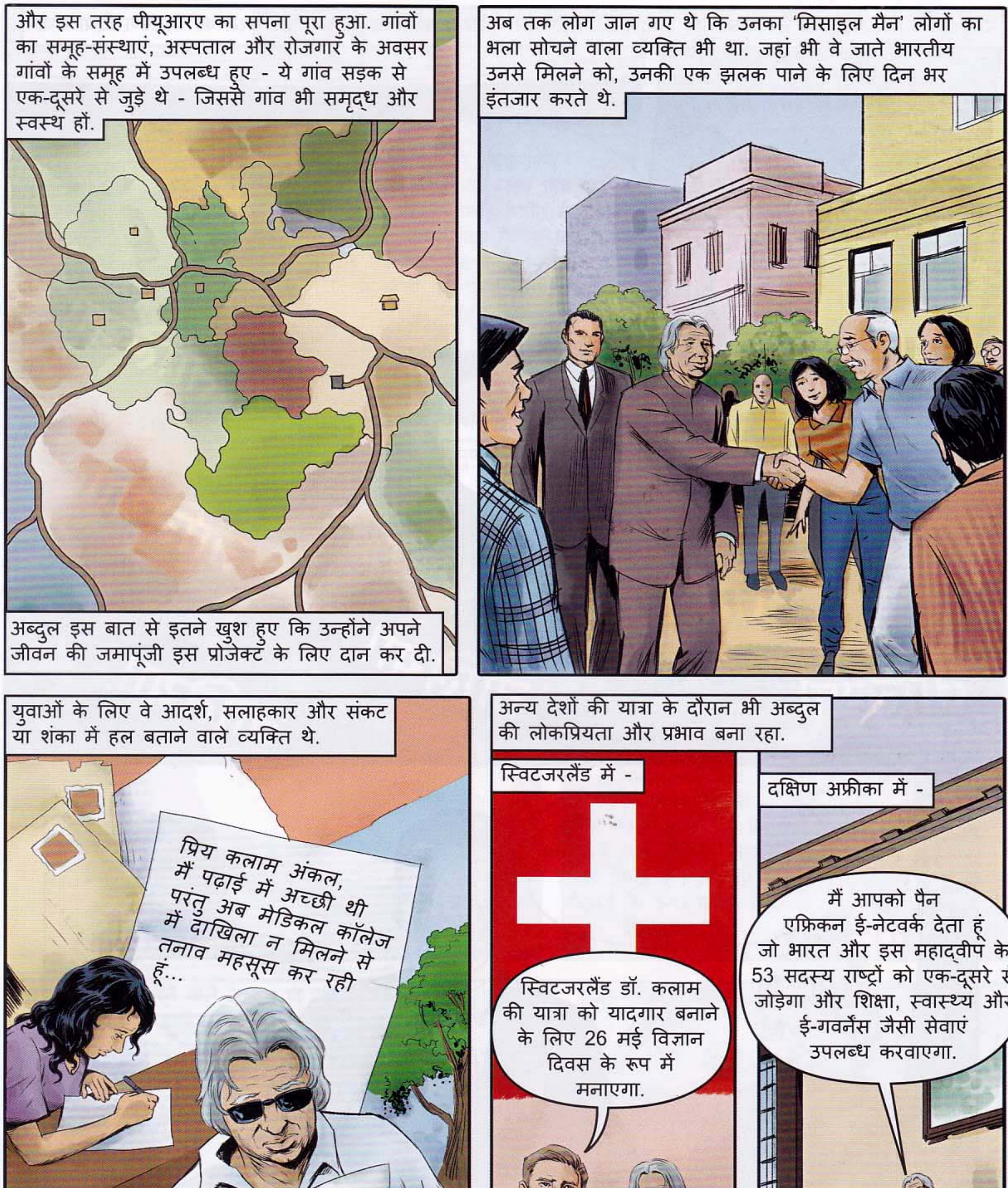
और इस तरह पीयूआरए का सपना पूरा हुआ. गांवों का समूह-संस्थाएं, अस्पताल और रोजगार के अवसर गांवों के समूह में उपलब्ध हुए - ये गांव सड़क से एक-दूसरे से जुड़े थे - जिससे गांव भी समृद्ध और स्वस्थ हों.
अब्दुल इस बात से इतने खुश हुए कि उन्होंने अपने जीवन की जमापूंजी इस प्रोजेक्ट के लिए दान कर दी.
अब तक लोग जान गए थे कि उनका 'मिसाइल मैन' लोगों का भला सोचने वाला व्यक्ति भी था. जहां भी वे जाते भारतीय उनसे मिलने को, उनकी एक झलक पाने के लिए दिन भर इंतजार करते थे.
युवाओं के लिए वे आदर्श, सलाहकार और संकट या शंका में हल बताने वाले व्यक्ति थे.
प्रिय कलाम अंकल, मैं पढ़ाई में अच्छी थी परंतु अब मेडिकल कॉलेज में दाखिला न मिलने से तनाव महसूस कर रही हूं...
विदेशी मीडिया में उनके 'रॉकस्टार' रूप की काफी चर्चा हुई और उन्हें एम टी वी यूथ आइकॉन ऑफ द इयर अवार्ड के लिये दो बार चुना गया था| इस बात से फर्क नहीं पड़ा कि वे 73 वर्ष से भी अधिक उम्र के थे|
अन्य देशों की यात्रा के दौरान भी अब्दुल की लोकप्रियता और प्रभाव बना रहा.
स्विटजरलैंड में -
स्विटजरलैंड डॉ. कलाम की यात्रा को यादगार बनाने के लिए 26 मई विज्ञान दिवस के रूप में मनाएगा.
दक्षिण अफ्रीका में -
मैं आपको पैन एफ्रिकन ई-नेटवर्क देता हूं जो भारत और इस महाद्वीप के 53 सदस्य राष्ट्रों को एक-दूसरे से जोड़ेगा और शिक्षा, स्वास्थ्य और ई-गवर्नेंस जैसी सेवाएं उपलब्ध करवाएगा.

परंतु उनके सिर पर ताज तब सजा जब अब्दुल को यूरोपीयन यूनियन के संसद में संबोधित करने का निमंत्रण दिया गया

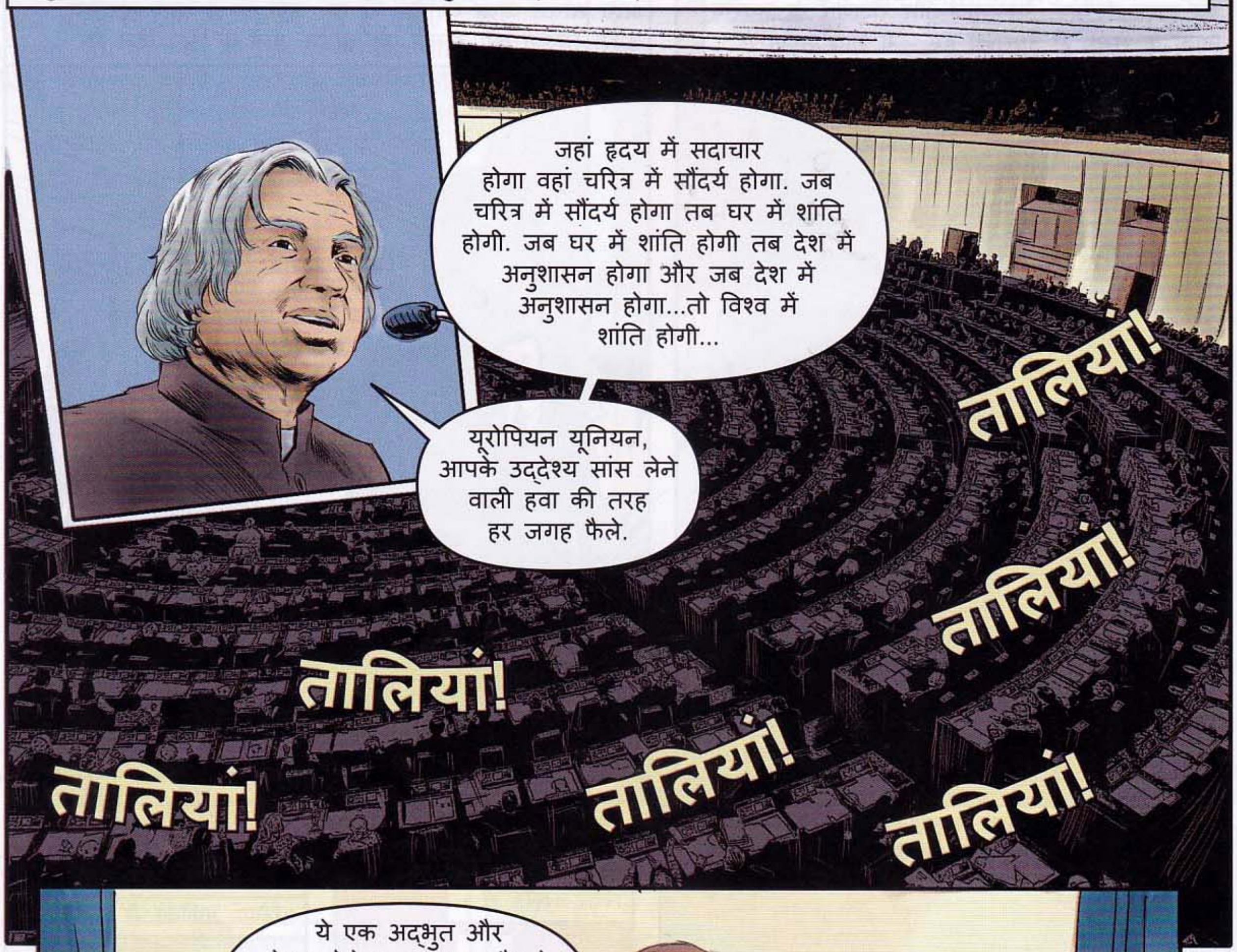

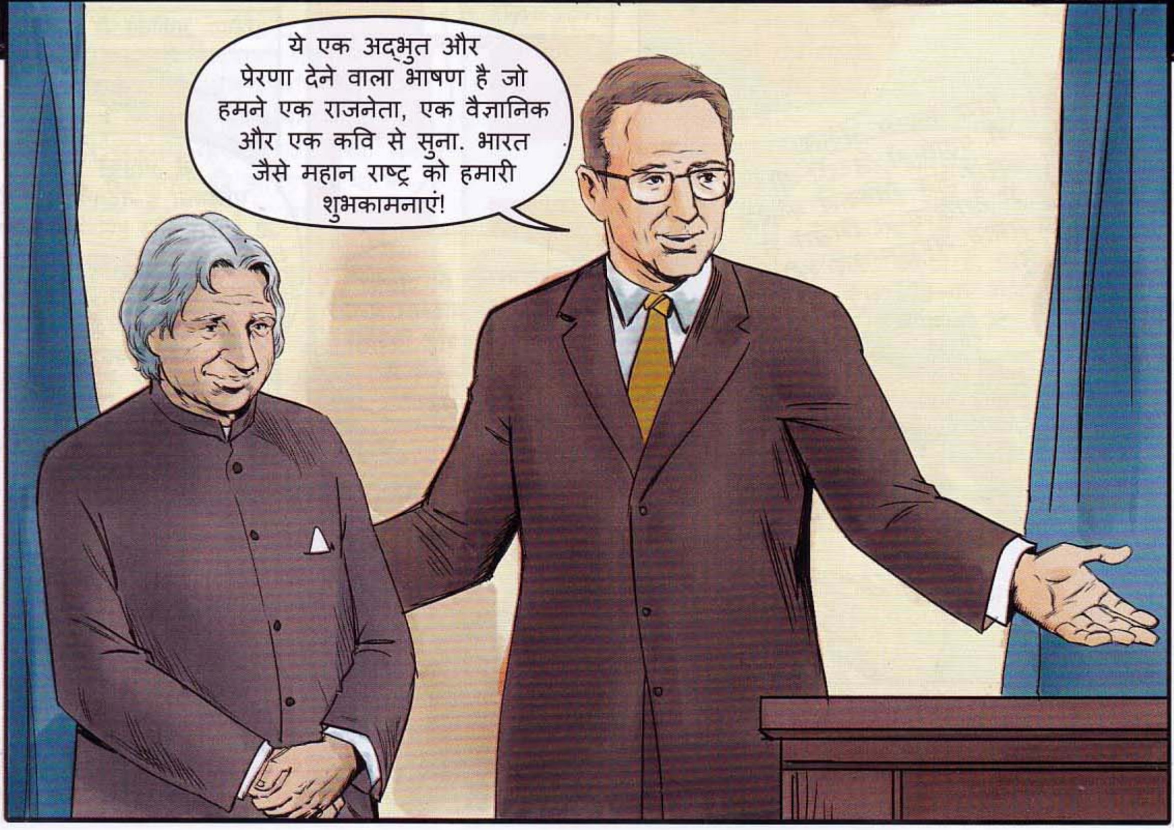

राष्ट्रपति होने के साथ ही अब्दुल तीनों सेनाओं के सुप्रीम कमांडर भी थे. कठिन जगहों पर तैनात सैनिकों से भी वे मिलने जाते थे. वे सियाचीन के कुमार पोस्ट गए और नौसेना की पनडुब्बी, आईएनएस सिंधुरक्षक में भी सवारी की.
परंतु उनका मनचाहा पल जून 2006 में आया, जब वे पुणे के एयरफोर्स बेस गए.
इस सुखोई के मिशन कंप्यूटर और अन्य उपकरण, सभी भारत में ही बने हैं.
बढ़िया! ऐसा ही होना चाहिए भी !
जानते हैं, मैंने कभी आपके जैसा फाइटर पायलेट बनने का सपना देखा था. वह मेरा सबसे बड़ा सपना था.
सर, मैं आपको सिखा सकता हूं. आप मेरे साथ को-पायलेट की तरह उड़ान भरिए.
चुनौतियों से न डरने वाले अब्दुल ने प्रशिक्षण लिया और अगले दिन...

...वे ध्वनि की गति से भी दुगुनी गति से उड़ान भर रहे थे.
ये आधा घंटा मेरे जीवन का सबसे रोमांचक समय था !
हा हा... राष्ट्रपति का मन बच्चों जैसा है !
न केवल अब्दुल ने अपने बचपन का सपना पूरा किया बल्कि एक रिकॉर्ड भी बनाया. फाइटर एयरक्राफ्ट उड़ाने वाले वे सबसे ज्यादा उम्र के भारतीय थे.
व्यस्त रहने के बावजूद वे अपने परिवार से मिलने का समय निकाल ही लेते थे. एक बार पांच दिनों के लिए उनके परिवार के 50 सदस्य उनसे मिलने आए.
उनके रहने का किराया और भोजन का खर्च मैं दूंगा.
परंतु सर, ये सारा खर्च सरकार की तरफ से किया जाएगा.
अब्दुल ने एक न सुनी और सारा पैसा खुद भरा.

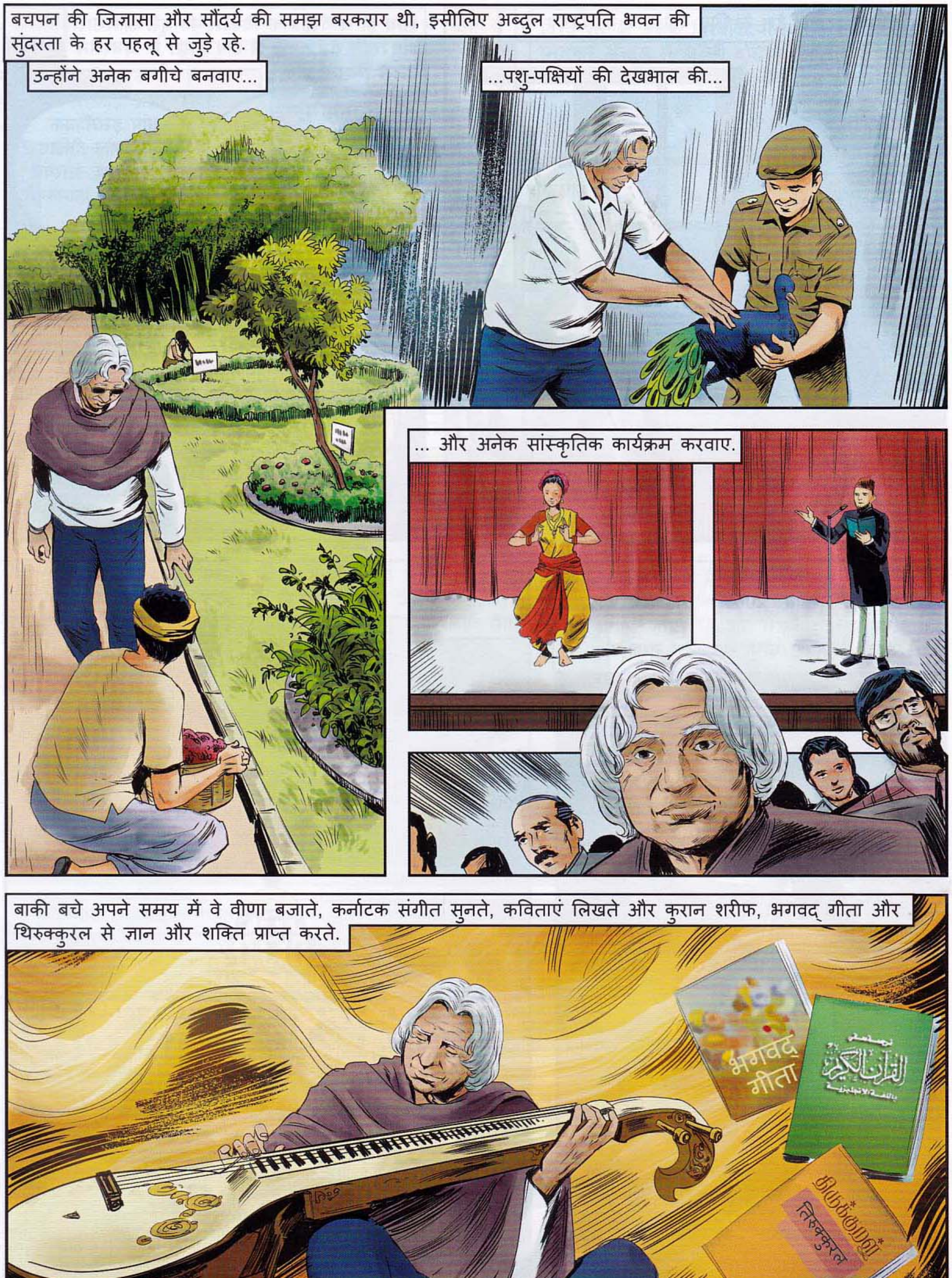
बचपन की जिज्ञासा और सौंदर्य की समझ बरकरार थी, इसीलिए अब्दुल राष्ट्रपति भवन की सुंदरता के हर पहलू से जुड़े रहे.
उन्होंने अनेक बगीचे बनवाए...
...पशु-पक्षियों की देखभाल की...
... और अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाए.
बाकी बचे अपने समय में वे वीणा बजाते, कर्नाटक संगीत सुनते, कविताएं लिखते और कुरान शरीफ, भगवद् गीता और थिरुक्कुरल से ज्ञान और शक्ति प्राप्त करते.
भगवद् गीता
तिरुक्कुरल*

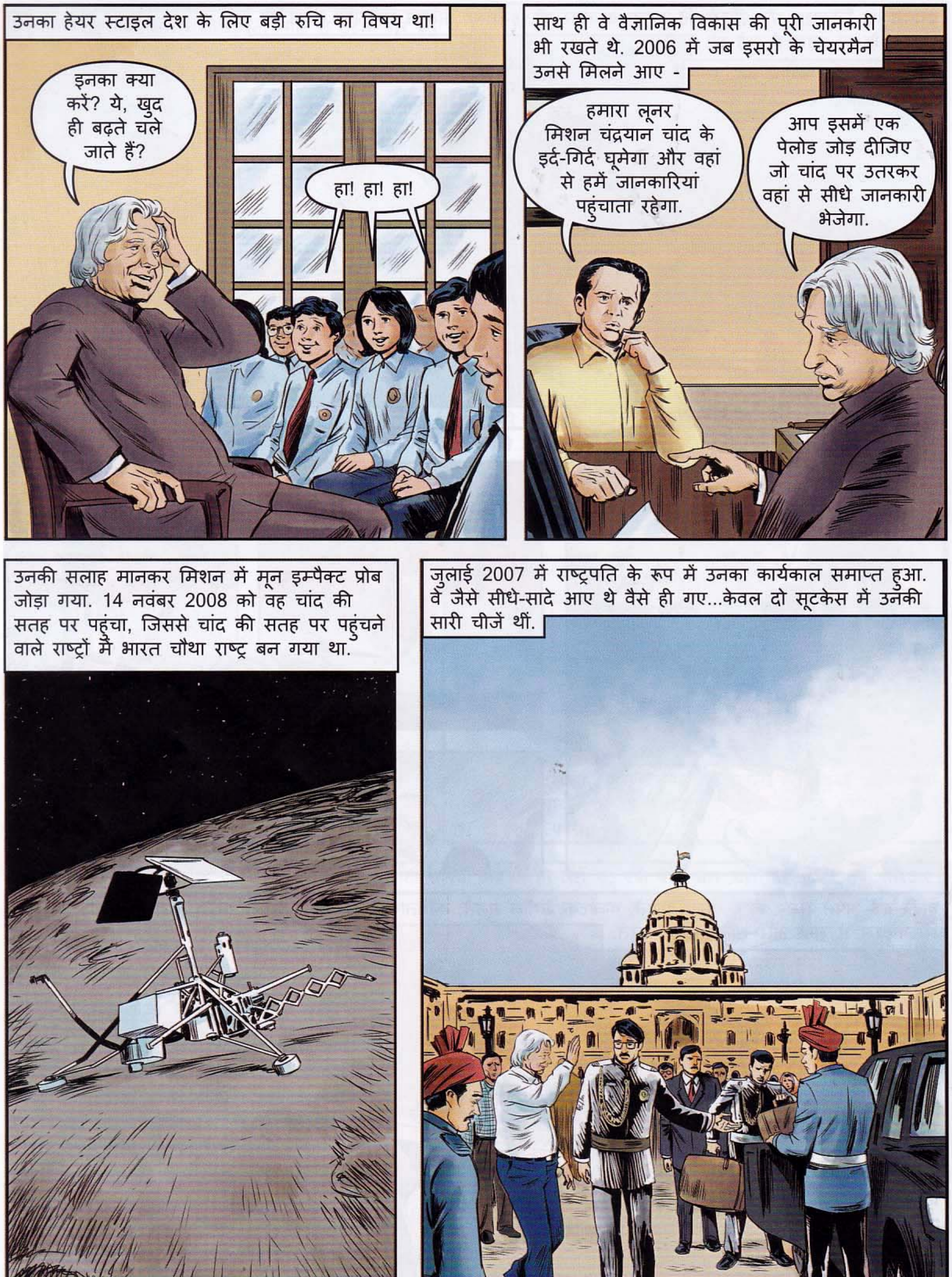
उनका हेयर स्टाइल देश के लिए बड़ी रुचि का विषय था!
इनका क्या करें? ये, खुद ही बढ़ते चले जाते हैं?
हा! हा! हा!
साथ ही वे वैज्ञानिक विकास की पूरी जानकारी भी रखते थे. 2006 में जब इसरो के चेयरमैन उनसे मिलने आए -
हमारा लूनर मिशन चंद्रयान चांद के इर्द-गिर्द घूमेगा और वहां से हमें जानकारियां पहुंचाता रहेगा.
आप इसमें एक पेलोड जोड़ दीजिए जो चांद पर उतरकर वहां से सीधे जानकारी भेजेगा.
उनकी सलाह मानकर मिशन में मून इम्पैक्ट प्रोब जोड़ा गया. 14 नवंबर 2008 को वह चांद की सतह पर पहुंचा, जिससे चांद की सतह पर पहुंचने वाले राष्ट्रों में भारत चौथा राष्ट्र बन गया था.
चांद पर पानी की खोज भी इसी ने सबसे पहले की.
जुलाई 2007 में राष्ट्रपति के रूप में उनका कार्यकाल समाप्त हुआ. वे जैसे सीधे-सादे आए थे वैसे ही गए...केवल दो सूटकेस में उनकी सारी चीजें थीं.

*इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट

कुछ देर बाद वे छात्रों को संबोधित करने मंच पर गए.
आज मैं आपसे पृथ्वी को जीने लायक बनाने की बात करूंगा.
अचानक -
??
धप्प!
पलक झपकते ही वे जा चुके थे. ये ज्ञानी पुरुष, स्नेह से भरे, जो काम उन्हें पसंद था वही करते हुए, दिल का दौरा पड़ने से गुजर गए. अपने मार्गदर्शकों अहमद जलालुद्दीन और डॉ. विक्रम साराभाई की तरह, अब्दुल बिना कुछ कहे चले गए, अपने पीछे शोक से भरे और चकित देश को छोड़ गए.

शिलांग से लेकर दिल्ली और वहां से लेकर रामेश्वरम तक दुखी लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी. रामेश्वरम में उनके अंतिम संस्कार के समय 'जनता के राष्ट्रपति' को अपना अंतिम सम्मान देने के लिए लोग सड़कों पर उमड़ पड़े. वे सच्चे मुसलमान थे परंतु सभी धर्मों का समान आदर करने वाले, ज्ञान के भंडार, शाश्वत नेता, मानवतावादी और सच्चे भारतीय थे.

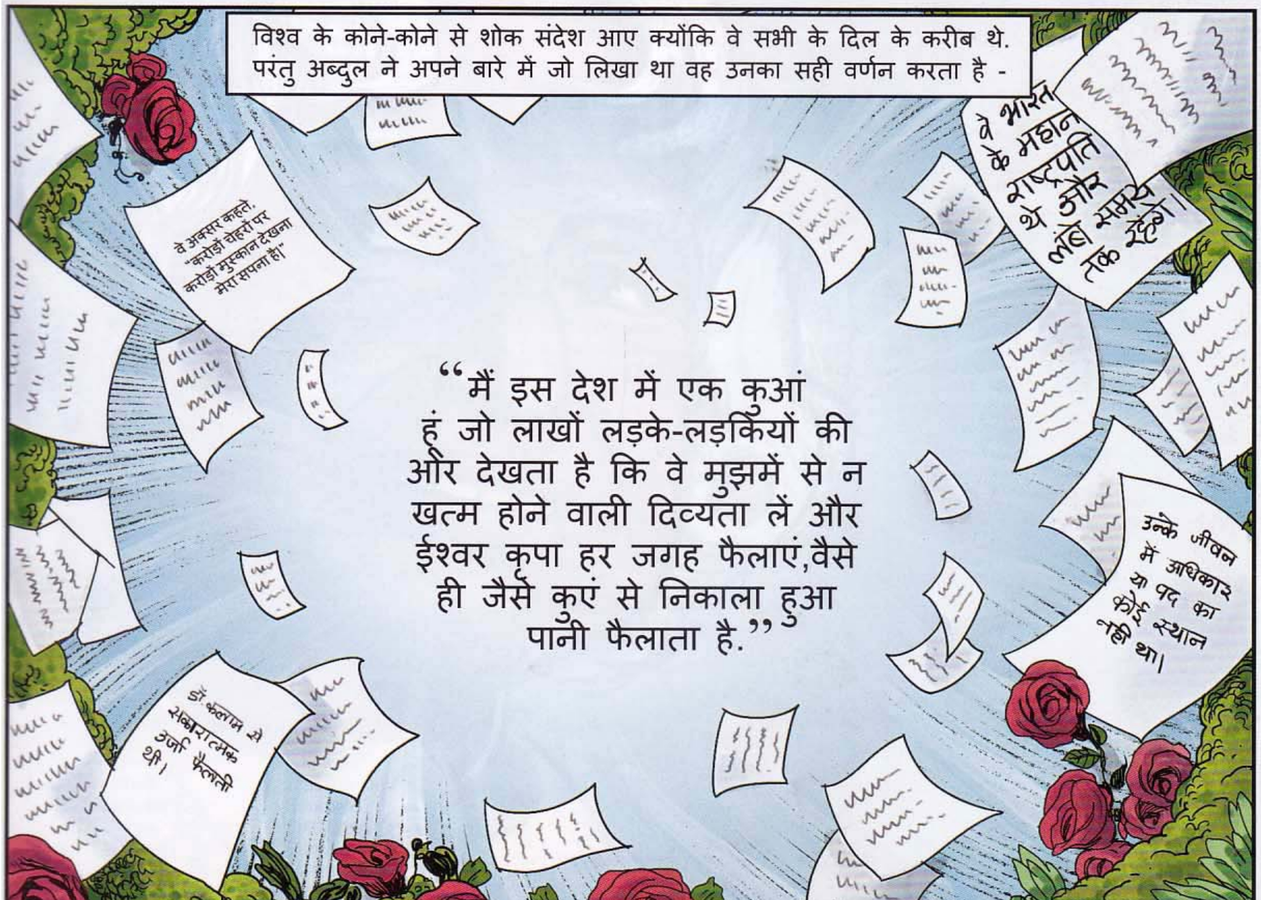
विश्व के कोने-कोने से शोक संदेश आए क्योंकि वे सभी के दिल के करीब थे. परंतु अब्दुल ने अपने बारे में जो लिखा था वह उनका सही वर्णन करता है -
वे अक्सर कहते, "करोड़ों चेहरों पर करोड़ों मुस्कान देखना मेरा सपना है।"
वे भारत के महान राष्ट्रपति थे और अंत तक रहेंगे।
"मैं इस देश में एक कुआं हूं जो लाखों लड़के-लड़कियों की ओर देखता है कि वे मुझमें से न खत्म होने वाली दिव्यता लें और ईश्वर कृपा हर जगह फैलाएं, वैसे ही जैसे कुएं से निकाला हुआ पानी फैलाता है."
डॉ. कलाम से सकारात्मक उर्जा फैलती थी।
उन्के जीवन में अधिकार या पद का कोई स्थान नहि था।

अगर किसी देश को भ्रष्टाचार से मुक्त होना है और खूबसूरत दिमाग वाले लोगों से भरना है तो समाज में तीन ऐसै लोग हैं, जो ऐसा कर सकते हैं। वे हैं - पिता, माता और अध्यापक।
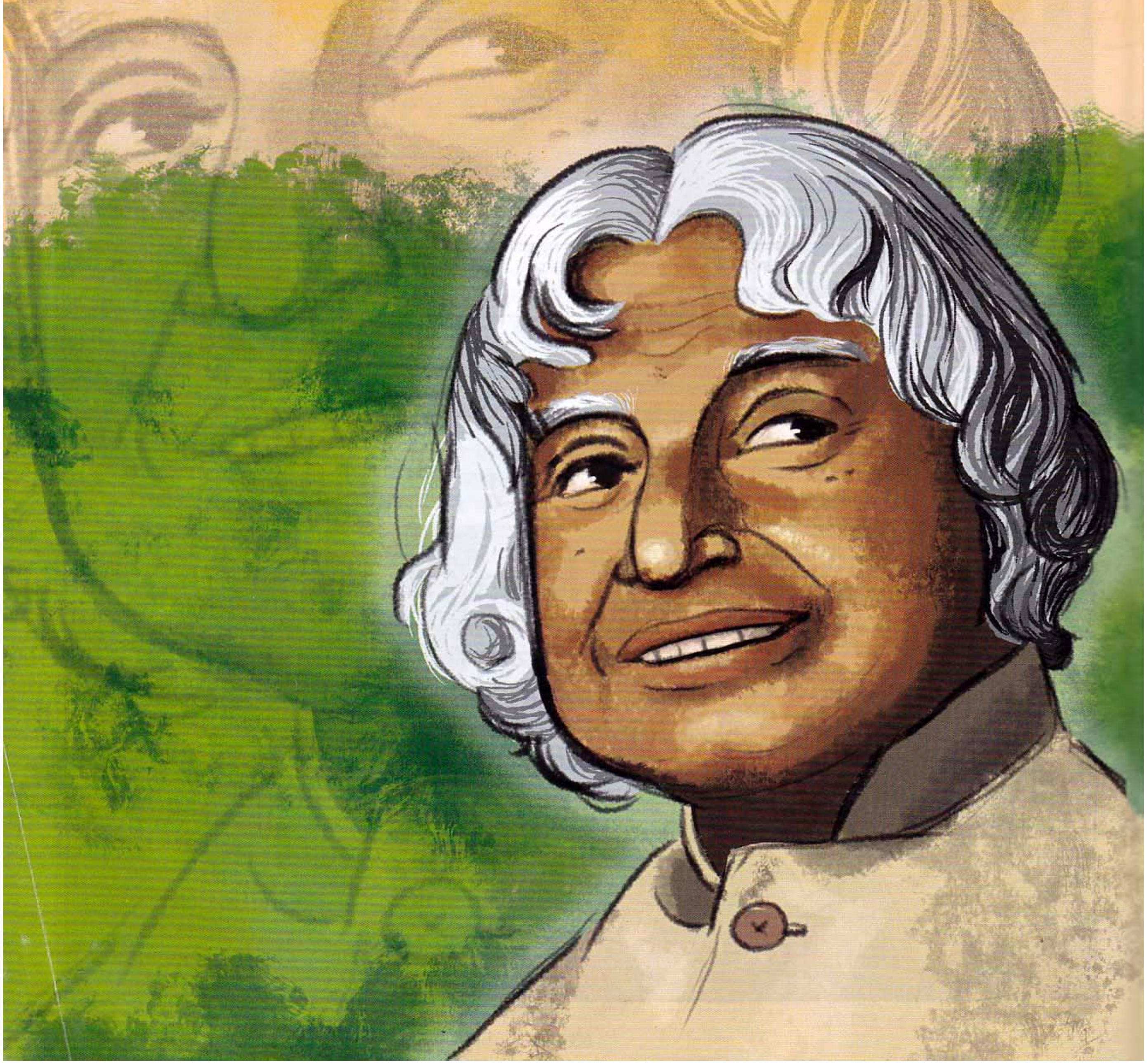
- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम